जैन-व्रत-विधान संग्रह

[व्रतोपयोगी आवश्यक अनेक विषयों सहित]

लेखक

चिकित्सक चूडामणि पं० बारेलाल जैन राजवैद्य

संचालक—श्री स्याद्वाद जैन औषधालय,

मु० पठा पो० टीकमगढ़ (विन्ध्यप्रदेश)



प्रकाशक

श्री वैद्य बाबूलाल राजेन्द्रकुमार जैन

मु० पठा, पो० टीकमगढ़ (विन्ध्यप्रदेश)

श्री वीरनिर्वाण संवत् २४७८

फरवरी १९५२

प्रथमावृत्ति १०००



मूल्य दो रुपये

आपने यह संग्रह महान् परिश्रम से किया। एक ही पुस्तक से व्रत-विधान सरलता से मिल सकता है। आपका परिश्रम प्रशंसनीय है।

पौष वदि नवमी
सं० २००८

आ० शु० चि०
गणेश वर्णी

समर्पण

प्रात स्मरणीय, पूज्यपाद, विश्वकी अनुपम विभूति, आदर्श महापुरुष,
सिद्धांत न्यायाचार शास्त्रपारंगत, चारित्रमूर्ति, आर्षमार्गोपदेष्टा,
ज्ञाननिधि न्यायाचार्य पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक गणेश
प्रसादजी वर्णी के करकमलों में उन्हीं के प्रवचनों
द्वारा प्रबोधित होकर यह 'जैन व्रत विधान
संग्रह' लेखक द्वारा श्रद्धा और भक्ति
के साथ सादर समर्पित है



क्षुल्लक
गणेशप्रसाद
वर्णी

दो शब्द

इस पुस्तक के प्रकाश में आने पर धार्मिक अनुष्ठान सम्बन्धी एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक की कमी की पूर्ति होगी, ऐसा मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ। पुस्तक के लेखक ज्योतिषरत्न, प्रतिष्ठाचार्य, राजवैद्य भिषग्वर प० बारेलाल जी समाज के एक सुयोग्य अनुभवी विद्वान् हैं। यदि ये प्रकाशपूर्ण क्षेत्र में होते तो मैं समझता हूँ कि इनके द्वारा इससे भी अधिक समाज, धर्म और साहित्य की सेवा होती। ये एक छिपे हुए प्रतिभाशाली विद्वत्‌रत्न हैं।

भावना है कि समाज इनकी इस पुस्तक से खूब लाभ उठाये।

२३ १२ ५१

दरबारीलाल जैन कोठिया
न्यायाचार्य
मुख्याध्यापक—श्री समन्तभद्र विद्यालय, देहली

आद्य वक्तव्य

चतुर्गति रूप संसार में एक मनुष्य पर्याय ही जीव को सुख देनेवाली है। अच्छे से अच्छे जो कुछ भी काम यह जीव करना चाहे इस पर्याय में कर सकता है। संसार में जितने भी श्रेष्ठ व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने लोकातिशायी कार्य किए हैं, कर रहे हैं और भविष्य में करेंगे वे सब मनुष्य ही हैं। मनुष्य-भव बिना कोई भी जीव अपना भला नहीं कर सकता। ऐसी महान् उत्कृष्ट पर्याय को प्राप्त कर अब सम्यग्दृष्टिपूर्वक यदि धर्मसाधन नहीं किया तो मनुष्य पर्याय का पाना नहीं पाने के बराबर है।

"व्रतेन यो विना प्राणी, पशुरेव न संशयः।"

जीवका अनादिस्थान निगोद राशि है, जहाँ एक श्वास में १८ बार जन्म और मरण करना पड़ता है, एवं अक्षर के अनन्तवें भाग जहाँ ज्ञान शेष रहता है, जहाँ अनन्त काल तक निवास करना पड़ता है। किसी महान् पुण्यकर्म के उदय से यदि काल-लब्धि प्राप्त हो जाय तो वहाँ से निकलकर पंच स्थावरों में आता है सो वहाँ भी उस अनन्त काल तक निवास करना पड़ता है। कदाचित् और किसी विशेष पुण्योदयवशात् त्रस पर्याय प्राप्त हो जाय और द्वीन्द्रियादि पंचेन्द्रियतिर्यंच तक पहुँच जाय फिर भी उसे आत्मकल्याण करने का कोई योग्य साधन नहीं मिलता। यदि किसी महान् पुण्य से मनुष्य पर्याय प्राप्त हो जाय और हीनकुलादि (जहाँ कि धर्म साधन योग्य सामग्री न हो) में जन्म हुआ तो भी आत्मकल्याण करने से वञ्चित ही रहता है।

निगोद पर्याय से निकलकर इतर पर्यायों में निवास करने का काल सिर्फ दो हजार सागर और ९६ कोटि पूर्वमात्र का ही है, जिसमें १००० सागर तो देव और नरक पर्याय में व्यतीत करता है तथा १००० सागर विकलत्रयतिर्यंच में। और ४८ कोटि पूर्व पंचेन्द्रियतिर्यंच पर्याय में व्यतीत करता है। शेष ४८ कोटि पूर्व मनुष्य गति का सो उसमें १६ कोटि पूर्व

नपुंसक पर्याय, और ४८ कोडि पूर्व प्रमाण स्त्री पर्याय में व्यतीत करता है। अब रहा सिर्फ ४८ कोडि पूर्व का ही प्रमाण मनुष्य पर्याय पाने का है। क्योंकि यदि वर्तमान पर्याय ही अगर अन्तिम मनुष्य पर्याय हुई तो समझना कि इसके बाद फिर निगोद राशि में जाकर वहाँ अनन्तकाल तक निवास करना पड़ेगा।

"यह मानुष पर्याय सुकुल सुन यो जिनवाणी,
इहि विधि गये न मिले सुमणि ज्यों उदधि समानी॥"

इसलिए इस मनुष्यपर्याय का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।

व्रती संयमी पुरुषों का जीवन सबसे अधिक ऊँचा होता है। एक निरतिचार व्रती संयमी साधु चक्रवर्ती और इन्द्रों के द्वारा वन्दनीय होता है। व्रती संयमी पुरुष के नरक और तिर्यंच गति का अभाव हो जाता है इसलिए वह व्रत संयम के प्रभाव से स्वर्गादिक पद को प्राप्त करता हुआ अन्त में निराकुलता रूप अक्षय सुख (मोक्ष) को प्राप्त कर लेता है। अतः व्रत संयम आत्मकल्याण का कारण तथा बुद्धि में प्रकाश करता है। मनुष्यमात्र को व्रती होना नितान्त आवश्यक है।

इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रखते हुए मैंने इस व्रत विधान नामक ग्रन्थ का संकलन किया है। बहुत प्रयत्न करने पर भी इसमें १६४ व्रतों का ही संग्रह हो सका है। मेरे इस संकलन से यदि समाज को लाभ पहुँचा तो मैं अपने इस परिश्रम को सफल समझूँगा। तथा भविष्य में भी अनेक अनुपम सामग्रियों से विभूषित 'बृहज्ज्योतिषरत्नाकर' और 'प्रतिष्ठासार' जैसे आवश्यक ग्रन्थों को समाज के करकमलों में उपस्थित करने का शीघ्र प्रयत्न करूँगा।

—बारेलाल जैन राजवैद्य

विषयानुक्रमणिका

श्री शान्तिनाथाय नमः

जैन-व्रत-विधान संग्रह



मंगलाचरण

दोहा—पंच परमगुरुको प्रणमि, जिणवाणी उर धार।
व्रत विधान भाषा सहित, लिखहुँ स्व पर हितकार॥

छंद—

एक शतक अरु साठ तीन व्रत, व्रतविधानकी क्रिया महान।
सबके मंत्र विशद उच्चारण, दर्शाये आगम परमान॥
साथ-साथमें पृथक रूपसे, सबकी मर्यादा सुखकार।
तिनके फलमें जिन भवि जनने, पाया स्वर्ग मोक्षका द्वार॥
ऐसे 'व्रत विधान संग्रह' को लिखहुँ अनेक शास्त्र अनुसार।
अल्पबुद्धि अरु विषय गहन है यह प्रयास मेरा हितकार॥
होगा भगवत शांतिनाथके सत्प्रसादसे पूरण ग्रन्थ।
तथा भव्य जनके अनुग्रहसे होगा यह [illegible]

व्रतयोग्य पात्रके आवश्यक चिह्न–

श्रावक का लक्षण

श्रद्धा और विवेक पुन क्रिया सहित जो होय।
श्रावक वह कहलात है तीनों बिन नहीं कोय ॥

भावार्थ—श्र (श्रद्धा) व (विवेक) क (क्रिया) अर्थात्
विवेक और क्रिया इन तीन गुणों से जो युक्त हो उसे श्रावक कहते ह
भी गुण न्यून हो तो नहीं।

श्रावकके अष्टमूल गुण

प्रथमहिं पचउदम्बरफल या मद्य मांस मधु तीन मका
त्रस आदिका भक्ष्य त्यागिये बिन छाना जल निशि आहा
इनका त्याग करो जिनदर्शन यही मूलगुण अष्टप्रका
धारण कर श्रावक कहलाता, इन बिन जैनीको धिक्का

श्रावकके मुख्य आठ चिह्न

सत्र अन्याय अभक्ष्य त्यागकर तजो अहितकारी मिथ्यात
निशिका भोजन बिन छाना जल हरो व्यसन दुखकारी स
जीवोंकी करुणा मन धारो कर 'जिनदर्शन सच्चा प्रा
मुख्य चिह्न यह जैनीके हैं निश्चय मानो मेरे भ्रा

श्रावककी चार भावनाएँ

मैत्री और प्रमोद करुणामय भाव करो 'माध्यस्थ विचा
इन भावोंके होने पर ही होता है निज आत्म सुधा

श्रावकके दैनिक षट्कर्म

जिनवरपूजा गुरुकी भक्ती शास्त्रश्रवण संयम तप दा
षट् आवश्यक कर्म प्रतिदिन भक्ति भावसे करो सुजा

श्रावकके मुख्य बाह्य चिह्न

निशि-का भोजन बिनछाना जल गहैं नहीं सम्यक् मतिमान ।
करें नित्य श्री जिनके दर्शन बाह्यचिह्न जैनीके जान ॥

श्रावकके बाईस अभक्ष्य

ओला घोरबड़ा निशिभोजन बहुबीजक बैंगन संधान ।
बड़ पीपल ऊमर कठऊमर पाकरफल जो होय अजान ॥
कन्दमूल माटी विष आमिष मधु माखन अरु मदिरापान ।
फल अतितुच्छ तुषार चलितरस जिनमत ये बाइस अखान ।

श्रावकके सत्रह दैनिक नियम

भोजन वाहन शयन विलेपन आसन भूषण अरु स्नान ।
ब्रह्मचर्य ताम्बूल पेय सब सचित्तवस्तुका परिमान ॥
पुष्प नृत्यगीतादिक षट्रस वस्त्र देशव्रत गायन जान ।
नियम सप्तदश ये प्रतिदिन सब धारण करो सदा मतिमान ॥

श्रावकके सत्रह यम

कुगुरु कुदेव कुवृषकी सेवा अनर्थदण्ड अघमय व्यापार ।
द्यूत मांस मधु वेश्या चोरी परतिय हिंसादान शिकार ॥
त्रसकी हिंसा स्थूल असत्य रु बिन छाना जल निशिआहार ।
ये सत्रह अनर्थ जगमाहीं यावज्जीव करो परिहार ॥

श्रावकके इक्कीस गुण

लज्जा दया प्रसन्न रु श्रद्धा पर औगुण ढक पर उपकार ।
सौम्य दृष्टि गुणग्राही प्रेमी श्रेष्ठविचारी नाथीसार ॥
मृदुवचनी ज्ञाता अरु धर्मी निर अभिमानी तत्त्वी जान ।
समभावी विनयी रु कृतज्ञी निर्लोभी सद्‌वृत्ती मान ॥

व्रतकी आवश्यकता

व्रतेन यो विना प्राणी पशुरेव न संशयः ।
योग्यायोग्यं न जानाति भेदस्तत्र कुतो भवेत् ॥

भावार्थ—व्रत रहित प्राणी निःसन्देह पशुके समान ही है। जिसके योग्यायोग्यका ज्ञान नहीं है ऐसे मनुष्य और पशुमें क्या भेद है? कुछ नहीं।

व्रतका लक्षण

सङ्कल्पपूर्वकः सेव्ये नियमोऽशुभकर्मणः ।
निवृत्तिर्वा व्रतं स्याद्वा प्रवृत्तिः शुभकर्मणि ॥

भावार्थ—सेवन करने योग्य विषयोंमें सङ्कल्पपूर्वक नियम करना, अथवा हिंसादिक अशुभ कर्मोंसे सङ्कल्पपूर्वक विरक्त होना, अथवा पात्र दानादिक शुभ कर्मोंमें सङ्कल्पपूर्वक प्रवृत्त करना, व्रत कहलाता है।

यथाशक्ति व्रत पालन करना आवश्यक है

पञ्चम्यादि विधिं कृत्वा शिवान्ताभ्युदयप्रदम् ।
उद्योतयेद्यथासम्पन्निमित्ते प्रोत्सहेन्मनः ॥

भावार्थ—मोक्ष पर्यन्त इन्द्र, चक्रवर्ती आदि पदों के अभ्युदय को देनेवाले, पञ्चमी, पुष्पाञ्जलि, मुक्तावली, रत्नत्रयादिक व्रतों को शास्त्रानुसार करके अपनी शक्ति और सम्पत्ति के अनुसार उनका उद्यापन करावे, क्योंकि नैमिक (नित्य) क्रियाओं की अपेक्षा नैमित्तिक क्रियाओं के करने में मन अधिक उत्साह को प्राप्त होता है।

व्रत अनशन का ही भेद है

साकारं सर्वतोभद्रं सिंहनिष्क्रीडितादयः ।
साकाङ्क्षस्योपवासस्य भेदाश्चैकान्तरादयः ॥

—आचारसार

भावार्थ—साकार, सर्वतोभद्र, सिंहनिष्क्रीडित, उपवास और एकान्तरा नादि ये सभी साकांक्ष अनशन के भेद हैं।

व्रत निरतिचार पूर्वक ही पालन करना चाहिये

व्रतानि पुण्याय भवन्ति जन्तो
न सातिचाराणि निषेवितानि।
शस्यानि किं क्वापि फलन्ति लोके,
मलोपलीढानि कदाचनापि॥
—मा ध

भावार्थ—जीवोंको व्रत पुण्यरूप करते हैं। परन्तु अतिचार सहित व्रत पुण्यजनक नहीं होते। जैसे धान्य यदि नींदी मोड़ा न जायें, वे मल युक्त बनी रहें तो कभी भी वे फलवती नहीं होतीं। उनमें पैदा होने वाले फालतू घास वगैरह को नींद गाड़कर साफ करने से ही वे फलवती होती हैं। इसी प्रकार निरतिचार व्रतों से ही पुण्य प्राप्त होता है, सातिचार व्रतों से नहीं।

व्रतों के आचरण में शिथिलता होना अतिचार है

अतिक्रमो मानसशुद्धिहानि,
व्यतिक्रमो यो विषयाभिलाष।
तथातिचार करणालसत्व
भंगो ह्यनाचारमिह व्रतानाम्॥
—पु सि

भावार्थ—मन की शुद्धि में हानि होना सो अतिक्रम, विषयों की अभिलाषा सो व्यतिक्रम, इन्द्रियों की असावधानी अर्थात् व्रत के आचरण में शिथिलता सो अतिचार, और व्रत का सर्वथा भंग होना सो अनाचार है। जैसे खेत के बाहर एक बैल बैठा था, उसने विचारा कि निकटवर्ती खेत को चरना सो अतिक्रम, खड़ा होकर चलना सो व्यतिक्रम, बाड़ी (बाढ़) तोड़ना सो अतिचार, और खेत चरना सो अनाचार।

लिये हुए व्रत की रक्षा पूरे यत्नपूर्वक करनी चाहिये

प्राणान्तेऽपि न भङ्क्तव्य गुरुसाक्षिश्रित व्रतम् ।
प्राणान्तस्तत्क्षणे दुःख व्रतभंगो भवे भवे ॥
—सा ध ७-५२

भावार्थ—गुरु अर्थात् पचपरमेष्ठी, अथवा व्रतदाता इनकी साक्षी पूर्वक लिये हुए किसी भी व्रत को अपने प्राण भी नष्ट हो जावें तो भी नहीं छोड़ना चाहिये। क्योंकि प्राणनाश केवल मरण के समय में ही दुःख का कारण है, परन्तु व्रत का भग भव भव में दुःख का कारण है।

प्रमाद या अज्ञानता से व्रतभंग हो जाय तो प्रायश्चित्त लेकर उसे पुन धारण करे

समीक्ष्य व्रतमादेय मात्त पाल्य प्रयत्नत ।
छिन्न दर्पात् प्रमादाद्वा प्रत्यवस्थाप्यमजसा ॥
—सा ध १-७९

भावार्थ—कल्याण चाहनेवाले गृहस्थको द्रव्य कालादिक का अच्छी तरह विचार करके व्रत का ग्रहण करना चाहिये। और ग्रहण किये व्रत को यत्नपूर्वक पालन करना चाहिये। तथा मद के आवेश में अथवा प्रमाद से व्रत के खण्डित हो जाने पर सम्यक रीति से शीघ्र ही प्रायश्चित्त लेकर उसे फिर से ग्रहण करना चाहिये।

व्रत के दिनों में श्रावक का अनिवार्य कर्त्तव्य

प्रात सामायिक कुर्यात्तत तात्कालिकीं क्रियाम् ।
धौताम्बरधरो धीमान् जिनध्यानपरायण ॥

भावार्थ—विवेकी व्रती श्रावक प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में उठकर सामायिक करे। और बाद में शौचादिक से निवृत्त होकर शुद्ध साफ वस्त्र धारण कर श्री जिनेन्द्रदेव के ध्यान में तत्पर रहे।

महाभिषेकमद्भुत्यैजिनागारे व्रतान्विते ।
कर्त्तव्य सह संघेन महापूजादिकोत्सवम् ॥

भावार्थ—श्री मन्दिरजी में जाकर सबको आश्चर्य करनेवाला ऐसा महा अभिषेक करे। फिर अपने संघ के साथ समारोहपूर्वक महापूजन करे।

ततो स्वगृहमागत्य दान दद्यात् मुनीश्विने ।
निर्दोष प्रासुर शुद्ध मधुर तृप्तिकारणम् ॥

भावार्थ—पश्चात् अपने घर आकर मुनियों को निर्दोष प्रासुक, शुद्ध, मधुर और तृप्ति करनेवाला आहार देकर शेष बचे हुए आहार सामग्री को अपने कुटुम्ब के साथ आनन्द से आहार करे।

प्रत्याख्यानोद्यतो भूत्वा ततो गत्वा जिनालयम् ।
नि परीत्य तत्र कार्यास्तद्विध्युक्तजिनालयम् ॥

भावार्थ—फिर मन्दिरजी में जाकर प्रदक्षिणा देवे और व्रतविधान में करे गये व्रतों का त्याग करे।

व्रत का उद्यापन

सपूर्णे खलु कर्त्तव्य स्वशक्त्योद्यापन बुधै ।
सयथा येऽप्यशक्त्याश्चिव्रतोद्यापनसद्विधौ ॥

भावार्थ—व्रत की मर्यादा पूर्ण हो जाने पर स्वशक्ति के अनुसार उद्यापन करे, यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो व्रत का जो विधान (मर्यादा) है उससे दूना करे।

उद्यापनविधि

कर्तव्य जिनागारे महाभिषेकमद्भुतम् ।
सर्वैर्व्रतविधै सार्धं महापूजादिकोत्सवम् ॥
घण्टाचामरचन्द्रोपकभृंगार्यार्तिकादय ।
धर्मोपकरणान्येव देय भक्त्या स्वशक्तित ॥

पुस्तकादिमहादानं भक्त्या देयं घृणाकरम् ।
महोत्सवं विधेयं सुवाद्यगीतादिनर्तनं ॥
चतुर्विधाय संघायाहारदानादिकं मुदा ।
आमन्त्र्य परया भक्त्या देयं सम्मानपूर्वकम् ॥
प्रभावना जिनेन्द्राणां शासने चैत्यधामनि ।
कुर्वन्तु यथाशक्त्या स्तोकं चोद्यापनं मुदा ॥

भावार्थ—खूब ऊँचे ऊँचे विशाल जिनमन्दिर बनवाने और उनमें बड़े समारोहपूर्वक प्रतिष्ठा कराकर जिनप्रतिमा विराजमान करे। पश्चात् चतुर्प्रकार संघ के साथ प्रभावनापूर्वक महाअभिषेक कर महापूजा करे। पश्चात् घण्टा, झालर, चमर, छत्र, सिंहासन, चँदोवा, भारी, भृंगारी, आरती आदि अनेक धर्मोपकरण शक्ति के अनुसार भक्तिपूर्वक देवे। आचार्यादि मनुष्यों की धर्मवृद्धि तथा ज्ञानवृद्धि हेतु शास्त्र प्रदान करे। और उत्तमोत्तम बाजे, गीत और नृत्य आदि से अत्यन्त आयोजन से मन्दिर में महान् उत्सव करे। चतुर्विध संघ को विशिष्ट सम्मान के साथ भक्तिपूर्वक बुलाकर अत्यन्त प्रमोद से आहारादि चतुप्रकार दान देवे। भगवान् जिनेन्द्र के शासन का माहात्म्य प्रकट कर खूब प्रभावना करे। इस प्रकार अपनी शक्ति के अनुसार उद्यापन कर व्रत विसर्जन करे।

भाद्रपद मास में व्रतों की प्रधानता

अहो भाद्रपदाख्योऽथ मासोऽनेकव्रताकरः ।
धर्महेतुपरो मध्येऽन्यमासानां नरेन्द्रवत् ॥
—मल्लिपुराणे

भावार्थ—जिस प्रकार मनुष्यों में राजा श्रेष्ठ माना जाता है, उसी प्रकार समस्त मासों में भाद्रपद मास भी श्रेष्ठ है। क्योंकि वह अनेक प्रकार के व्रतों का स्थान-स्वरूप है और धर्म का प्रधान कारण है।

व्रत करने का फल

अनेकपुण्यसंतानकारणं स्वर्निबंधनम् ।
पापघ्नं च क्रमादेतत् व्रतं मुक्तिवशीकरम् ॥
यो विधत्ते व्रतं सारमेतत्सर्वसुखावहम् ।
प्राप्य षोडशमं नाकं स गच्छेत् क्रमशः शिवम् ॥

भावार्थ—व्रत अनेक पुण्य की संतान का कारण है, स्वर्ग का कारण है, संसार के समस्त पापों का नाश करनेवाला है एवं मुक्तिलक्ष्मी को वश में करनेवाला है, जो महानुभाव सबसुखोपार्जक श्रेष्ठ व्रत धारण करते हैं वे सोलहवें स्वर्ग के सुखों का अनुभव कर अनुक्रम से अविनाशी मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं।

व्रती श्रावक के भोजन के अन्तराय

दृष्ट्वाऽऽर्द्रचर्मास्थिसुरामांसासृक्पूयपूर्वकम् ।
स्पृष्ट्वा रजस्वलाशुष्कचर्मास्थिशुनकादिकम् ॥
श्रुत्वातिकर्कशाक्रन्दं विड्वरप्रायं निःस्वनम् ।
भुक्त्वा नियमितं वस्तु भोज्येऽशक्यविवेचनैः ॥
संसृष्टे सति जीवद्भिर्जीवैर्वा बहुभिर्मृते ।
इदं मांसमिति दृष्टे संकल्पे चाशनं त्यजेत् ॥

भावार्थ—व्रतों का पालन करनेवाला गृहस्थ—गीला चमड़ा, हड्डी, मदिरा, मांस, लोहू तथा पीप आदि पदार्थों को देख करके तथा रजस्वला स्त्री, सूखा चमड़ा, हड्डी, कुत्ता, बिल्ली और चाण्डालादि को स्पर्श करके, तथा इसका मस्तक काटो, इत्यादि रूप अत्यन्त कठोर रूप (रोने के) शब्द को, तथा परचक्र के आगमनादि विषयक विड्वरप्राय शब्दों को सुन करके, तथा त्यागी हुई वस्तु को खा करके और खाने योग्य पदार्थ से अशक्य है अलग करना जिनका ऐसे जीते हुए अथवा मरे हुए दो इन्द्रियादि जीवों के भोजन में मिल जाने पर तथा

यह खाने योग्य पदार्थ मांस के समान है इस प्रकार खाने योग्य पदार्थ मन के द्वारा संकल्प होने पर भोजन को छोड़ देवे।

व्रतोपयोगी आवश्यक विधियाँ

(१) कांजी—सिर्फ पानी और भात मिलाकर खाना, अथवा चावलों का भोजन या मांड पीना।

(२) आंवली—छह रसों के बिना सिर्फ ... एक अन्न पानी साथ लेना।

(३) बेलड़ी—पानी, भात और मिर्च मिलाकर खाना।

(४) एकलठाना—मात्र एक बार का परोसा हुआ भोजन ... पृथक् लेना।

प्रोषध और उपवास

चतुराहारविसर्जनमुपवासः प्रोषधः सकृद्भुक्तिः ।
स प्रोषधोपवासो यदुपोष्यारम्भमाचरति ॥

भावार्थ—चारों प्रकार के आहार का त्याग करना सो उपवास है। एक बार भोजन करना सो प्रोषध (एकाशन) है। और उपवास के पारणे के दिन १६ प्रहर तक आरम्भ अर्थात् एक बार भोजन लेना प्रोषधोपवास है।

उपवास के तीन भेद

(१) उत्तम उपवास—धारणे के दिन दो प्रहर उपवास की प्रतिज्ञा कर १६ प्रहर धर्मध्यान में व्यतीत करना।

(२) मध्यम उपवास—धारणे के दिन २ घड़ी दिन शेष रहे उपवास धारण कर १२ प्रहर धर्मध्यान में व्यतीत करना।

(३) जघन्य उपवास—उपवास के दिन प्रातःकाल प्रतिज्ञा कर ८ प्रहर धर्मध्यान में व्यतीत करना।

उपवास का लक्षण

कषायविषयारम्भत्यागो यत्र विधीयते।
उपवासः स विज्ञेयो शेषं लंघनकं विदुः॥

भावार्थ—कषाय विषय और आरंभ का संकल्पपूर्वक त्याग जो उपवास है, शेष को लंघन समझना चाहिये।

विशेष—द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार अपनी शक्ति देखकर उत्तम, मध्यम अथवा जघन्य जैसा उचित समझें वैसा करें।

उपवास के दिन भी श्री जिनेन्द्र पूजन करने की आज्ञा

प्रातः प्रोत्थाय ततः कृत्वा तात्कालिकं क्रियाकल्पम्।
निर्वर्तयेद्यथोक्तं जिनपूजां प्रासुकैर्द्रव्यैः॥

भावार्थ—प्रभात ही उठकर तात्कालिक शौचनिवृत्ति आदि सब क्रियाओं को करके प्रासुक अर्थात् जीवरहित शुद्ध द्रव्यों से आगमों में कही हुई विधि के अनुसार श्री जिनेन्द्रदेव का पूजन करे।

स्त्रियों को भी पूजन व व्रताचरणादि करने का उल्लेख

कियत्काले गते कन्या आनाय्य जिनमंदिरम्।
सपर्यां महतीं चक्रुर्मनोवाक्कायशुद्धितः॥
श्रावकव्रतसंयुक्ता बभूवुस्ताश्च कन्यकाः।
क्षमादिव्रतसंकीर्णा शीलांगपरिभूषिताः॥

—गौतमचरित्रे

भावार्थ—इन तीनों कन्याओं ने श्रावक व्रत धारण करके क्षमादि रूप धर्म और शील व्रत धारण किया, कुछ समय बाद उन्होंने जिनमंदिर में आकर मन वचन काय की शुद्धिपूर्वक श्री जिनेन्द्र भगवान् की बड़ी पूजा की।

गृहीतगंधपुष्पादिमार्चना सपरिच्छदा।
अथैकदा अगमैषा प्रातरेव जिनालयम्॥

व्रत शील सहित ही पालन करना चाहिये

शील सहित व्रत पुण्य उपाय, बिना शील व्रत निष्फल थाय ।

भावार्थ—शील सहित व्रत ही पुण्योत्पादक होते हैं ।

शील की नव बाड़ें

तियथल वास प्रेमरुचि निरखन दे परोक्ष भाषण मधुबैन ।
पूरबभोग केलिरस चिंतन, गरिष्ठ आहार लेत चित चैन ॥
करशुचि तन शृंगार बनावत तिय परयंक मध्य सुख सैन ।
मन्मथ कथा उदर भर भोजन ये नव बाढ़ शील व्रत जैन ॥

श्रावक के चंदोवा के नव स्थान

प्रथम रसोई के स्थान चक्की उखरी द्वय त्रय जान ।
धोयो अनाज सोधने काज जीमन चौका पंचम मान ॥
छठमें आटा छनने सोय सप्तम थान शयन का होय ।
पानी थान सु अष्टम जान सामायिक का नवमों थान ॥

प्रासुक द्रव्य

सुक्कं पक्कं तत्तं अंबिल लवणेण मिस्सियं दव्वं ।
जं जंतेण य छिन्नं तं सव्वं फासुयं भणियं ॥

भावार्थ—जो द्रव्य सूखा हो, परिपक्व हो, तप्त हो, आम्लरस तथा लवण-मिश्रित हो, कोल्हू, चर्खी, चक्की, छुरी आदि यंत्रों से छिन्न हुआ तथा संशोधित हो वह सब प्रासुक है ।

व्रती को जल छानने के लिये छन्ना का प्रमाण

षट्त्रिंशदंगुलं वस्त्रं चतुर्विंशतिविस्तृतम् ।
तद्वस्त्रं द्विगुणी कृत्य तोयं तेन तु गालयेत् ॥

भावार्थ—छत्तीस अंगुल लम्बा और २४ अंगुल चौड़ा ऐसा एक गाढ़ा वस्त्र लेकर द्विगुणित (दुहरा) कर उससे जल छानने योग्य है ।

जल प्रासुक करने की विधि व मर्यादा

मुहूर्त गालित तोयं प्रासुकं प्रहरद्वयम्।
उष्णोदकमहोरात्रमगालितमिवोच्यते ॥

भावार्थ—छना हुआ जल दो घड़ी तक पीने योग्य रहता है। इलायची, लवंगादि प्रासुक द्रव्यों का चूर्ण मिलाने से (जिससे जल का रस, रूप, गन्ध बदल जाय) दो प्रहर तक प्रासुक रहता है। उबाला हुआ जल एक दिन-रात्रि अर्थात् २४ घण्टे प्रासुक रहता है। पश्चात् वह बिना छने हुए जल के बराबर हो जाता है।

जल गालने व्रत के अतीचार

मुहूर्तमेकोर्ध्वमगालनं वा
दुर्वाससा गालनमम्बुनो वा।
अन्यत्र वा गालितशेषितस्य
न्यासो निपानऽस्य न तद् व्रतेऽर्च्य ॥

भावार्थ—१—छने हुए पानी को एक मुहूर्त अर्थात् दो घड़ी के बाद न छानना, २—अथवा फटे, मैले, पुराने, छोटे छेदवाले कपड़े से छानना, ३—अथवा छाननेसे शेष बचे हुए जीवानी को जल को जिस स्थान का जल है उसमें न डालकर अन्य जलाशय में छोड़ना, ये तीन जल छानन व्रत के अतीचार हैं।

जल के एक बिन्दु में जीवों की संख्या

एकबिन्दूद्भवा जीवाः पारावतसमा यदि।
भूत्वोड्डयन्ति चेज्जम्बूद्वीपोऽपि पूर्यते च तैः ॥

भावार्थ—जल की एक बूँद में जितने जीव हैं वे कबूतर बराबर होकर यदि उड़ें तो यह जम्बू द्वीप लबालब भर जाय।

व्रती के खान पान के पदार्थों की मर्यादा

(१) बूरा—की मर्यादा शीत ऋतु में १ मास, ग्रीष्म ऋतु में १५ दिन और वर्षा ऋतु में ७ दिन की होती है।

(२) दूध—दोहने के बाद बिना गरम किये हुए की मर्यादा दो घड़ी की है, तुरन्त गरम किये की मर्यादा ८ प्रहर की है। यदि बीच में स्वाद बिगड़ जाय तो बीच में भी परित्याग कर देना। यदि दोहने के बाद तुरन्त गर्म न किया जाय तो जिस पशु का दूध है उसी आकारवाले सम्मूर्छन असंख्य जीव पैदा हो जाते हैं।

(३) आटा—आटा, बेसन, मैदा आदि चून की मर्यादा वर्षा में ३ दिन, गर्मी में ५ दिन और शीत ऋतु में ७ दिन की है।

(४) दही—गरम दूध में शुद्ध जामन देकर जमाये हुए दही की मर्यादा ८ प्रहर की है।

(५) छाँछ—बिलोते समय ही पानी डाला जाय तो मर्यादा ४ प्रहर की और बिलाने के बाद डाला जाय तो २ घड़ी की मर्यादा होती है। पानी पक्का लेवे।

६—घी, गुड़, तेल की मर्यादा स्वाद न बिगड़ने तक।

७—पिसे हुए सैंधा नमक की मर्यादा २ घड़ी की है यदि हल्दी या मिर्च पीसते समय मिला दी जाय तो ६ घण्टे की होती है, पश्चात् अभक्ष्य है।

८—खिचड़ी, कढ़ी, रायता, तरकारी आदि की मर्यादा दो प्रहर की है।

९—पुआ, पूरी, सीरा, रोटी, हलुआ आदि जिनमें पानी का अंश अधिक रहता है उनकी मर्यादा ४ प्रहर की है।

१०—मोयनवाली पूड़ी, परांठा, खाजा, लड्डू, घेवर आदि जिनमें पानी का अंश कम रहता है उनकी मर्यादा ८ प्रहर की होती है।

११—जिस भोजन में पानी नहीं पड़ा हो जैसे मगदनेमन, चूरमा आदि की मर्यादा आटे के बराबर होती है।

१२—पिसे हुए हल्दी, धनिया, मिर्च आदि मसाले की मर्यादा आटे के बराबर है।

१८—बूरा, मिश्री, शक्कर, खारक आदि मिष्ट द्रव्य मिले हुए दही छाँछ की मर्यादा दो घड़ी की है।

१९—गुड़ मिला दही, छाँछ सर्वथा अभक्ष्य है।

नोट—सामान्यतः ऋतु का परिवर्तन अष्टाह्निका से अष्टाह्निका तक ४४ मासों में होता है।

द्विदल विचार

योऽपक्वतक्र द्विदलान्नमिश्रं भुक्तं विधत्ते मुखबाष्पसंगे।
तस्यास्य मध्ये मरणं प्रपन्ना सम्मूर्छिका जीवगणा भवति॥

भावार्थ—कच्चे दूध, दही, मठा में द्विदल (जिसकी दो फाड़ें हों) पदार्थ के मिलाने से और मुख की लार का सम्बन्ध होने से असंख्य सम्मूर्छन त्रस जीवराशि पैदा होती है इसके भक्षण से महान् हिंसा होती है। अतः यह सर्वथा अभक्ष्य है।

एक गोरस में भी इस प्रकार बताया है

चऊ ए इन्दी ये छह, अट्ठतिवि भणति।
छह चऊरिंदियजीवडा बारह पंच भणति॥

चौपाई—अन्त चार महूरत आहीं, एकेन्द्रिय जिय उपजाहीं।
बारहघटिका जब जाय, बेइन्द्री तामें थाय॥
षोडशघटिका है जबहीं, ते इन्द्रिय उपजें तबहीं।
जब बीस घड़ी गत जानी, उपजें चौइन्द्रिय प्राणी॥
गमिया घटिका जब चौबिस, पचेंद्रिय जिय पूरित तिस।
ईहै नहिं संशय आनी, यों भाष जिनेश्वर वाणी॥
बुधिजन लख ऐसो दोष, तजिये ततछिन अघ कोष।
कोई ऐसे कहवाई, रहे इक याम हि माहीं॥
मरयाद न सधिहै मूल, तजिहैं जे व्रत अनुकूल।
खाने में पाप अपार, छाडें शुभ गति है सार॥

—कि० सि० कि०

द्विदल के भेद

अन्नद्विदल—मूंग, मोठ, अरहर, मसूर, उड़द, चना, कुलथी, आदि अनाज। काष्ठद्विदल—चारोली, बादाम, पिस्ता, जीरा, धनियाँ आदि। हरीद्विदल—तोरई, भिण्डी, फलफूला, घीतोरई, खरबूजा, ककड़ी, पेठा, परवल, सेम, लौकी, करेला, खीरा आदि दो बीज युक्त पदार्थ। शिखरिन—भी इसके अन्तर्गत मानी है। (दही खांड़ में मिला पदार्थ)। रायता—सर्वथा अभक्ष्य है। (दही आदि में राई लूण मिला के बड़ा आदि मिलाना)।

दही बनाने हेतु शुद्ध जामन

दही बाँधे कपड़ा मांहीं, जब नीर न बूंद रहाहीं।
तिहिं की दे बड़ा सुखाइ, ताके अति जतन कराइ।
प्रासुक जल में घोलीजे, पयमाहीं जामन दीजे।
मरयादा भाषी जेह, यह जामन सों लख लेह॥
अथवा रुपया गरमाइ डारे पय में दधि थाइ।

व्रत में विशेष

अंतराय पालो मनिसार, मौन सहित करिये आहार।
व्रत में हरी जिने नर खाय, सकल तासु अकारथ जाय॥

१-अष्टाह्निका व्रत

चौपाई

तीन बार इक बरष मझार, आषाढ़ कार्तिक फाल्गुण धार।
जो उत्कृष्ट विरत को करे, आठ आठ उपवास जु धरे॥
दूजो भेद कोमली जान, जिनमारग में करो बखान।
आठें के दिन कर उपवास, नौमी एकभुक्ति परकास॥
दशमी दिन काँजी कर सार, पानी भात एक ही बार।
ग्यारसि अल्प अमल कीजिये, हयघट तज इकघट लीजिये॥
मुनि सोधो बारस विधि येह, त्रिविध पात्र को भोजन देय।
अन्तराय नहिं तिनको थाय, तो यह व्रत धर असन लहाय॥
अन्तराय तिनको जो परे, तो उस दिन उपवासहि करे।
तेरस दिन आँवलि कीजिये, ताकी विधि भवि सुन लीजिये॥
एक अन्न षट्रस बिन जान, जल में मूक लेय इक ठान।
चौदश चित्तनेलडी थाय, भातनीरयुत मिरच लहाय॥
पूरणमासी को उपवास, किये होय चिर को अघनाश।
यह कोमली की विधि कही, जिन आगम में जैसी लही॥
आदि अन्त करिये एकन्त, दश दिन धरिये शील महन्त।
यह व्रत सदर धर मन लाय, सबै हरी तजिये दुखदाय॥
धातु एकासन विधियुत करे, सोइ जघन विधि आदरे।
घर आरम्भ तजे दुखदाय, शील सहित आरम्भ कराय॥
अब मरयादा सुन भविजीव, धरत्रिशुद्धतासों लख लीव।
सत्रह बरष शास्त्र इक जान, करिये जानन शास्त्र प्रधान॥
अथवा आठ बरष लों जान, बीस चार तसु शास्त्र बखान।
पाच बरष कर पद्रह शास्त्र धर मन बच तन शुभ अभिलाष॥
तीन बरष नव शास्त्र प्रमान, एक बरष तिहुँ शास्त्र सुजान।
जैसी सकति दई अनत्रास, सो विधि आदर कर भवनाश॥

सकति प्रमाण उद्यापन करे, नहिं तो दूनो व्रत आदरे।
विधि माफक तें भविजन करो, सुर नर सुख लहि शिव तिय वरो॥
जो नरनारी यह व्रत करे, निश्चय स्वर्ग मुकति पद धरे।
संकट रोग शोक सब जाहिं, दुख दरिद्रता दूर पलाहिं॥
—क्रियाकोष

भावार्थ—अष्टाह्निका व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है—आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन। इन महीनों के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ होकर पूर्णमासी को यह व्रत पूर्ण होता है। यद्यपि इस व्रत की विधियाँ अनेक तरह की पाई जाती हैं तथापि उन सबमें तीन विधियाँ मुख्य हैं—

१—उत्तम विधि

सप्तमी के दिन एकाशन करके उपवास की प्रतिज्ञा करे, अष्टमी से पूर्णमासी तक ८ उपवास करे। पश्चात् एकम को पारणा करे। इन दिनों धर्मध्यान में व्यतीत करे।

२—मध्यमविधि (कोमली विधि)

१—सप्तमी के दिन एकाशन कर उपवास की प्रतिज्ञा कर, अष्टमी का उपवास करे, इस दिन की नन्दीश्वर संज्ञा है। 'ओं ह्रीं नन्दीश्वरसंज्ञाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (१ ००० ०) दश लाख उपवास के बराबर है।

२—नवमी के दिन पारणा करे। इस दिन का अष्ट महाविभूति संज्ञा है। 'ओं ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (१०६००००) दस लाख साठ हजार उपवास के बराबर है।

३—दशमी के दिन सिर्फ पानी और चावल का आहार करे। इस दिन की त्रिलोकसार संज्ञा है। 'ओं ह्रीं त्रिलोकसारसंज्ञाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (१००००००) दश लाख उपवास के बराबर है।

४—पंचमी के दिन एक बार अल्प आहार करे। इस दिन की चतुर्मुख संज्ञा है। 'ओं ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (५००००००) पाँच लाख उपवास के बराबर है।

५—दशमी के दिन आहार करे। इस दिन की पद महालक्षण संज्ञा है। 'ओं ह्रीं पद महालक्षणसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (८४००००००) चौरासी लाख उपवास के बराबर है।

६—एकादशी के दिन सिर्फ जल में साग सीझ एक अन्न का आहार करे। इस दिन की स्वर्गसोपान संज्ञा है। 'ओं ह्रीं स्वर्गसोपानसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (४००००००) चालीस लाख उपवास के बराबर है।

७—चतुर्दशी के दिन चावल, मिर्च और नमक का आहार करे। इस दिन की सर्वसम्पत्ति संज्ञा है। 'ओं ह्रीं सर्वसम्पत्तिसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (१० ०००) एक लाख उपवास के बराबर है।

८—पूर्णमासी का उपवास करे। इस दिन का इन्द्रध्वज नाम है। 'ओं ह्रीं इन्द्रध्वजसंज्ञाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस दिन का फल (३५००००००) तीन करोड़ पचास लाख उपवास के बराबर है।

३—अक्षय निधि

अष्टमी व पूर्णिमा को एकाशन करे।

विशेष—सप्तमी व तेरस तक इन दिन धर्मध्यान में ही व्यतीत करे। और शुद्ध प्रकार शील पाले। अन्तराय टालकर मौन सहित आहार करे।

जाप्य १—आठ बार १ माला (५२ माला)। २—आठ बार (२४ माला)।
३—पाँच बार (१५ माला) ४—तीन बार (६ माला)।
५—एक बार (१ माला)।

शक्ति के अनुसार मनाग धारण कर व्रत पूर्ण करे। ... का जाप्य ... मंत्र का—'ओं ह्रीं ...

जिनालयेभ्यो नमः' इस समुच्चयमंत्र का जाप्य करना चाहिये। यदि उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करे। व्रत के दिनों में प्रतिदिन अभिषेक पूर्वक महोत्सव सहित पूजन करना चाहिये।

१—यह व्रत अयोध्या में सुरमित्र सेठ के पुत्र श्रीराम, जयराम और जयकीर्ति ने किया, जिसके प्रसाद से श्रीराम हरिषेण चक्रवर्ती हुआ, और जयराम तथा जयकीर्ति अरिंजय और अमितंजय नाम के चारण मुनि हुए। बाद को ये तीनों ही मोक्ष गये।

२—इसी व्रत को मैनासुन्दरी ने किया जिसके प्रभाव से कोटीभट श्रीपाल राजा तथा उनके ७०० वीरों का गलित कुष्ठ दूर हुआ।

३—यह व्रत सुलोचना ने भी किया सो वह उसके प्रभाव से सन्यास पूर्वक मरकर स्वर्ग गई।

४—यह व्रत अनन्तवीर्य ने भी किया सो वह चक्रवर्ती हुआ।

५—यह व्रत अरविन्द ने भी किया सो प्रतिनारायण हुआ।

इस तरह अनेकों ने इस व्रत को किया और अजर अमर पद प्राप्त किया। कहा भी है—

बहुयक नर नारी व्रत कियो, तिन सब अजर अमर पद लियो।

२—षोडश कारण व्रत

सोलह कारण विधि सुन लेय, जिन आगम में भाषी तेह।
भादों माघ चैत्र तिहुँ मास, मध्य करे चित धर उल्लास॥
वास इकान्तर विधियुत करे, बीच दोय जीमन नहिं धरे।
सोलह बरस करे मन लोय, उद्यापन कर छाड़े सोय॥
सक्ति नहीं उद्यापन तनी, करे दुगुन व्रत थी जिन भनी।
मध्यम पाँच बरस विधि जान, जघन कही इक वर्ष प्रमाण॥

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में भादों, माघ और चैत्र इन तीन महीनों में आता है। कृष्णपक्ष की एकम से द्वितीय मास की कृष्णा एकम तक

३२ दिन किया जाता है। उत्तम, मध्यम और जघन्य इस प्रकार तीन विधि से होता है।

१–उत्तम विधि—बत्तीस दिन के ३२ उपवास।

२–मध्यम विधि—सोलह उपवास और सोलह पारणा।

३–जघन्य विधि—बत्तीस एकाशन।

मर्यादा—उत्तम १६ वर्ष। मध्यम ५ वर्ष। और जघन्य १ वर्ष प्रमाण है। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न होय तो व्रत दूना करे।

'ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत राजगृही नगरी में मानरमा ब्राह्मण की पुत्री भैरवी कन्या ने किया जिसके प्रभाव से स्त्रीलिंग छेदकर स्वर्ग में महर्द्धिकदेव होकर फिर पूर्व विदेह में सीमंधर तीर्थंकर हुआ।

३–दशलक्षण व्रत

दश लक्षण याही परकार, उत्तमविध दशपोषह धार।
दूजी विधि छहवासर तनी, करे इकासन भाषे गणी॥
तीजी जघन विधि इम जान, करे इकांतर दशदिन मान।
मर्यादा दश वरष प्रमाण, कही जिनागम मांहि सुजान॥

—कि० को०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है अर्थात् माघ, चैत्र और भाद्रपद। शुक्ल पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ होकर चतुर्दशी को पूर्ण होता है। इसकी तीन विधियाँ हैं—

१—उत्तम विधि—दश दिन के दश उपवास करना।

२—मध्यम विधि—पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी इन चार दिनों में उपवास और शेष छह दिनों में छह एकाशन।

३—जघन्य विधि—दश दिन के दश एकाशन [illegible]

अर्हन्मुखकमलसमुद्भूतोत्तमक्षमादिदशलक्षणैकधर्माय नमः इस [illegible]

निराल ना र कर। दश वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करे।

यह व्रत धातुकीखण्ड के पूर्वविदेह में सीतानदी के तीर निशालानापुरी के राजा प्रीतंकर की पुत्री मृगाङ्कलेखा, मतिशेखर मंत्री की पुत्री कामलता, मतिसागर सेठ की पुत्री मदनवेगा, और लक्षभग पुरोहित की पुत्री रोहिणी इन चारों ने विधिपूर्वक किया था जिसके प्रभाव से दशवें स्वर्ग में देव हुए, और वहाँ से चय कर उज्जयिनी नगरी में स्थूलभद्र राजा के यहाँ क्रमशः न्यप्रन, गुणचन्द, पद्मप्रभ और पद्मसारिणी नाम के चार पुत्र हुए, और वे चारों पुत्र राज्यसुख भोगकर वैराग्य धारण कर कर्म क्षय कर मोक्ष को प्राप्त हुए।

४—रत्नत्रय व्रत

रत्नत्रय की विधि ये सही, वरष मांय तिहुँ वारहिं कही।
भादौं माघ चैत परख श्वेत, वारसि कर एकान्त सु हेत ॥
पोषह सकति प्रमाण जु धरे, अति उत्साह सों तेलो करे।
पड़िमा दिनकर है एकन्त, पञ्चदिवस धर शील महन्त ॥
वरष तीन मरयादा गहै, उद्यापन कर फुनि निरवहै।
सकतिहीन जो नर तिय होय, सवर दिवस न छाँडे सोय ॥

—कि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत वर्ष में तीन बार आता है, अर्थात् भादों, माघ और चैत्र। शुक्ला द्वादशी को मध्याह्न भोजन के बाद उपवास की प्रतिज्ञा कर त्रयोदशी चतुर्दशी और पूर्णिमा, इन तीनों दिन उपवास करे और पड़िमा के दिन पारणा करे। द्वादशी से पड़िमा तक पाँच दिन शील और संयम पूर्वक व्यतीत करे। "ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूर्ण होने बाद उद्यापन कर व्रत समाप्त करे। शक्तिहीन होनेपर उपवास के स्थान में एकाशन करे।

यह व्रत सुदर्शन मेरु के दक्षिण दिशा में विदेह क्षेत्र के कच्छावती

देश के मध्य वीतशोकपुर नगर में वैश्रवण राजा ने किया था जिसके प्रभाव से सर्वार्थसिद्धि में इन्द्र हुआ और वहाँ से चयकर मल्लिनाथ तीर्थंकर हुआ।

५—पुष्पाञ्जलि व्रत

अडिल्ल—भादों माघ रु चैत्र मास त्रय मध्य ही,
तिनके सितपक्ष में पुष्पाञ्जलि व्रत कही।
पचमि तें उपवास पाँच नवमी लगे,
कियें पुण्य उपजाय पाप सगले भगें॥
पचमि सातें नवमी वास त्रय ही करे,
छटि अरु अष्टमि के दिन कांजी व्रत धरे।
छटि आठें अरु नवमि एकांत हि कीजिये,
द्वोयवास एकान्त तीन धर लीजिये॥

दोहा—वरष पांच लौं करत यह, कर विशुद्धता धार।
तासों फल उत्कृष्ट है यामें फेर न सार॥

भावार्थ— यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भादों, माघ और चैत्र। शुक्ल पंचमी से प्रारंभ होकर नवमी को समाप्त होता है। इस व्रत की उत्तम, मध्यम और जघन्य भेद से तीन विधियाँ हैं—

१—उत्तम विधि—पंचमी से नवमी तक पाँच उपवास करे।

२—मध्यम विधि—पंचमी, सप्तमी और नवमी के दिन उपवास करे, षष्ठी और अष्टमी को एकाशन करे।

३—जघन्य विधि—पंचमी और नवमी का उपवास करे। षष्ठी, सप्तमी और अष्टमी का एकाशन करे।

इस प्रकार पाँच वर्ष करे। पश्चात् उद्यापन करे। प्रतिदिन व्रत के दिनों में-"ओं ह्रीं पंचमेरुस्थ अशीतिजिनालयेभ्यो नमः" इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह के मंगलावती देश सीता नदी के तटपर रत्नसंचयपुर नगर में ब्राह्मण की पुत्री प्रभावती ने [illegible]

निरान चार करे। दश वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करे।

यह व्रत धातुकीखण्ड के पूर्वविदेह स्थित सीतोदा नदी के तीर विशालानगरी के राजा प्रातकर की पुत्री मृगांकलेखा, मतिशेखर मंत्री की पुत्री कामलता, मणिसागर सेठ की पुत्री मदनवेगा, और लक्ष्मीमती पुरोहित की पुत्री रुक्मिणी इन चारों ने विधिपूर्वक किया था जिसके प्रभाव से दसवें स्वर्ग में देव हुए और वहाँ से चय कर उज्जयिनी नगरी में स्थूलभद्र राजा के यहाँ क्रमशः चन्द्रप्रभ, गुणचन्द्र, पद्मप्रभ और पद्मनाभिनी नाम के चार पुत्र हुए और वे जाग पर गृहसुख भोगकर वैराग्य धारण कर कर्म जीत कर मोक्ष को प्राप्त हुए।

४—रत्नत्रय व्रत

रत्नत्रय की विधि ये सही, वरष मध्य तिहुँ बारहिं कही।
भादौ माघ चैत पख स्वेत, बारसि कर एकांत सु हेत॥
पोषह सजनि प्रमाण जु धरे, अति उच्छाह तैं तेलो करे।
पड़िमा दिन कर है एकन्त, पचदिवस धर शील महन्त॥
वरष तीन मरयादा गही, उद्यापन कर फुनि निरवही।
सकतिहीन जो नर तिय होय, सवर दिवस न छाँडे सोय॥
—कि० को

भावार्थ—यह व्रत वर्ष में तीन बार आता है, अर्थात् भादों, माघ और चैत्र। शुक्ला द्वादशी को मध्याह्न भोजन के बाद उपवास की प्रतिज्ञा कर त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा इन तीनों दिन उपवास करे और पड़िमा के दिन पारणा करे। द्वादशी से पड़िमा तक पाँच दिन शील और संयम पूर्वक ध्यान करे। 'ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूर्ण होने बाद उद्यापन कर व्रत समाप्त करे। शक्तिहीन होने पर उपवास के स्थान में एकाशन करे।

यह व्रत सुदर्शन मेरु के दक्षिण दिशा में विदेह क्षेत्र के कच्छावती

दशा के मात वीतशोकपुर नगर में वैश्रवण राजा ने किया था जिसके प्रसाद से समाधिमरण से इन्द्र हुआ और वहाँ से चयकर मल्लिनाथ तीर्थंकर हुआ।

५—पुष्पाञ्जलि व्रत

अडिल्ल—भादों माघ रु चैत्र मास त्रय मध्य हो,
तिनके सितपक्ष में पुष्पांजलि व्रत कही।
पचमि तैं उपवास पाँच नवमी लगे,
कियें पुण्य उपजाय पाप सगले भगैं॥
पचमि सातैं नवमी वास त्रय [illegible] करे,
छटि अरु अष्टमि के दिन कांजी व्रत धरे।
छटि आठैं अरु नवमि एकाशन हि साजिये,
उपवास एकान्त थान धर लाजिये॥
दोहा—वरष पांच लौं करत यह, कर त्रिशुद्धिता धार।
ताको फल उत्कृष्ट है, यामें फेर न सार॥

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भादों, माघ और चैत्र। शुक्ल पंचमी से प्रारम्भ होकर नवमी को समाप्त होता है। इस व्रत की उत्तम, मध्यम और जघन्य ये तीन विधियाँ हैं—

१—उत्तम विधि—पंचमी से नवमी तक पाँच उपवास करे।

२—मध्यम विधि—पंचमी, सप्तमी और नवमी के दिन उपवास करे, षष्ठी और अष्टमी को एकाशन करे।

३—जघन्य विधि—पंचमी और नवमी का उपवास करे। षष्ठी, सप्तमी और अष्टमी को एकाशन करे।

इस प्रकार पाँच वर्ष करे। पश्चात् उद्यापन करे। प्रतिदिन व्रत के दिनों में—"ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनालयेभ्यो नमः" इस मन्त्र का त्रिकाल जाप करे।

यह व्रत जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह के मंगलावती देश सीता नदी के तट पर रत्नसंचयपुर नगर में राजा की पुत्री प्रभावती ने किया था

विधान जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत द्विगुण करे।

यह व्रत धातकीखण्ड के पूर्वविदेह में सीतोदा नदी के तीर विशालापुरी के राजा प्रीतंकर की पुत्री मृगांकलेखा, मतिशेखर मंत्री की पुत्री कमलश्री, मतिसागर सेठ की पुत्री मदनवेगा, और लक्ष्मण पुरोहित की पुत्री रोहिणी इन चारों ने विधिपूर्वक किया था जिसके प्रभाव से स्वर्ग में देव हुए, और वहाँ से चय कर उज्जयिनी नगरी में स्थूलभद्र राजा के यहाँ क्रमशः स्वयंप्रभ, गुणचन्द्र, पद्मप्रभ और पद्मसारथी नाम के चार पुत्र हुए, और वे चारों पुत्र राज्यसुख भोगकर वैराग्य धारण कर क्रम नाश कर मोक्ष को प्राप्त हुए।

४—रत्नत्रय व्रत

रत्नत्रय की विधि ये सही, वरष मध्य तिहुँ वारहिं कही।
भादों माघ चैत पख श्वेत, बारसि कर एकान्त सु हेत॥
पोषह सरनि प्रमाण जु धरे, अति उच्छाह तैं तेलो करै।
पड़िमा दिनकर है एकन्त, पचदिवस धर शील महन्त॥
वरष तीन मरयादा गहे, उद्यापन कर फुनि निरवहे।
सकतिहीन जो नर तिय होय, सवर दिवस न छाँडै सोय॥
—कि० को०

भावार्थ—यह व्रत वर्ष में तीन बार आता है, अर्थात् भादों, माघ और चैत्र। शुक्ला द्वादशी को मध्याह्न भोजन के बाद उपवास की प्रतिज्ञा कर त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा, इन तीनों दिन उपवास करे और पड़िमा के दिन पारणा करे। द्वादशी से पड़िमा तक पाँच दिन शील और संयम पूर्वक व्यतीत करे। 'ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूर्ण होने बाद उद्यापन कर व्रत समाप्त करे। शक्तिहीन होनेपर उपवास के स्थान में एकाशन करे।

यह व्रत सुदर्शन मेरु के पश्चिम दिशा में विदेह क्षेत्र के कच्छावती

जिसके फल से ललितांगकुमार सोलहवें स्वर्ग में देव हुए, और वहाँ से चय कर उसने रत्नशेखर चक्रवर्ती होकर मोक्ष प्राप्त किया।

६—मुष्टिविधान व्रत

मुष्टिविधान मासत्रय येह, भादों माघ रु चैत्र गनेह।
जिन दर्शन कर मुष्टि चढ़ाय, एक बार फिर असन लहाय।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भादों, माघ और चैत्र। कृष्णा प्रथमा से शुरू होकर शुक्ला पूर्णिमा को एक मास में समाप्त होता है। प्रति दिन एक मुष्टि प्रमाण शुभ द्रव्य श्री जिनेन्द्र भगवान् के चरण कमलों के निकट चढ़ाकर अभिषेकपूर्वक चतुर्विंशति जिन महापूजन करे और 'ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। एक बार भोजन करे। व्रत एक वर्ष तक करे। समाप्त होने पर उद्यापन करे।

७—संकटहरण व्रत

संकटहरण व्रत तीनों मास, तेरसि तैं दिन तीनों भास।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में तीन बार आता है, भादों, माघ और चैत्र। शुक्ला त्रयोदशी से प्रारम्भ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता है। प्रति दिन त्रिकाल—'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उसा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूरा होने पर उद्यापन करे।

८—नित्यरसी व्रत

अडिल्ल—लूण दीत शशि हरी भौम मीठो तजे,
घृत बुध गुरुको दही दूध भृगु परिहरे।
तैल तजे शनि यहै धरत पासा गहै
मरयादा जिमि नेम धरे निमि निरवहै॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—रविवार को नमक, सोमवार को हरा, मंगलवार को [illegible], बुधवार को घृत, गुरुवार को [illegible]ी, शुक्रवार को दूध, और शनिवार को तैल का त्याग करे। यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है। शक्ति[illegible] पक्ष, मास, दो मास आदि रूप से किया जा सकता है। [illegible] अवधि पूर्ण होने पर उद्यापन करे। 'ओं ह्रीं श्री अर्हं नमः' [illegible] त्रिकाल जाप्य करे।

९—षट्रसी व्रत

दूध दही घृत तैल लूण मीठो सही,
तजै पाख दोय दोय सकल [illegible]।
करै असन इकवार व्रती इम व्रत करे,
पक्ष बारह मरयाद षट्रसी [illegible]॥

भावार्थ—यह व्रत छह महीने में समाप्त होता है। [illegible] का त्याग करे। दूसरे में दही, तीसरे में घृत, चौथे में [illegible] छट्ठे में मीठा, इस प्रकार त्याग करे। 'ओं ह्रीं [illegible] इस व्रत का त्रिकाल जाप्य करे। छह महीने समाप्त [illegible]।

१०—ज्येष्ठ जिनवर व्रत

वरत जेष्ठ जिनवर अभिलोय, ज्येष्ठ मास [illegible]।
कृष्णपक्ष पडिमा उपवास, एकासन [illegible]।
प्रोषध शुक्ल प्रतिपदा करे, पुनि [illegible] धरे।
ज्येष्ठमास के दिवस जु तीस, तासु [illegible]।
वृषभनाथ जिन पूजा रचे, गीत नृत्य [illegible] सचे।
अति उच्छाह धर हिये मझार, करे [illegible] विचार।

भावार्थ—यह व्रत वर्ष में एक बार [illegible]। [illegible] ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा तक। ज्येष्ठ कृष्ण [illegible] करे, [illegible]

दिन में एकाशन करे। फिर ज्येष्ठ शुक्ल पड़िवा का उपवास करे। फिर १४ दिन तक १४ एकाशन करे। इस प्रकार एक महीने में २ उपवास और २८ एकाशन करे। प्रतिदिन बड़े उत्साहपूर्वक अभिषेक करे और श्री शान्तिनाथ पूजन करे। 'ओं ह्रीं श्रीं वृषभजिनाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। इस व्रत की मर्यादा उत्तम २४ वर्ष, मध्यम १२ वर्ष, और जघन्य १ वर्ष की है। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत गुजरात देश की नमपुरी नगरी में सोमशर्मा ब्राह्मण के यज्ञदत्त पुत्र की स्त्री सोमश्री ने किया था जिसके प्रभाव से श्रीधर राजा की पुत्री कुम्भश्री हुई। मुनिराज के उपदेश से इस भव में भी यह व्रत धारण किया। प्रति दिन अभिषेक करके गंधोदक लाकर अपनी पूर्वपर्याय की सासु के शरीर को लगाकर कुष्ट रोग दूर किया। व्रत के प्रभाव से स्त्री लिंग छेदकर दूसरे स्वर्ग में देव हुई और भवान्तर में मोक्ष प्राप्त करेगी।

११—रविवार व्रत

प्रथम एक रविवार असाढ़, अष्टमि पूज्यो के विध माड़।
श्रावण माहिं करे पुनि चार, चार वास्त भादों माहिं धार॥
वरष एक माहीं नववार, करे पार्श्व जिन अर्चा सार।
अस वरष नव लौं निरधार, उद्यापन कर शक्ति प्रकार॥
उत्तम प्रोषध की विधि जान, आम्बिल दूजो जगत बखान।
तृतिय प्रकार कहो इक ठान, एक भुक्ति विधि चौथी जान॥
संयम शील सहित निरधार, वरष जु नवको यह विस्तार।
वरष एक में कीयो चहै, दीत आठ चालीश जु गहै॥
विधि वाही चहुँवार बखान, करे पार्श्व अभिषेक विधान।
कीजे उद्यापन तिहुँसार, पीछे तजिये व्रत निरधार॥
उद्यापन की शक्ति न होय, दूनो व्रत धरिये भविलोय।
इह विधि लख भविजन व्रत करो, ता फल तैं शिवतिय को वरो॥

—क्रियाकोष

भावार्थ—यह व्रत आषाढ़ शुक्ल के अन्तिम रविवार से प्रारंभ होता है। आषाढ़ का रविवार १, श्रावण के ४, भाद्रपद के ४, इस प्रकार एक वर्ष में नौ (९) रविवार किया जाता है। इस प्रकार नौ वर्ष में ८१ रविवार होते हैं।

यदि थोड़े ही समयमें करने का भाव हो तो आषाढ़ के अन्तिम रविवार से बारह महीनों के ४८ रविवार कर पूर्ण करे।

इस व्रत की विधियाँ चार हैं

१—उत्तम विधि—प्रति रविवार को प्रोषधोपवास करना।

२—दूसरी विधि—आमिल (इमली-चावल) का भोजन लेना।

३—तीसरी विधि—एकलठाना (एक बार का परोसा भोजन) करना।

४—चतुर्थ विधि—एकाशन करना।

इस प्रकार जिस किसी विधि से व्रत करे। व्रत के दिन में पार्श्वनाथ अभिषेकपूर्वक पूजन करे। अवधि समाप्त होनेपर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करे।

'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं चिन्तामणिपार्श्वनाथाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत बनारस नगरी में मतिसागर सेठ की स्त्री गुणमाला ने किया था जिसके प्रभाव से अनेक सुख सम्पत्तियाँ मिलि बिछुड़े हुए सातों पुत्र आकर मिले और पुनः समागम हो गया था।

१०—णमोकारपैंतीसी व्रत

अपराजित है मंत्र णमोकार, अक्षर तसु पैंतीस विचार।
कर उपवास वरण परिमाण, मानें सात करो बुधिवान॥
पुनि चौदा चौदशि गण साँच, पाँचैं तिथि के प्रोषध पांच।
नवमी नव करिये [illegible] सब प्रोषध [illegible]

पैंतीसी णवकार जु येह, जाप्यमंत्र नवकार जपेह।
मन वच तन नरनारी करे, सुरनर सुख लह शिवतिय वरे॥
—क्रियाकोष

भावार्थ—यह व्रत डेढ़ वर्ष अर्थात् एक वर्ष और छह मास में समाप्त होता है, और इस डेढ़ वर्ष की अवधि के भीतर सिर्फ पैंतीस दिन ही व्रत के होते हैं। आषाढ़ शुक्ल सप्तमी से यह व्रत शुरू होता है। इसकी विधि निम्न प्रकार है—

१—प्रथम आषाढ़ शुक्ल सप्तमी का उपवास करे। फिर श्रावण की सप्तमी २, भादों की सप्तमी २, और आश्विन की सप्तमी २, इस प्रकार सात उपवास करे। पश्चात् कार्तिक कृष्णा पंचमी से पौष कृष्णा पंचमी तक क्रमात् पाँच पंचमियों के पाँच उपवास करे। फिर पौष कृष्णा चतुर्दशी से चैत्र कृष्णा चतुर्दशी तक सात चतुर्दशियों के सात उपवास करे। फिर चैत्र शुक्ला चतुर्दशी से आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी तक सात चतुर्दशियों के सात उपवास करे। फिर श्रावण कृष्णा नवमी से अगहन कृष्णा नवमी तक नव नवमियों के नव उपवास करे। इस प्रकार ३५ उपवास द्वारा व्रत पूरा करे। प्रतिदिन अभिषेक पूर्वक णमोकार मंत्र पूजन करे पश्चात् स्वाध्याय करे।

इस णमोकार मंत्र पैंतीसी व्रत के प्रभाव से गोपाल नामक ग्वाला चम्पा नगरी में वृषभदत्त सेठ के यहाँ सुदर्शन नाम का पुत्र हुआ था और यह निमित्त पाकर वैराग्य धारण कर उसने कर्मों का नाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

१३—क्षपणा क्रिया व्रत

क्षपण किरिया की विधि जिसी, सुनिये बुध भाषी जिन तिसी।
आठें आठमूल गुणतनी, पाँचें पाँच अणुव्रत भनी॥
तीन तीज गुणव्रत की धार, शिक्षाव्रत की चौथ जु चार।
तप बारह की बारसि जान, तिसका प्रोषध बारह ठान॥
साम्य भाव की पड़िमा एक, ग्यारस प्रतिमा की दश एक।
चौथ चार चहुँदानहिं तनी, पड़िमा एक जल गालन भनी॥
अनथमीय पडिमा अघरोध, तीनहु तीज चरण दृग बोध।

ये श्रेपण प्रोषध जो करे, शील सहित तप को अनुसरे॥
सो नर तिय सुर नृप सुख थाय, अनुक्रम ते शिव थान लहाय।
उद्यापन विधि करिये सार, सक्तीहीन दुगुण व्रत धार॥

—क्रि० को०

भावार्थ—यह व्रत दो वर्ष, दो माह और एक पक्ष में समाप्त होता है। इस दो वर्ष, दो माह और एक पक्ष के अन्दर व्रत के दिन सिर्फ ५३ ही होते हैं। विधि इस प्रकार है—

प्रथम—आठ मूलगुण के आठ आठ के आठ उपवास करे।
दूसरे—पाँच अणुव्रत के पाँच पञ्चमियों के पाँच उपवास करे।
तीसरे—तीन गुणव्रत के तीन तीजों के तीन उपवास करे।
चौथे—चार शिक्षाव्रत के चार चतुर्थियों के चार उपवास करे।
पाँचवें—बारह तप के बारह द्वादशियों के बारह उपवास करे।
छठे—समता भाव का एक पड़िमा का एक उपवास करे।
सातवें—ग्यारह प्रतिमा के ग्यारह ग्यारसों के ग्यारह उपवास करे।
आठवें—चार दान के चार चतुर्थियों के चार उपवास करे।
नवमें—जल गालन क्रिया का एक पड़िमा का एक उपवास करे।
दशवें—रात्रि भोजन त्याग का एक पड़िमा का एक उपवास करे।
ग्यारहवें—तीन रत्नत्रय के तीन तीजों के तीन उपवास करे।

व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करे। त्रिकाल णमोकार मंत्र का जाप्य करे।

१४—नवकार व्रत

णमोकार व्रत अब सुन राज, सत्तर दिन एकान्तर साज।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत सत्तर दिन में समाप्त होता है। सत्तर एकाशन करे, प्रतिदिन त्रिकाल णमोकार मंत्र का जाप्य करे। पश्चात्

१५—चौबीस तीर्थंकर व्रत

तीर्थंकर चौबीसी सार, करं वास चौबीस विचार।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत २४ दिन में ही समाप्त होता है, २४ तीर्थंकरों के २४ उपवास करे। 'ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

१६—करमचूर व्रत

अष्ट करम चूरण व्रत जान, चोसठ दिन को कह्यो प्रमाण।
अष्टमि वसु केवल उपवास, अष्टमि आठ एकलिका आस।
अष्टमि वसु इक तंदुल खाय, अष्टमि आठ ग्रास इक पाय।
आठ अष्टमि कुरड़ी भोजन, अष्टमि वसु इक रस इक अन्न।
एकलठानो अष्टमि आठ, वसु अष्टमि रुच्छाहार ठाट।

दोहा—वरष होय वसु मास में व्रत पूरा है येह।
शील सहित व्रत कीजिये दायक सुर शिव गेह॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ही वर्ष ८ मास के भीतर ६४ दिन में समाप्त होता है। जिसकी विधि निम्न प्रकार है—

१—प्रथम आठ अष्टमियों के आठ उपवास करे।
—दूसरे आठ अष्टमियों के आठ एकलिकासन करे।
—तीसरे आठ अष्टमियों को सिर्फ तंदुल भोजन करे।
४—चौथे आठ अष्टमियों को सिर्फ एक एक ग्रास भोजन करे।
५—पाँचवे आठ अष्टमियों को एक एक कुरड़ी भोजन करे।
६—छठवें आठ अष्टमियों को एकरस और एक अन्न का भोजन करे।
७—सातवें आठ अष्टमियों को एकलठाना करे।
८—आठवें आठ अष्टमियों को रूक्ष अन्न का भोजन करे।

।

इस प्रकार व्रत पूरा करके उद्यापन करे [illegible]
सिद्धपरमेष्ठिने नमः' इस मंत्र का [illegible] करे।

१७—समकित चौबीसी व्रत

व्रत समकित चौबीसी मनो, [illegible]
—[illegible]

भावार्थ—यह व्रत [illegible]
व्रत पूरा होने के बाद उद्यापन करे। [illegible]
नमः' इस मंत्र का [illegible] जाप्य करे।

१८—भावनापच्चीसी व्रत

अडिल्ल—दशमी दश उपवास [illegible],
आठें वसु उपवास [illegible]।
सप प्रोषध पचीस शीलयुत [illegible],
ये भावन पच्चीसी [illegible]।

—[illegible]

भावार्थ—[illegible] पचीस [illegible]। [illegible]
निम्न प्रकार है—

१—प्रथम [illegible] [illegible]।
२—दूसरे पाँच पंचमियों के [illegible]।
३—तीसरे आठ अष्टमियों के [illegible]।
४—चौथे दो [illegible] के [illegible]।

उपवास पूरे होने पर [illegible] जाप्य करे।

अन्य प्रकार—

भावनपचीसी व्रत जान, एकान्तर पचास प्रमाण।

भावार्थ—यह व्रत पचास दिन में पूरा होता है। उपरोक्त विधि के अनुसार उपवासों के स्थान में दूने एकाशन करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे। जाप्य उपरोक्त मंत्र का ही करे।

१९—लघु पल्लविधान व्रत

पल विधान जु चौंतिस दिना, पचिस प्रोषध नव पारणा।
एकहि ते पाँचहि लौं चढ़े, फेर उतर पहिले लग अढ़े।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत चौंतीस दिन में पूरा होता है। विधि निम्न प्रकार है—

१—प्रथम एक उपवास और एक पारणा।
२—दूसरे दो उपवास और एक पारणा।
—तीसरे तीन उपवास और एक पारणा।
४—चौथे चार उपवास और एक पारणा।
५—पाँचवें पाँच उपवास और एक पारणा।
६—छट्ठे चार उपवास और एक पारणा।
७—सातवें तीन उपवास और एक पारणा।
८—आठवें दो उपवास और एक पारणा।
९—नवमें एक उपवास और एक पारणा।

इस प्रकार चौंतीस दिन में २५ उपवास और ९ पारणा किये जाते हैं। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे। जाप णमोकार मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

२०—वृहद् पल्लविधान व्रत

सुनहु पल्लविधान व्रत, जिन आगम अनुसार।
विरत बहत्तर कीजिये, बारह मास मझार॥

ए वरष एक में वास, सत्तर द्वय आगम भाष।
धारणे धारणे सत, करिये एकान्त महूर्त ॥
धर शील त्रिविध नर नारी व्रत करहु न ढील लगारी,
सुर ह्वै अनुक्रम शिव जाइ, विधि एम तनी यह गाइ।

—कि क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है जिसमें ७२ दिन व्रत के होते हैं, अर्थात् ४८ उपवास, ८ तेला, ६ बेला, इस प्रकार ७२ दिन होते हैं। क्रम निम्न प्रकार है—

१—आश्विन कृष्णा—षष्ठी तथा तेरसी का उपवास।
,, शुक्ला—एकादशी, द्वादशी का बेला और चतुर्दशी का उपवास।
२—कार्तिक कृष्णा—द्वादशी का उपवास।
,, शुक्ला—तृतीया और द्वादशी का उपवास।
३—मगसिर कृष्णा—एकादशी का उपवास।
,, शुक्ला—तृतीया और द्वादशी का उपवास
४—पौष कृष्णा—द्वितीया और अमावस का उपवास।
,, शुक्ला—पंचमी, सप्तमी और पूर्णमासी का उपवास।
५—माघ कृष्णा—चौथ, सप्तमी और चतुर्दशी का उपवास
,, शुक्ला—सप्तमी अष्टमी का बेला और दशमी का उपवास।
६—फाल्गुन कृष्णा—पंचमी और षष्ठी का बेला।
,, शुक्ला—पड़िवा और एकादशी का उपवास।
७—चैत्र कृष्णा—पड़िवा दोज का बेला, तथा चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी और एकादशी का उपवास।
,, शुक्ला—सप्तमी और दशमी का उपवास।
८—वैशाख कृष्णा—चतुर्थी और दशमी का उपवास।
,, शुक्ला—द्वितीया तृतीया का बेला, तथा नवमी और त्रयोदशी का उपवास।

९—ज्येष्ठ कृष्णा—दशमी का उपवास तथा त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या का तेला।

„ शुक्ला—अष्टमी, दशमी, और पूर्णिमा का उपवास।

१०—आषाढ कृष्णा—दशमी का उपवास और त्रयोदशी, चतुर्दशी, मावस का तेला।

„ शुक्ला—अष्टमी, दशमी और पूर्णिमा का उपवास।

११—श्रावण कृष्णा—चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी और चतुर्दशी का उपवास।

„ शुक्ला—तृतीया का उपवास, द्वादशी त्रयोदशी का बेला और पूर्णिमा का उपवास।

१२—भाद्रपद कृष्णा—द्वितीया का उपवास, षष्ठी और सप्तमी का बेला, तथा द्वादशी का उपवास।

„ शुक्ला—पंचमी, षष्ठी, सप्तमी का तेला तथा नवमी का उपवास, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी का तेला और पूर्णिमा का उपवास।

प्रतिदिन त्रिकाल जाप्य नमस्कार मंत्र का देना चाहिए।
व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करना चाहिए।

२१—नक्षत्रमाला व्रत

गीतका छन्द

अश्विनी नक्षत्र थकी सु वासर चार अधिक पचास ही,
तिहि मध्य सत्तावन सताइस बीस सात उपासही।
युत शील मन वच तन त्रिशुद्धहिं कर विवेकी चाव सों,
माला नक्षत्र सु नाम व्रततें छूटिये विधि दाव सों॥
—कि० क्रि० को०

भावार्थ—यह व्रत चौवन दिन में समाप्त होता है। प्रथम अश्विनी नक्षत्र के दिन से प्रारम्भ करे। प्रथम दिन उपवास, दूसरे दिन पारणा,

तीसरे दिन उपवास, चौथे दिन पारणा इस प्रकार से २७ उपवास और २७ पारणा करता हुआ क्रम से ५४ दिन पूरे करे। प्रतिदिन त्रिकाल णमो कार मंत्र का जाप्य देवे। व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे।

अन्य प्रकार

व्रत नक्षत्रमाला उर धरे, भव चौवन एकान्तर धरे।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यदि उपवास की शक्ति न हो तो ५४ एकाशन कर व्रत समाप्त करे।

७२—लब्धिविधान व्रत

भादों माघ चैत्र विधि जान, पदि पदस एकान्तर ठान।
पडिवा दोयज तीज प्रमाण, थापे तेला कर विधि मान॥
सकति प्रमाण शुभोषहि धरे, चौथे दिन एकासन धरे।
पाचौं दिवस शील को पाल, तीन वरष व्रत करहि सम्हाल॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद कृष्णा अमावस्या से शुरू होता है, प्रथम अमावास्या का एकाशन करे। फिर पडिवा, दोज और तीज का तेला करे। चतुर्थी को एकाशन करे। इस प्रकार प्रतिवर्ष भाद्रपद, माघ और चैत्र में करे। तीन वर्ष समाप्त होने पर उद्यापन करे। ओं ह्रीं श्री महावीरस्वामिने नमः इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य देवे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

दूसरी विधि

दूजी विधि आगम यह कहै, पडिवा तीजहि प्रोषध गहै।
दोयज दिवस करे एकान्त, यह मरयाद वरष छह मन्त॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—भादों, माघ और चैत्र मास में शुक्ल पडिवा और तीज का उपवास करे। दोयज तथा चतुर्थी का पारणा करे। इस प्रकार छह वर्ष पूर्णकर उद्यापन करे।

तीसरी विधि

पडिवाँ तीन एकान्त करेय, दोयज को उपवास धरेय।
मर्यादा भापी नव वर्ष, कीजिये भवि मनमें धर हर्ष॥
पाँच दिवस लों पाले शील, स्वर्गादिक सुख पावे लील।
पुन उत्तम नर पदवी लहे, दीक्षा धर शिवतिय वर गहे।

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—भादों, माघ और चैत्र मास में शुक्ल पडिवा और तीज का एकाशन तथा दोयज का उपवास। और चौथ का एकाशन। इस प्रकार नौ वर्ष पूरे कर उद्यापन करे।

वाराणसी नगरी के राजा विश्वसेन की रानी विशालनयना तथा उसकी चमरी और रंगा नाम की सखियों ने मुनि निन्दा कर तीव्र पाप उपार्जन किया था जिसके फलस्वरूप बहुत काल तक संसार कुयोनियों में भ्रमण करती हुई उज्जयिनी नगरी के पास पलाश नाम के ग्राम में एक शूद्र के घर तीनों पुत्रियाँ हुईं जो बहुत ही कुरूपा थीं। इनके माता पिता जन्मते ही मरण को प्राप्त हो गये थे, इनके कुलिन व्यवहार के कारण ग्रामवासियों ने इन तीनों को ग्राम से निकाल दिया था। ये तीनों भ्रमण करती हुई पाटलीपुर के उद्यान में पहुँचीं। वहाँ इन्हें मुनिराज के दर्शन हुए। उनके उपदेशामृत से प्रभावित होकर तीनों ने लब्धिविधान व्रत लिया, और बहुत श्रद्धा तथा भक्ति पूर्वक उसे किया। अन्त में मरण कर व्रतके प्रभाव से पाँचवें स्वर्ग में देव हुईं। वहाँ से चयकर विशालनयना का जीव तो मगध देशके वाडवनगर में काश्यपगोत्रीय सांडिल्य ब्राह्मण की सांडिल्या स्त्री के गौतम नाम का पुत्र हुआ। जो महावीर स्वामी के समवशरण में प्रथम गणधर हुआ। कुछ काल बाद केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया। तथा चमरी और रंगा के जीव स्वर्गसे चयकर मनुष्यपर्याय प्राप्त कर तप द्वारा कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किये।

७३—सप्तकुम्भ व्रत

सप्तकुम्भ व्रत बासठदिना, प्रोषध धर पैंतालिस दिना।
सत्रह पारने के दिन जान, सप्तकुम्भव्रत धर उर ठान॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ६२ दिन में पूरा किया जाता है जिसमें ४५ उपवास और सत्रह पारणा होते हैं। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे, यथाशक्ति मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

७४—लघु सिंहनिष्क्रीडित व्रत

दोहा—सिंहनिष्क्रीडित व्रतननो, कहूँ विधाय बखान।
विधिसों कीजे भावयुत, कर्मनिर्जरा ठान॥

चालछंद—कर प्रथम एक उपवास, पुन दोय एक तिसु आस।
दोय चार तीन पण कीजे, चव पाँच पाँच कर दीजे॥
चहुँ पाँच तीन चहुँ दोई, तिहुँ एक दोय इक होई।
सब वास साठ गण लीजे, तसु बीस पारणा कीजे॥
अस्सी दिन में व्रत येह, कर कह्यो जिनागम येह।
यह तप शिव सुख का दायक, कीनो पूरव मुनिनायक॥

—क्रि० कि० क्रि०

यह व्रत ८० दिन में पूरा होता है जिसमें ६० उपवास और २० पारणाएं होती हैं। यथा—

१—एक उपवास, एक पारणा, २—दो उपवास एक पारणा,
३—एक उपवास एक पारणा, ४—तीन उपवास एक पारणा,
५—दो उपवास एक पारणा, ६—चार उपवास एक पारणा,
७—तीन उपवास एक पारणा, ८—पाँच उपवास एक पारणा,
९—चार उपवास एक पारणा, १०—पाँच उपवास एक पारणा,
११—पाँच उपवास एक पारणा, १२—चार उपवास एक पारणा,

१३—पाँच उपवास एक पारणा, १४—तीन उपवास एक पारणा,
१५—चार उपवास एक पारणा, १६—दो उपवास एक पारणा,
१७—तीन उपवास एक पारणा, १८—एक उपवास एक पारणा,
१९—दो उपवास एक पारणा, २०—एक उपवास एक पारणा,

इस प्रकार यह व्रत ८० दिन में समाप्त होता है। व्रत के दिनों में त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप करना चाहिये।

७५—बृहत्सिंहनिष्क्रीडित व्रत

बृहत्सिंहक्रीडित व्रत सुनो, इकसौ सतहत्तर दिन गनो।
एक सौ पैंतालिस उपवास, करें पारणे बत्तिस आस।

भावार्थ—यह व्रत १७७ दिन में समाप्त होता है, जिसमें १४५ उपवास और ३२ पारणा होते हैं, यथा—

१—उपवास एक पारणा एक, २—उपवास दो पारणा एक,
३—उपवास एक पारणा एक, ४—उपवास तीन पारणा एक,
५—उपवास दो पारणा एक, ६—उपवास चार पारणा एक,
७—उपवास तीन पारणा एक, ८—उपवास पाँच पारणा एक,
९—उपवास चार पारणा एक, १०—उपवास छह पारणा एक,
११—उपवास पाँच पारणा एक, १२—उपवास सात पारणा एक,
१३—उपवास छह पारणा एक, १४—उपवास आठ पारणा एक,
१५—उपवास सात पारणा एक, १६—उपवास नौ पारणा एक,
१७—उपवास आठ पारणा एक, १८—उपवास सात पारणा एक,
१९—उपवास आठ पारणा एक, २०—उपवास छह पारणा एक
२१—उपवास सात पारणा एक, २२—उपवास पाँच पारणा एक,
२३—उपवास छह पारणा एक, २४—उपवास चार पारणा एक,
२५—उपवास पाँच पारणा एक, २६—उपवास तीन पारणा
२७—उपवास चार पारणा एक, २८—उपवास दो पारणा।

२६—उपवास तीन पारणा एक, ३०—उपवास एक पारणा एक,
३१—उपवास दो पारणा एक, ३२—उपवास एक पारणा एक,

इस प्रकार यह व्रत १७७ दिन में समाप्त होता है। व्रत के दिनों में त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप करना चाहिये। व्रत समाप्ति के बाद उद्यापन करना चाहिये।

२६—भाद्रवनसिंहनिष्क्रीडित व्रत

भाद्रवनसिंहनिष्क्रीडित जान, शत द्वय दिन ताको परिमाण।
इकसौ पचहत्तर उपवास, करे पारणा पचिस जास॥

भावार्थ—यह व्रत २०० दिन में समाप्त होता है जिसमें १७५ उपवास और २५ पारणा होते हैं। यथा—

१—उपवास एक पारणा एक, २—उपवास दो पारणा एक,
३—उपवास तीन पारणा एक, ४—उपवास चार पारणा एक
५—उपवास पाँच पारणा एक, ६—उपवास छह पारणा एक,
७—उपवास सात पारणा एक, ८—उपवास आठ पारणा एक,
९—उपवास नौ पारणा एक १०—उपवास दश पारणा एक,
११—उपवास ग्यारह पारणा एक, १२—उपवास बारह पारणा एक
१३—उपवास तेरह पारणा एक १४—उपवास तेरह पारणा एक
१५—उपवास बारह पारणा एक १६—उपवास ग्यारह पारणा एक,
१७—उपवास दश पारणा एक, १८—उपवास नौ पारणा एक,
१९—उपवास आठ पारणा एक, २०—उपवास छह पारणा एक,
२१—उपवास पाँच पारणा एक, २२—उपवास चार पारणा एक,
२३—उपवास तीन पारणा एक, २४—उपवास दो पारणा एक,
२५—उपवास एक पारणा एक।

इस प्रकार २०० दिन में व्रत समाप्त करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

२७—त्रिगुणसार व्रत

त्रिगुणसार व्रत इकतालीस, ग्यारा जेवा प्रोषध तीस।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ४१ दिनों में पूरा होता है जिसमें ३० उपवास और ११ पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा, २—एक उपवास एक पारणा,
३—दो उपवास एक पारणा, ४—तीन उपवास एक पारणा,
५—चार उपवास एक पारणा, ६—पाँच उपवास एक पारणा,
७—चार उपवास एक पारणा, ८—चार उपवास एक पारणा,
९—तीन उपवास एक पारणा, १०—दो उपवास एक पारणा,
११—एक उपवास एक पारणा,

इस प्रकार ४१ दिन में व्रत समाप्त करे, प्रतिदिन त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करे।

२८—बारा सो चौंतीसा (चारित्रशुद्धि) व्रत

अडिल्ल छन्द—

दोयज पाँचें आठें ग्यारस चौदशी,
इनके प्रोषध करे सकल अघ जो नशी।
दश प्रोषध इक मास में द्वय पख के भये,
एक बरष के इक से बीस मिल सब ठये।
पूरण है दश वर्ष सार्ध त्रय मास में,
हैं बारासौ चौंतिस प्रोषध जास में।
सम्यक चारित तनी भावना चित गहैं,
बारह सौ चौंतीसा व्रत मुनिजन कहैं।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत १० वर्ष, ३ माह और १५ दिन में समाप्त होता है जिसमें १२३४ उपवास होते हैं। अर्थात् प्रत्येक माह की दो अष्टमी, दो पंचमी, दो अष्टमी, दो एकादशी और दो चतुर्दशी, इस प्रकार एक माह में १० उपवास किये जाते हैं, इस व्रत का प्रारम्भ भाद्रपद शुक्ला पड़िमा से होता है। व्रत के दिनों में त्रिकाल जाप्य "ओं ह्रीं अर्हं श्री उत्तम चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः" मंत्र का देना चाहिये। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करना चाहिये।

यह व्रत उज्जैन नगरी के राजा हेमनप्रभा ने किया था जिसके प्रभाव से तीसरे भव में विदेह क्षेत्र की विजयापुरी नगरी में धनंजय राजा के चन्द्रभानु नाम का तीर्थंकर पुत्र हुआ और पंचकल्याणक प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया।

२६—सर्वतोभद्र व्रत

व्रत जो सर्वतोभद्र विचार, सौ दिन की मरयादा धार।
प्रोषध पचहत्तर परवान, अरु पचीस पारने जान।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत एकसौ दिन में पूर्ण होता है, जिसमें ७५ उपवास और २५ पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा,	२—दो उपवास एक पारणा,
३—तीन उपवास एक पारणा,	४—चार उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा,	६—चार उपवास एक पारणा,
७—पाँच उपवास एक पारणा,	८—एक उपवास एक पारणा,
९—दो उपवास एक पारणा,	१०—तीन उपवास एक पारणा,
११—दो उपवास एक पारणा	१२—तीन उपवास एक पारणा,
१३—चार उपवास एक पारणा,	१४—पाँच उपवास एक पारणा,
१५—एक उपवास एक पारणा,	१६—पाँच उपवास एक पारणा,
१७—एक उपवास एक पारणा,	१८—दो उपवास एक पारणा,

१६–तीन उपवास एक पारणा, २०–चार उपवास एक पारणा,
२१–तीन उपवास एक पारणा, २२–चार उपवास एक पारणा,
२३–पाँच उपवास एक पारणा, २४–एक उपवास एक पारणा,
२५–दो उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत समाप्त करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

३०—महासर्वतोभद्र व्रत

महा सर्वतोभद्र व्रत जान, दोसौ पैंतालिस दिन मान।
इकसौ छ्यानवे दिन उपवास, करे पारने सब उनचास॥
—कुन्थि-सर गिणा

भावार्थ—यह व्रत दो सौ पैंतालीस दिन में पूरा होता है जिनमें एक सौ छ्यानवे उपवास और उनचास पारणे होते हैं—

१–एक उपवास एक पारणा, २–दो उपवास एक पारणा,
३–तीन उपवास एक पारणा, ४–चार उपवास एक पारणा,
५–पाँच उपवास एक पारणा, ६–छह उपवास एक पारणा,
७–सात उपवास एक पारणा, ८–एक उपवास एक पारणा,
९–दो उपवास एक पारणा, १०–तीन उपवास एक पारणा,
११–चार उपवास एक पारणा, १२–पाँच उपवास एक पारणा,
१३–छह उपवास एक पारणा, १४–सात उपवास एक पारणा,
१५–एक उपवास एक पारणा, १६–दो उपवास एक पारणा,
१७–तीन उपवास एक पारणा, १८–चार उपवास एक पारणा,
१९–पाँच उपवास एक पारणा, २०–छह उपवास एक पारणा,
२१–सात उपवास एक पारणा, २२–एक उपवास एक पारणा,
२३–दो उपवास एक पारणा, २४–तीन उपवास एक पारणा,
२५–चार उपवास एक पारणा, २६–पाँच उपवास ए

३५—वृहद् जिनगुणसम्पत्ति व्रत

चालछंद

जिनगुण सम्पत्ति व्रत धार, सुनिये तिनको अवधार,
दश अतिशय जिन जन्म तही, लीये उपजे सहज सत ही।
उपजो जब केवलज्ञान, दश अतिशय प्रगटे जाम,
इम अतिशय बीस जु केरी, कर बीस दसें सुख घेरी।
देवन कृत अतिशय जानो, चौदश चौदह तिहिं ठानो,
वसु प्रातिहार्य जिनदेव, वसु आठें करिये एव।
भावन सोलह कारण की, पडिमा सोलह वरनी की,
पाचों कल्याणक आवों, पाँचें पाँचों कर तावीं।
प्रोषध ये त्रेसठ जानो, युत शील मधिक जन ठानो
उत्तम सुर नर सुख पावे, अनु क्रमतें शिवपुर जावे।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत १० मास में समाप्त होता है, जिसमें त्रेसठ उपवास होते हैं। यथा—

१—प्रथम जन्म के दश अतिशयों के दश दशमी के उपवास करे।
२—दूसरे केवलज्ञान के दश अतिशयों के दश दशमी के उपवास करे।
३—तीसरे देवकृत चौदह अतिशयों के चौदह चतुर्दशियों के उपवास करे।
४—चौथे आठ प्रातिहार्यों के आठ अष्टमियों के उपवास करे।
५—पाँचवें षोडश कारण भावना के सोलह पडिमा के उपवास करे।
६—छट्ठवें पाँचों कल्याणकों के पाँच पंचमियों के उपवास करे।

इस प्रकार ६३ उपवास द्वारा व्रत पूर्ण करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत पाटलीपुर नगर में नागदत्त सेठ की स्त्री सुमति सेठानी ने किया था जिसके प्रभाव से अनेक सुख भोगकर अनुक्रम से हस्तिनागपुर में

थैरथ नाम का राजा हुआ था और भगवान आदिनाथ का आहार दान देकर संसार से विरक्त होकर तप द्वारा कर्मनाश कर केवलज्ञान प्राप्त किया और मोक्ष को प्राप्त हुआ।

३६—मध्यम जिनगुणसम्पत्ति व्रत

जिनगुण सम्पत्ति उपवास दीस, प्रोषध चालिस पारणा तीस।

—वर्धमानपुराण

भाषा ।—यह व्रत ६६ दिन में समाप्त होता है जिसमें ३६ उपवास और ३० पारणा होते हैं। यथा—

१—दो उपवास एक पारणा	२—एक उपवास एक पारणा
३—एक उपवास एक पारणा	४—एक उपवास एक पारणा
५—एक उपवास एक पारणा	६—एक उपवास एक पारणा
७—दो उपवास एक पारणा	८—एक उपवास एक पारणा
९—एक उपवास एक पारणा	१०—एक उपवास एक पारणा
११—एक उपवास एक पारणा	१२—एक उपवास एक पारणा
१३—दो उपवास एक पारणा	१४—एक उपवास एक पारणा
१५—एक उपवास एक पारणा	१६—एक उपवास एक पारणा
१७—एक उपवास एक पारणा	१८—एक उपवास एक पारणा
१९—दो उपवास एक पारणा	२०—एक उपवास एक पारणा
२१—एक उपवास एक पारणा	२२—एक उपवास एक पारणा
२३—एक उपवास एक पारणा	२४—एक उपवास एक पारणा
२५—दो उपवास एक पारणा	२६—एक उपवास एक पारणा
२७—एक उपवास एक पारणा	२८—एक उपवास एक पारणा
२९—एक उपवास एक पारणा	३०—दो उपवास एक पारणा

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे। 'ओं ह्रीं अर्हन्त परमेष्ठिने नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

३७—लघु जिनगुण संपत्ति व्रत

लघुजिन गुण संपति त्रेसठि, कर एकान्तर पूज्य प्रमेष्टि।

भावार्थ—यह व्रत त्रेसठ दिन में पूरा किया जाता है, इसमें ६३ एकाशन होते हैं। व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे।

३८—वृहत्सुखसंपत्ति व्रत

पडिमा इक दोयज दोइ, तिहुँ तीज चौथ चहुँ जोई।
पाचें पण छठि छह आनो, सातें पुनि सात बखानो॥
आठें के प्रोषध आठ, नवमी नव आगम पाठ।
दशमी दश ग्यारस ग्यारे, बारस के प्रोषध बारे॥
तेरस के तेरा लीजे, चौदशि के चौदह कीजे।
पन्द्रसि पन्द्रह शिवकारी, बीस इकसौ प्रोषध धारी॥
यह सुख संपति व्रत नीको, भव भव सुखदायक जी को।
मन वच काया शुद्ध कीजे, भविजन नरभव फल लीजे॥

—कि० सि० कि०

यह व्रत १२० दिन में पूरा किया जाता है जिसमें १२० उपवास होते हैं, यथा—

१—एक पडिमा का एक उपवास,
२—दो दोयज के दो उपवास,
३—तीन तीज के तीन उपवास,
४—चार चौथ के चार उपवास,
५—पाँच पञ्चमियों के पाँच उपवास,
६—छह षष्ठियों के छह उपवास,
७—सात सप्तमियों के सात उपवास,
८—आठ अष्टमियों के आठ उपवास,
९—नौ नवमियों के नौ उपवास,
१०—दश दशमियों के दस उपवास,
११—ग्यारह एकादशियों के ग्यारह उपवास,
१२—बारह द्वादशियों के बारह उपवास,
१३—तेरह त्रयोदशियों के तेरह उपवास,
१४—चौदह चतुर्दशियों के चौदह उपवास,
१५—पन्द्रह पन्द्रसियों के पन्द्रह उपवास।

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे। त्रिकाल णमोकार मन्त्र का जाप्य करे।

३९—मध्यम सुखसंपत्ति व्रत

सुख संपति दिन इकसोवीस, पूर्यो मावस प्रोषध तीस।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा होता है, जिसमें १२० उपवास होते हैं। यथा—प्रत्येक मास की पूर्णिमा और अमावास्या के दिन उपवास करे। इस प्रकार ५ वर्ष में १२० उपवास द्वारा व्रत पूरा कर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

४०—लघु सुखसंपत्ति व्रत

षोडश तिथि प्रोषध पन्द्रश, लघुव्रत सुखदाय अनेश्स।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत सोलह दिन में पूरा होता है। किस किसी भी मास की शुक्ल पड़िमा से कृष्ण पड़िमा तक १६ दिन के १६ उपवास करे। प्रतिदिन त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूरा होनेपर उद्यापन करे।

४१—रुद्रवसंत व्रत

रुद्रवसंत चवालिस दिना, पैंतिस प्रोषध नव पारणा।
—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत चवालीस दिन में पूरा होता है, जिसमें ३५ उपवास और नव पारणा होते हैं। यथा—

१—दो उपवास एक पारणा, २—तीन उपवास एक पारणा,
३—चार उपवास एक पारणा, ४—पाँच उपवास एक पारणा,
५—छह उपवास एक पारणा, ६—छह उपवास एक पारणा,
७—चार उपवास एक पारणा, ८—तीन उपवास एक पारणा,
९—एक उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूर्ण करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

४२—शीलकल्याणक व्रत

दोहा—शीलकल्याणक व्रत तनो, भेद सुनो जे सत।
मन वच काय विशुद्धि कर, धारो भवि हरषत ॥

चाल छन्द

तिरयच व नर सुर नारी, चौथी चित्र चेतन सारी।
पंच इन्द्रिय तैं चहुँ गुनिये, तिन मरया बीस जु मुनिये ॥
मन वच तन सैं ते बीस, गुनिये ह्वै तीस व तीस।
कृत कारित अनुमोदन तैं, गुनिये पुन साठहिं गनतैं ॥
इकसौ अस्सी हुए जोड़, प्रोषधकर भविधर सोड़।
इक वरष माहिं निरधार, करिये पूरण व्रत सार ॥
इक दिन उपवास जु कीजे, दूजे दिन असन सुलीजे।
तीजे दिन फिर उपवास, इम करहु इकातर तास।
इकसौ अस्सी पर्यन्त, इतने ही उपवास करंत।
दिन साढ़े तीनसौ धीर, पालैं नित शील गहीर ॥
यह शीलकल्याणक नाम, व्रत है बहुविध सुखधाम।
तीर्थंकर पदवी पावे, समकित युत व्रत जो ध्यावे ॥
—कि० सिं०

भावार्थ—यह व्रत ३६० दिन म पूरा होता है जिसमें १८० उप
और १८० पारणायें होती हैं। यथा—स्त्री १ मनुष्यनी २ तिर्यंचनी
अचेतनी ४ इन चारों का पाँच इन्द्रियों में गुणा किया तो २० हु
फिर २० को मन, वचन, काय, इन तीन से गुणा तो ६० हुए।
६० को कृत, कारित, अनुमोदना इन तीन से गुणा १८० हुए। इन ए
अस्सी शील के भेदों के १८० उपवास करे। एक उपवास, एक पार
इस क्रम से १८० उपवास व १८० पारणायें करे। एक वर्ष पूर्ण होने
उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

४३—श्रुतिकल्याणक व्रत

श्रुति कल्याणक दिवस पचीस, पंच पंच दिन ब्योरो दीस।
प्रोषध कंजिक एकलठानो, रूक्ष जु अनागार पहिचानो॥
श्रुतिकल्याणक यह विधि धार, श्रुतहि पढ़न कर लेय आहार॥
—कि० सिं० क्रि

भावार्थ—यह व्रत पचीस दिन में पूरा होता है। यथा—प्रथम पाँच दिन के ५ उपवास करे। फिर दूसरे पाँच दिन कांजिक आहार करे। तीसरे पाँच दिन एकलठाना करे। चौथे पाँच दिन रूक्ष आहार करे। पाँचवें पाँच दिन मुनिवृत्ति से आहार करे। इस प्रकार २५ दिन पूरा होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। शास्त्र स्वाध्याय के बाद आहार करे।

४४—चन्द्रकल्याणक व्रत

चन्द्रकल्याणक दिवस पच्चीस, पांच पांच दिन ब्योरे दीस।
प्रोषध कंजिक एकलठान, रूक्ष जु अनागार पहिचान।
चन्द्रकल्याणक व्रत विधि येह, मन वच तन करिये भविलोय।
—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत २५ दिन में पूर्ण होता है। जिसमें प्रथम पाँच दिन उपवास, दूसरे पाँच दिन कांजिक भोजन, तीसरे पाँच दिन एकलठाना, चौथे पाँच दिन रूक्ष भोजन, पाँचवें पाँच दिन मुनिवृत्ति से भोजन करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

४५—लघुकल्याणक व्रत

लघुकल्याणक व्रत दिनपंच, एक एक दिन यहि विधि सच।
प्रोषध कंजिक एकलठान, रूक्ष जु अनागार पहिचान।

भावार्थ—यह व्रत पाँच दिन में पूरा होता है। नियम प्रथम १ दिन उपवास, दूसरे १ दिन कांजिक भोजन, तीसरे १ दिन एकलठाना, चौथे १ दिन रूक्ष भोजन, पाँचवें १ दिन मुनिवृत्ति से भोजन करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे।

४६—मध्यकल्याणक व्रत

मध्य कल्याण जु तेरा दिना, आदि अंत द्वय प्रोषध गिना।
एकल चार कंजिका तीन, रूक्ष जु अनागार द्वय दून॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत १३ दिन में पूरा होता है। यथा—प्रथम एक उपवास, दूसरे चार दिन एकलठाना, तीसरे कंजिकाहार, चौथे २ रूक्ष भोजन, पाँचवें २ दिन मुनिवृत्ति से आहार, छठवें १ उपवास। इस प्रकार १५ दिन करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

४७—श्रुतस्कंध व्रत

दोहा—श्रुतस्कंध व्रत तीन विधि, उत्तम मध्य कनिष्ठ।
षोडश प्रोषध तीस द्वय वासर माँहि गरिष्ठ॥
दश प्रोषध दिन बीस में, मध्यम विधि लख लेह।
वसु प्रोषध इक पक्ष में, है कनिष्ठ व्रत येह॥
कथन विशेष कथा महा, भादों माहि करेय।
त्रिविधि जिनेश्वर भाषियो करके कर्म उच्छेद॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद मास में किया जाता है। इसकी विधियाँ तीन प्रकार हैं—१ उत्तम विधि, २ मध्यम विधि, ३ जघन्य विधि।

१—उत्तम विधि—भाद्रपद कृष्णा एकम से आश्विन कृष्णा एकम तक ३२ दिन में १६ उपवास और सोलह पारणा।

२—मध्यम विधि—भाद्रपद में २० दिन में १० उपवास और १० पारणाएँ करना।

३—जघन्य विधि—१६ दिन में ८ उपवास और ८ पारणाएँ करना।

'ओं ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत स्याद्वादनयगर्भितद्वादशाङ्गश्रुतज्ञानाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण समाप्त होने के बाद उद्यापन करे।

अन्य विधि

श्रुतस्कन्धव्रत अब आदरे, बत्तिस दिवस एकान्त करे।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ३२ दिन में पूरा होता है जिसमें ३२ एकाशन होते हैं। उपरान्त मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत समाप्त होने के बाद उद्यापन करे।

यह व्रत पूर्व विदेह में पुष्कलावती देश के पुंडरीक नगर में राजा गुणभद्र की पट्टरानी गुणवती ने सामन्धर स्वामी के निकट धारण किया था, जिसके प्रभाव से चौथे भव में पश्चिम विदेह कुमुदवती देश के अशोकपुर नगर में पद्मनाभि राजा की पट्टरानी जितपद्मा के गर्भ से पद्मधर नाम का तीर्थंकर हुआ जो तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती और कामदेव इन तीन पदों से युक्त था, और नीति पूर्वक राज्य भोगकर संसार से उदास होकर जिनदीक्षा ग्रहण कर कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

४८—श्रुतज्ञान व्रत

दोहा—प्रोषधव्रत श्रुतज्ञान के जिनवर भाषे जेम।

सकल आठ चउ एकसो बुधि सुन मचि धर देम॥

चौपाई

शुक्ल पक्ष में व्रत कर सार, षोडश तिथि के मध्य विचार।
सोलह पड़िमा प्रोषध धार, सित मित कर पक्ष में निरधार॥
और कहूँ तिथि तिन कर तीज, चौथ चार पण पचमी लीज।
छह छुटि सातें सात बखान, आठें आठ नमें नव जान॥

दशमी दश ग्यारह ग्यारसी, प्रोषध कर बारह बारसी।
तेरसि तेरह मास बखान, चौदश चौदह प्रोषध ठान॥
पूनो के पन्द्रह उपवास, मावस पन्द्रह करिये तास।
शील सहित प्रोषध सब करे, भवभव के संचित अघ हरे॥
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत १२ वर्ष ८ मास में समाप्त होता है जिसमें १४८ उपवास होते हैं, यथा—

१—सोलह पड़िवा के सोलह उपवास, —तीन तीज के तीन उपवास,
३—चार चौथ के चार उपवास ४—पाँच पंचमी के पाँच उपवास,
५—छह छठी के छह उपवास ६—सात सप्तमी के सात उपवास,
७—आठ अष्टमी के आठ उपवास, ८—नौ नवमी के नव उपवास,
९—दश दशमी के दश उपवास १०—ग्यारह ग्यारसी के ग्यारह उपवास,
११—बारह द्वादशी के बारह उपवास १२—तेरह त्रयोदशी के तेरह उपवास
१३—चौदह चतुर्दशी के चौदह उपवास १४—पन्द्रह पूर्णिमा के पन्द्रह उपवास,
१५—पन्द्रह अमावस के पन्द्रह उपवास

इस प्रकार व्रत पूर्णकर उद्यापन करे। ॐ ह्रीं द्वादशांगश्रुतज्ञानाय नमः इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

४६—पंचश्रुतज्ञान व्रत

पंच श्रुतज्ञानहिं व्रतसार, कर उपवास निरंतर धार।
इकसौ अड़सठ दिन परमान, जब चाहे आरम्भे ठान॥
—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ३३६ दिन में समाप्त होता है, जिसमें १६८ उपवास और १६८ पारणे होते हैं। एक उपवास एक पारणा इस अनुक्रम से करे। ॐ ह्रीं पंचश्रुतज्ञानाय नमः इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

५०—ज्ञानपचीसी व्रत

अडिल्ल—प्रोषध चौदह चौदशि के विधियुत करे,
तैसे ग्यारा ग्यारसि के प्रोषध करे।
सब उपवास पचीस शील व्रतयुत धरे,
ज्ञान पचीसी व्रत जिनागम इम करे॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पचीस दिन में पूरा होता है, अर्थात् चौदह पूर्व के चौदह चतुर्दशियों के उपवास और ग्यारह अंग के ग्यारह एकादशियों के उपवास कुल २५ करे। 'ॐ ह्रीं द्वादशांगश्रुतज्ञानाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

५१—बृहद् रत्नावलि व्रत

व्रत रत्नावलि बृहद् बखान, त्रयशत छ्यासठ दिन परमान।
प्रोषध सबै तीनसै करे, छ्यासठ तहाँ पारणा धरे॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत ३६६ दिन में पूर्ण होता है, जिसमें ३०० उपवास और ६६ पारणाएं होती हैं। इस व्रत को किसी मास से प्रारंभ करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

५२—मध्यम रत्नावलि व्रत

चाल छन्द

रत्नावलि मध्यम करिये, प्रोषध तीजहिं सुदि धरिये।
पंचमि अष्टमि उपवास, सितपक्ष तिहूँ उपवास॥
दोयज पंचमि अंधियारी, आठें प्रोषध सुखकारी।
इक मास माहिं छह जानो, इक वर्ष बहत्तर ठानो॥
उद्यापन शकति प्रमाण, करके तजिये मतिमान।
दृग युत अरु शील धरीने, तातैं उत्तम फल लीजे॥

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है जिसमें बहत्तर उपवास होते हैं। यथा—प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष में ३, ५, ८, इन तिथियों में उपवास करे। तथा कृष्णपक्ष में २, ५, ८, इन तीन तिथियों में उपवास करे। इस प्रकार एक मास में ६ उपवास करे, १२ मास के कुल बहत्तर उपवास करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप करे।

अन्य प्रकार

मध्यम रत्नावलि व्रत और, प्रोषध सबै बहत्तर ठौर।
शुकल पचमी छटि इकदशी, कृष्ण दौज छटि अरु द्वादशी॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—इस व्रत की दूसरी विधि भी है यथा—शुक्लपक्ष की ५, ६, ११, तथा कृष्णपक्ष की २, ६, १२ इस प्रकार प्रति माह ६ उपवास करे। १२ मास के कुल ७२ उपवास करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

५३—लघु रत्नावलि व्रत

लघु रत्नावलि इकतालीस, ग्यारह जेवा प्रोषध तीस।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ४१ दिन में पूर्ण होता है जिसमें ३० उपवास और ११ पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा,
२—दो उपवास एक पारणा,
३—तीन उपवास एक पारणा,
४—चार उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा,
६—पाँच उपवास एक पारणा,
७—चार उपवास एक पारणा,
८—तीन उपवास एक पारणा,
९—दो उपवास एक पारणा,
१०—एक उपवास एक पारणा,

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

४४—[illegible] व्रत

अडिल्ल छंद—एक [illegible] [illegible] धारहीं,
चार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
गुरु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

—कि॰ सिं॰ कि॰

भावार्थ—[illegible] [illegible] [illegible] ५ [illegible] और ६ पारणा होते हैं। [illegible]—

१—एक उपवास [illegible] [illegible] पारणा,
३—तीन उपवास [illegible] [illegible] पारणा,
५—पाँच उपवास [illegible] [illegible] पारणा,
७—तीन उपवास [illegible] [illegible] पारणा,
९—एक उपवास [illegible] [illegible] पारणा,

इस प्रकार [illegible] [illegible] नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

४५—[illegible] विधि व्रत

मुक्तावलि [illegible] [illegible] पारणे तेरह जान।
मध्यम मुक्तावलि [illegible] [illegible] भवि जान ॥

—[illegible]

भावार्थ—यह [illegible] [illegible] है जिसमें [illegible] और १३ पारणे होते हैं। [illegible] नमस्कार मन्त्र का जाप्य [illegible] करे और [illegible]

४६—[illegible] विधान व्रत

चालछन्द—मुक्तावलि [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] पहली [illegible]

असोज कृष्ण छठि तेरस, उजयारी करिये ग्यारस,
कातिक वदि बारस नाम, सुदि तीज रु ग्यारस ठाम।
मगसिर वदि ग्यारस जानो, प्रोषध सुदि तीजहि ठानो,
नव-नव प्रतिवर्ष गहीजे, प्रोषध इक अस्सी कीजे।
पूरे नव वर्ष मझारी, शुतशील करहु नर नारी,
शातें फल पावे मोटो मिटहै विधि उदय जु खोटो।

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत नव वर्ष में पूरा होता है जिसमें प्रत्येक वर्ष में नौ उपवास होते हैं, कुल ८१ उपवास होते हैं यथा—

भाद्रपद शुक्ल ७, असोज कृष्ण ६–१३, असोज शुक्ल ११, कार्तिक कृष्ण १२, कार्तिक शुक्ल ३–११, मगशिर कृष्ण ११, मगशिर शुक्ल ३, इस प्रकार एक वर्ष में ९ उपवास करे। कुल ९ वर्ष के ८१ उपवास पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। और ओं ह्रीं वृषभजिनाय नमः इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत दुर्गन्धा नाम की ब्राह्मण की पुत्री ने किया था जिसके प्रसाद से प्रथम स्वर्ग में देव हुई और वहाँसे चयकर मथुरा में श्रीधर राजा के यहाँ पद्मरथ नाम का पुत्र हुआ था और वासुपूज्य स्वामी के समवशरण में दीक्षा लेकर उनका गणधर हुआ और कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

५७—एकावलि व्रत

अडिल्ल छन्द—सुनहु भाविक एकावलि व्रत विधि है जिसी,
सुक्ल प्रतिपदा पंचमि आठमि चौदशी॥
कृष्ण चतुर्थी आठमि चौदशि जानिये,
चौरासी उपवास वरष मध ठानिये॥

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है जिसमें ८४ उपवास होते हैं। किसी भी मास की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है। शुक्ल १, ५, ८, १४ तथा कृष्ण ४, ८, १४ प्रत्येक मास की इन सात तिथियों के उपवास करे। इस प्रकार १२ मास के ८४ उपवास करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्रका जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

५८—लघु एकावलि व्रत

लघु एकावलि चौबिस ठान, चोबिस प्रोषध कर मत थान ॥

—हरिवंशपुराण

भावार्थ—यह व्रत ४८ दिनमें पूर्ण होता है, जिसमें २४ उपवास और २४ पारणायें होती हैं। किसी भी मास की किसी भी तिथिसे प्रारम्भ करे। एक उपवास, एक पारणा इस क्रमसे करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्रका त्रिकाल जाप्य करे।

५९—द्विकावलि व्रत

दोहा—विधी द्विकावलि व्रत की, श्री जिन भाषी नाम।
बेला सात जु मास में, धरिये सुन तिन नाम ॥
चाल छंद-सित पक्ष थकी व्रत कीजे, पडिमा द्वितिया बेला कीजे,
पुन पाँचें षष्ठी जानो, आठें नवमी पुन ठानो।
चौदश पून्यो गिन लेह, बेला चहुँ सित पख एह,
तिथि चौथ पचमी कारी, आठें नवमी सुविचारी ॥
चौदश मावस परवान, पख कृष्ण करे इम तान,
इम सात मास इक माहीं, बारा मासहिं इक ठाहीं।
चौरासी बेला जाने, उद्यापन कर हरषीजे,
इस व्रतमें सुरशिव पावे, दुख को तहाँ ओर न आवे ॥

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में पूर्ण होता है जिसमें ८४ उपवास होते हैं। यथा—इस व्रत को किसी भी मास से शुरू करे।

शुक्ल पक्ष की तिथियाँ–	कृष्ण पक्ष की तिथियाँ–
१–प्रतिपदा और द्वितीया का बेला।	१–चौथ और पञ्चमी का बेला।
२–पञ्चमी और षष्ठी का बेला।	२–अष्टमी और नवमी का बेला।
३–अष्टमी और नवमी का बेला।	३–चौदश और मावस का बेला।
४–चौदश और पून्यों का बेला।	

इस प्रकार एक मास में ७ बेला करे। इसी प्रकार १२ मास के ८४ बेला करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

६०—लघु द्विकावलि व्रत

लघुद्विकावलि इकसो बीस, बेला करे हरण चौबीस।
इक हारे अड़तालिस और, सब पारणे चौबिस जोर।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत १२० दिन में समाप्त होता है, जिसमें २४ बेला, ४८ एकाशन, २४ पारणा–इस प्रकार १२० होते हैं। प्रथम बेला १, फिर पारणा १, फिर एकाशन २, इस क्रमसे करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्रका त्रिकाल जाप्य करे।

६१—बृहद्कनकावलि व्रत

गुरुकनकावलि व्रत दिन जान, दिन जु पांच सै बाइस जान।
प्रोषध करि चौ से चौतीस, जेवा सबे अठासी दीस॥

यह व्रत ५२२ दिन में पूर्ण होता है जिसमें चारसौ चौंतीस उपवास और अठासी पारणे होते हैं। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। और नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

६२—लघु कनकावलि व्रत

चाल छंद—

कनकावलीय व्रत तैसो, आगम भाष्यो सुन जैसो।
सित पक्ष एकी उपवास, करिये विधि सुनिये तास॥

प्रोषध सित पड़िमा कीजे, पुन वास पचमी लीजे।
सुदि की दशमी पुन करही, वदि द्वितिया छट बारसही॥
इक मास मध्य छह कीजे, करिये भवि भाव धरीजे।
उपवास बहत्तर जास, इक वरष मध्य कर तास।

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है जिसमें ७२ उपवास होते हैं। यथा—किसी भी एक मास से प्रारंभ करे। शुक्ल पक्ष की पड़िमा, पचमी और दशमी का उपवास, कृष्ण पक्ष में द्वितिया, षष्ठी और द्वादशी का उपवास, इस प्रकार प्रत्येक माह में ६ उपवास कर १२ मास के ७२ उपवास कर व्रत पूर्ण करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

६३—लघुमृदगम य व्रत

दोय वास फिर असन फेर तिहुँ चहुँ करे,
पाच वास धर चार तीन दय अनुसरे।
दिवस तीन में वास कहे तेईस हैं,
लघु मृदग मध्य सात पारणा युत गहे॥

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत एक मास में पूरा किया जाता है जिसमें २३ उपवास और सात पारणाएं होती हैं। यथा—

१—दो उपवास एक पारणा, २—तीन उपवास एक पारणा
३—चार उपवास एक पारणा ४—पाँच उपवास एक पारणा
५—चार उपवास एक पारणा ६—तीन उपवास एक पारणा
७—दो उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूराकर उद्यापन करे। और नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

६४—बृहत् मृदंगमध्य व्रत

गीतिका छन्द

उपवास इक कर दोय पारण, तीन चहुँ पण छह धरे।
पुन सात आठ रु आठ नव नौ फेर वसु सात जु करे॥
छह पाँच चार रु तीन दय इक वास इकयासी गहे।
मिरदंगमध्य जु नाम व्रत पारणा सत्रह गहे।

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत ९८ दिन में पूरा होता है जिसमें ८१ उपवास और १७ पारणाएँ होती हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा
२—दो उपवास एक पारणा,
३—तीन उपवास एक पारणा
४—चार उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा
६—छह उपवास एक पारणा
७—सात उपवास एक पारणा
८—आठ उपवास एक पारणा
९—नौ उपवास एक पारणा,
१०—आठ उपवास एक पारणा,
११—सात उपवास एक पारणा,
१२—छह उपवास एक पारणा
१३—पाँच उपवास एक पारणा,
१४—चार उपवास एक पारणा
१५—तीन उपवास एक पारणा,
१६—दो उपवास एक पारणा,
१७—एक उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे। और नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

६५—मुरजमध्य व्रत

मुरजमध्य व्रत तेंतीस जान, छब्बिस प्रोषध जेवा सात।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत तेंतीस दिन में पूरा होता है जिसमें २६ उप
और ७ पारणाएँ होती हैं। यथा—

१—दो उपवास एक पारणा, २—तीन उपवास एक पारणा,
३—चार उपवास एक पारणा, ४—पाँच उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा, ६—चार उपवास एक पारणा,
७—तीन उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे, और त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे।

६६—वज्रमध्य व्रत

वज्रमध्य व्रत दिन अड़तीस, जेया नव प्रोषध उनतीस।
—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत अड़तीस दिन में पूरा होता है, जिसमें २९ उपवास और नव पारणा होते हैं। यथा—

१—एक उपवास एक पारणा, २—दो उपवास एक पारणा,
३—तीन उपवास एक पारणा, ४—चार उपवास एक पारणा,
५—पाँच उपवास एक पारणा, ६—पाँच उपवास एक पारणा,
७—चार उपवास एक पारणा, ८—तीन उपवास एक पारणा,
९—दो उपवास एक पारणा।

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे, और नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

६७—मेरुपंक्ति व्रत

चौपाई

**वरत मेरुपकति जो नाम तासु करनविधि सुन अभिराम।
द्वीप अढाई मध्य सुजान, पाँच मेरु ज्यों प्रकट बखान॥
जम्बू द्वीप सुदर्शन मही, विजय सुपूर्व धातुकी मही।
अपर धातुकी अचल प्रमाण, मानो पुष्कर मन्दिर मान।
पुष्कर अपर विद्युन्मालिना, पचमेरु वन चौथ सम्हालिना।
तिनमें असी चैत्यग्रहसार, तिनके व्रत प्रोषध निरधार।**

सुनहु सुदर्शन भूधर जेह, भद्रशाल वन चहुँदिशि तेह।
जिनमंदिर तिहि चार बखान, प्रोषध चार एकान्तर ठान।
पीछे बेलो कीजे एक, वन सौमनस दूसरो टेक।
चार जिनेश्वर भवन प्रकाश, चार वास पुन बेलो तास।
नदन वन जिन प्रोषध चार, पाछें ताके बेलो धार।
पाडुक वन चहुँ जिनवर गेह, ताके चहुँ प्रोषध धर एह।
पुन बेलो धारो मनिसार, मेरु सुदर्शन यह विस्तार।
प्रोषध सोलह बेला चार, व्रत दिन चहुँ चालीस मझार।
चालीस उपवास बखान बीस जु तास पारणा जान।
ऐसे अनुक्रम करिये सव्य, पच मेरु व्रत विधि सों भव्य।
इनमें अंतर पाडे नाहीं, लगते प्रोषध बेला माहीं।
सब प्रोषधको बेलो जोड, बेला बीस करे चित मोड।
प्रोषध सबे एकसो बीस, करे पारणा अस्सी दीस।
सकल वास बेला मिच जान, बीस इकात कहे जु बखान।
ऐसे बीस दिवस जानिये, वरत मेरु पकति मानिये।
सात महाना दिन दशमाँहि, सकल वरत इम पूरण थाहि।
शील सहित शुभ व्रत पालिए, हीन उदय विधिके टालिए।
सुरपद पावे सशय नाहीं, अनुक्रम भय लहि शिवपुर जाहीं।
—कि० सि० क्रि

भावार्थ—यह व्रत ७ महीने और १० दिन में पूरा होता है। जिसमें ८० उपवास, २० बेला, और १०० पारणायें होती हैं। इस व्रत को भाद्र [illegible] किस मासमें प्रारम्भ करे। विधि—

१—सुदर्शन मेरु—भद्रशालवन के चैत्यालय ४ के ४ उपवास और ४ पारणाए। फिर एक बेला और एक पारणा इस प्रकार उपवास [illegible] बेला १, पारणा ५ हुए।

	प्रोषध	बेला	पारणा
इसी प्रकार नन्दन वन के	४	१	५
,, सौमनस वन के	४	१	५
,, पाण्डुक वन के	४	१	५

इसी प्रकार कुल मिलाकर—

	प्रोषध	बेला	पारणा
सुदर्शनमेरु के	१६	४	२०
विजयमेरु के	१६	४	२०
अचलमेरु के	१६	४	२०
मन्दिरमेरु के	१६	४	२०
विद्युन्मालीमेरु के	१६	४	२०

इस प्रकार पाँचों मेरु के उपवास ८०, बेला २०, पारणा १०० हुए—बेला २० के दिन ४०, कुल दिन २२० हुए।

जाप्य मन्त्र— ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि अस्सीजिनालयेभ्यो नमः। इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। यदि पृथक् २ करना हो तो निम्न प्रकार करे—

१—ओं ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

२—ओं ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

३—ओं ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

४—ओं ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

५—ओं ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे।

६८—अक्षयनिधि व्रत

व्रत अखैनिधि को उपवास, श्रावण सुदि दशमी कर तास।
भादों वदि दशमी जब होय, तिनहु के प्रोषध अवलोय॥
और सकल एकान्त जु करे, सो दश वर्षहि पूरो करे।
उद्यापन कर छाँडे ताहि, नातर दूनो करिये आहि॥

भावार्थ—यह व्रत दश वर्ष में पूरा होता है। प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ल दशमी और भाद्रपद कृष्ण दशमी का उपवास करे। शेष बीच के २८ दिनों में एकाशन करे। इस प्रकार दश वर्ष तक व्रत करे। पश्चात् उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत राजगृही नगरी में राजा मेघनाद ने किया था जिसके प्रभाव से वह पहले स्वर्ग में देव हुआ और वहाँ से चयकर मनुष्य पर्याय प्राप्त कर तप द्वारा कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

६९—मेघमाला व्रत

चौपाई

व्रत मेघमाला तसु नाम, भादव मास करे सुखधाम।
प्रोषध पडिमा तीन बखान, आठ दुहुँ चौदशि दुहुँ जान॥
सात वास चौबीस एकात, त्रिविध शीलयुत करिये सत।
वरष पाँचलौं तसु मरयाद, सुरनर पावे सुख अहलाद॥
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा होता है। यथा—

भाद्रपद कृष्ण १, ८, १४ तथा शुक्ला १, ८, १४ और असोज कृष्ण १ इन सात तिथियों के प्रतिवर्ष उपवास करे। शेष २४ दिन एकाशन करे। इस प्रकार ५ वर्ष तक करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे।

यह व्रत वाराणसी नगरी में कनकसेन सेठ और उसकी पत्नी सेठानी ने किया था जिसके प्रभाव से वे दोनों जीव स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुए और वहाँ से चयकर मनुष्य होकर कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

७०—सुखकारण व्रत

अडिल्ल छन्द—एकवास एकंत एक अनुक्रम करे,
मास चार पक्ष एक इकांतर इम धरे।

देव शास्त्र गुरु पूज सर्वे व्रत धर सदा,
नाम तासु सुखकरण हरन दुख जिन वदा।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत ४ मास और १५ दिन में समाप्त होता है। जिस किसी मास की पड़िमा से यह व्रत शुरू करे। पड़िमा का उपवास, दोयज का पारणा, तीज का उपवास, चौथ का पारणा, इस अनुक्रम से ४।। मास करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

७१—समवशरण व्रत

दोहा—श्वेत विमल चौदश तनी, प्रोषध बीस रु चार।
शील सहित मधिकन करें, समोशरण व्रत सार॥
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है। प्रत्येक चतुर्दशी का उपवास करना। चौबीस चतुर्दशी पूर्ण होने पर उद्यापन करे। 'ओं ह्रीं जगदापद्विनाशाय सकलगुणकरण्डाय श्रीसर्वज्ञाय अर्हत्परमेष्ठिने नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

७२—आकाशपंचमी व्रत

भादव सुदि पंचमि उपवास, करे भव्य पंचमि आकाश।
वरष पाँच मरयादा जास, शील सहित प्रोषध धर तास॥
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा होता है। प्रतिवर्ष भादव शुक्ल पंचमी को उपवास करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत सोरठ देश के तिलकपुर नगर में भद्रशाल सेठ की पुत्री त्रिशाला ने कि [illegible] के प्रसाद से वह चौथे स्वर्ग में मणिभद्र

का व्ययु हुआ था, और वहाँ से चय कर उज्जैन नगर मे प्रियसुंदर राजा के यहाँ सदानन्द नाम का पुत्र हुआ और न कतेक काल यथोचित सुख भोगकर जिन दीक्षा ग्रहण कर कमनाश कर मोक्ष को प्राप्त हुआ।

७३—अक्षयफलदशमी व्रत

श्रावण सुदि दशमाको सही, अक्षयदशमि व्रतको जन कही।
प्रोषध करे शील युत सार, तसु मर्याद वरष दश धार॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत दस वर्ष म पूर्ण होता है। प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ल दशमी के दिन उपवास करे। 'ॐ ह्रीं वृषभजिनाय नम' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

७४—निर्दोषसप्तमी व्रत

भादों सुदि सातें निर्दोष, करत करे प्रोषध शुभ कोष।
मन वच काय शील व्रत पाल, सात वरष उद्यापन काल॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत सात वर्ष मे पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को उपवास करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

यह व्रत पन्ना नगर के प्रजापाल राजा ने या अर्हद्दास सेठ ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्ग में देव हुए।

७५—चंदनषष्ठी व्रत

भादों वदि छठि दिन उपवास, चंदन षष्ठी व्रत धर तास।
मन वच काय शील व्रत पाल, ह मर्याद वरष छह जास॥

—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत छह वर्ष मे पूर्ण होता है। प्रति वर्ष भादों कृष्ण षष्ठी के दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

यह व्रत उज्जैनी नगरी में जिनदत्त सेठ के पुत्र दशरथचन्द्र तथा उसकी पत्नी चन्दना ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्ग सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया।

७६—सुगंधदशमी व्रत

व्रत सुगंध दशमी को जान, भादों सुदि दशमी दिन ठान।
प्रोषध करे वरष दश सही, शील सहित मरयादा गही॥
—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत दश वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला दशमी का उपवास करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रतपूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत मगध देश के वसंततिलक नगर में विजयसेन राजा की पुत्री दुर्गन्धा ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्गसुख भोगकर मनुष्य होकर मोक्ष प्राप्त किया।

७७—अनंतचतुर्दशी व्रत

भादों सुदि चौदशि दिन जान, व्रत अनंत चौदशि को ठान।
तीर्थंकर चौदहों अनंत, रचे पूज सो जीव महंत॥
प्रोषध करे शीलयुत सार, चौदह वरष लगे निरधार।
उद्यापन विधि कर यह तजे, सो जन स्वर्गादिक सुख भजे॥
—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत चौदह वर्ष में पूर्ण होता है। प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी के दिन उपवास करे। अनंतनाथ पूजन विधान रचे। 'ओं नमोऽर्हते भगवते अनंतानंतबलीय अनंतकेवलज्ञाने अनंतकेवल दर्शने अणुपूज्यनामधेयं अनंत अनंतागमकेवलि स्वाहा' इस मंत्रका त्रिकाल जाप्य करे। यदि इस मंत्र का न कर सके तो—'ओं ह्रीं अर्ह हं स अनंत केवलिने नमः' इस मंत्रका जाप्य देवे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

विशेष—यह व्रत भाद्रपद शुक्ल ११ से शुरू होता है इसलिये ११, १२, १३ का एकाशन, चौदश का उपवास और पूनाका एकाशन। इस तरह पाँच दिन किया जाता है।

यह व्रत अंगदेश के पास पद्मखण्ड नामक ग्राम में सोमशर्मा ब्राह्मण तथा उसकी स्त्री सामा ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्गादि सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया।

७८—श्रवणद्वादशी व्रत

भादों सुदि द्वादशि व्रत जान, श्रवण द्वादशी जो अभिराम।
बारह बरष लगे जो करे, शील सहित प्रोषध अनुसरे॥
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत बारह वर्ष में पूर्ण होता है। प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ला द्वादशी के दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत मालवा प्रान्त के पद्मावतीपुर नगर में नरब्रह्म राजा तथा उसकी शीलवती नाम की पुत्री और विजयरामा नाम की माता, इन तीनों ने किया था, जिसके प्रभाव से स्वर्गादि सुख भोगकर तीनों ने मोक्ष प्राप्त किया।

७६—श्वेतपचमी व्रत

आषाढ़ फाल्गुण कातिक पक्ष, सितपचमि तें व्रतको लेह।
पैंसठ प्रोषध करिये ताम, बरष पाच पाच परिमास॥
श्वेतपचमी को व्रत धार, त्रिविध शुद्ध धारो नरनार।
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष और पाँच महीने में समाप्त होता है। आषाढ कार्तिक या फाल्गुन इन तीनों मासों में से किसी एक मास में प्रारम्भ करे। प्रति मास शुक्ल पक्ष की पचमी के दिन उपवास करे। इस

प्रकार ६५ उपवास पूर्ण होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

८०—शील व्रत

चाल छन्द—अब सुनहु शीलव्रत सार, जैसो आगम निरधार।
वैशाख सुक्ल छठ लीजे, प्रोषध उपवास करीजे।
अभिनंदन जिनवरमोक्ष, कल्याणक दिन सब पोख।
शुभ शीलव्रत तसु नाम, कर पंच वरष सुखधाम।
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूर्ण होता है, जिसमें पाँच उपवास होता है। प्रति वर्ष वैशाख शुक्ल छठी के दिन (अभिनन्दन प्रभु का मोक्ष कल्याणक है) उपवास करे 'ओं ह्रां अभिनन्दनजिनाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

८१—सर्वार्थसिद्धि व्रत

गीतिका छंद—कार्तिक सुक्ल अष्टमि दिवसतैं अष्टवास जु कीजिये।
तसु आदि अंत एकंत दश दिन, शील सहित गणीजिये॥
जिनराज श्रुत गुरु पूज्य उत्सव, सहित नृत्यादिक करैं।
सर्वार्थसिद्धि जु नाम व्रत यह, मोक्ष सुख को अनुसरैं।
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत दश दिन में पूरा होता है जिसमें आठ उपवास और दो पारणायें होती हैं। यथा—सप्तमी को एकाशन व्रत की प्रतिज्ञा करे। अष्टमी से पूर्णमासी तक ८ उपवास करे और एकम को पारणा करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

८२—तीनचौबीसी व्रत

दोहा—व्रत चौबीसी तीन को, सुक्ल भाद्रपद तीज।
प्रोषध कीने शीलयुत, सुर शिव सुख ...

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद कृष्ण तृतीया के दिन किया जाता है। प्रति वर्ष इस दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

८३—जिनमुखावलोकन व्रत

दोहा—जिन मुख अवलोकन वरत, करिये भादों मास।
जिन मुख देखे प्रात उठ, अवर न देखे तास॥
चालछंद-प्रोषध इक मास इकंतर, कांजी जुत करिये निरंतर।
अथवा चन्द्रायण करहीं, लघु सकति एकांतर धरहीं।
सत्या धर वस्तु जु केरी, तातें नहिं अधिको लेई।
यह व्रत महा सुखदाई, चहुँ गति भव भ्रमण नशाई।
—कि० सिं० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक मास में पूर्ण किया जाता है। भाद्रपद कृष्ण पड़िमा से प्रारम्भ कृष्ण पड़िमा तक प्रतिदिन प्रातः मुहूर्त में उठकर (जब किसी का मुँह न देख) प्रथम ही श्री जिनेन्द्र भगवान् के दर्शन करे। इस प्रकार एक मास करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

इस व्रत में भोजन की विधियाँ पाँच हैं—

१–उपवास—तीस दिन उपवास करना।

२–कांजिक—पानी के साथ लिए (भात चावल) खाना।

३–चान्द्रायण—पहिले दिन १ ग्रास, दूसरे दिन २ ग्रास, तीसरे दिन ३ ग्रास, इस प्रकार १ १ ग्रास बढ़ाकर १५ ग्रास तक करे। फिर घटते १ १ ग्रास कम कर एक तक कम करे। इसके आदि और अन्त में उपवास करे।

४–एकाशन—दिन एक ही बार भोजन करे।

५–परिमितवस्तु—भोज्य सामग्रियों का प्रमाण कर उससे अधिक न खाना। इन पाँचों में से अपनी सामर्थ्यानुसार विधि करे।

६०—कर्मनिर्जरा व्रत

सवैया

दर्शन के निमित्त आषाढ़ सुदी चौदश,
श्रावण की चौदशि सुज्ञान काज कीजिये।
भादों सुदि चौदशि को प्रोषध चरित्र केरो,
तपयोग चौदशि असोज सुदि लीजिये।
ये ही चार प्रोषध वरष माहिं विधिसेती
धर्म निर्जरनी धरत सुन लीजिये।
धनश्रीय सेठ सुता करके सुरपद पायो
अजों भविभाव करनेकों चित्त दीजिये।
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत आषाढ़ शुक्ला चौदशि से प्रारम्भ होता है अर्थात् दर्शन विशुद्धि निमित्त आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी का उपवास करे। दर्शन विशुद्धि भावना भावे। 'ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धये नमः' इस मंत्र का जाप्य करे।

सम्यग्ज्ञान भावना के निमित्त श्रावण शुक्ल चतुर्दशी का उपवास करे। सम्यग्ज्ञान भावना का चिंतवन करे। 'ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः' इस मंत्र का जाप्य करे।

सम्यक्चारित्र के निमित्त भाद्रपद शुक्ला १४ को उपवास करे। सम्यक् चारित्र भावना का चिंतवन करे। 'ओं ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः'

८६—रुक्मणी व्रत

सवैया

लक्ष्मीमती के जीवने पूर्वभव माहि व्रत कीनो
यह श्वेत भाद्रपद आठैं प्रोषध आदायकें।
दोय याम धारणे और चार उपवास दिन
पूजा रचै दोय याम पारणो बनायकें।
कीनो आठ वरष लों शुद्ध भाव देहि त्याग
अच्युत सुरेश इन्द्राणी पद पायके।
भई रुक्मणी कृष्ण वासुदेव पटतिया,
रुक्मणी नाम व्रत जानो चित लायके।
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत आठ वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को एकाशन कर व्रत ग्रहण करे। अष्टमी का उपवास, नवमी का पारणा, दशमी का उपवास, ग्यारस का पारणा, द्वादशी का उपवास, तेरस का पारणा, चतुर्दशी का उपवास और पूर्णमासी को पारणा करे। इस प्रकार प्रतिवर्ष आठ वर्ष तक ४ उपवास ४ पारणा, और १ धारणा करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

यह व्रत लक्ष्मीमती ब्राह्मणी के जीव ने धारण किया था जिसके प्रभाव से स्वर्गादिक सुख भोगकर कुंडलपुर नगर में राजा भीष्म के यहां रुक्मिणी नाम की पुत्री हुई, जो सौराष्ट्र देश में द्वारावती नगरी के राजा कृष्णचन्द्र (वासुदेव) की पट्टरानी हुई, और अंत में अपने पुत्र प्रद्युम्नकुमार के साथ दीक्षा लेकर उत्तम गति को प्राप्त हुई।

६०—कर्मनिर्जरा व्रत

सवैया

दर्शन के निमित्त आषाढ़ सुदी चौदश,
श्रावण की चौदशि सुज्ञान काज कीजिये।
भादों सुदि चौदशि को प्रोषध चरित्र केरो,
तपयोग चौदशि असोज सुदि लीजिये।
ये ही चार प्रोषध वरष माहि विधिसेती
कर्म निर्जरनी करत सुन लीजिये।
धनश्रीय सेठ सुता करके सुरपद पायो
अनौ भविभाव करवेकों चित्त दीजिये।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत आषाढ शुक्ला चौदश से प्रारंभ होता है अर्थात् दर्शन विशुद्धि निमित्त आषाढ शुक्ला चतुर्दशी का उपवास करे। दर्शन विशुद्धि भावना भावे। 'ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धये नमः' इस मंत्र का जाप्य करे।

सम्यग्ज्ञान भावना के निमित्त श्रावण शुक्ल चतुर्दशी का उपवास करे। सम्यग्ज्ञान भावना का चिंतवन करे। 'ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः' इस मंत्र का जाप्य करे।

सम्यक्चारित्र के निमित्त भादों शुक्ला १४ को उपवास करे। सम्यक् चारित्र भावना का चिंतवन करे। ओं ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः'

९४—कवलचंद्रायण व्रत

दोहा—व्रत कवल चंद्रायणा, बारह मास मझार।
एक महीना में करे, एक बार चित धार॥

चौपाई

करे अमावस को उपवास, पाछे तें इक बढ़ता ग्रास।
पड़िमा दिवस ग्रास इक लीन, दोयज दोय तीज दिन तीन।
चौथ चार पण पाचैं सही, छट्टि छह सातैं सत लही।
आठैं आठ नमी नौ टेक, दशमी दश ग्यारसि दश एक।
बारह बारसि तेरस जान, तेरा चौदा चौदशि ठान।
पून्यो दिवस करे उपवास, शुक्ल पक्ष की यह विधि साच।
कृष्ण पक्ष की पड़िमा जास, लेय अहार सु चौदह ग्रास।
दोयज तेरह बारह तीज, चौथ ग्यार पंचमि दश लीज।
षष्ठी नव सातैं वसु जान, आठैं सात नम छह मान।
दशमी पांच ग्यारसी चार, बारसि तीन तेरसि दुय धार।
चौदश दिवस ग्रास इक जान, मावस दिन प्रोषध को ठान।
एक मास को व्रत है येह, ग्रास लीजिये तिम सुन येह।
ग्रास लेन को ऐसा करे, मुख में दंत न करतें पड़े।
बीच पियो पानी न गहाय, अंतराय गल अटकें थाय।
जिन पूजा विधियुत दिन तीस, करे वंदना गुरु नमि शीश।
शास्त्र बखान सुनो मन लाय धरम कथा में दिवस गमाय।
पाले शील वचन मन काय, इहि विध महापुण्य उपजाय।
यातें सुरपद होवे ठीक, अनुक्रम शिव पावे तहाँ बीच।

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत एक महीने में समाप्त होता है। यथा—

जिस किसी मास की अमावस्या का उपवास कर शुरू करे फिर एकम को एक ग्रास, दोयज को २ ग्रास, इस प्रकार प्रतिदिन १ १ ग्रास भोजन बढ़ाता हुआ चतुर्दशी को १४ ग्रास लेवे। पूर्णमासी का उपवास करे। फिर कृष्ण पक्ष की पड़िमा को १४ ग्रास, दोयज को तेरह ग्रास, इस प्रकार [illegible] एक एक ग्रास कमाता हुआ चतुर्दशी को एक ग्रास भोजन लेवे। और अमावस्या का उपवास करे। इस प्रकार एक मास में व्रत पूर्ण करे। [illegible] ग्रास लेते समय कदाचित् हाथ या मुंह से [illegible] गिर पड़े तो अन्तराय माने। व्रत समाप्त होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप करे।

यह व्रत श्री आदिनाथ स्वामी के पुत्र बाहुबलि स्वामी ने [illegible] जिसके प्रभाव से केवलज्ञान प्राप्तकर मोक्ष प्राप्त किया। तथा श्री [illegible] स्वामी की पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी ने किया था जिसके प्रभाव से [illegible] छेदकर स्वर्ग में देव हुए, और फिर मनुष्य होकर केवलज्ञान [illegible] मोक्ष प्राप्त किया।

९५—बारह बिजौरा व्रत

बारबिजोरा व्रत हर मास, दोऊ द्वादशि कर [illegible]

—[illegible]

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है [illegible] २४ द्वादशियों के २४ उपवास करे। नमस्कार [illegible] करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

९६—ऐसोनव व्रत

एसो नव व्रत दिन चार सं, [illegible]
पोषत पण प्रोषध जवा असी, [illegible]

भावार्थ—यह व्रत चार सौ पचासी दिन में पूर्ण होता है, जिसमें ४०५ उपवास और अस्सी पारणा होते हैं। यथा—

एक उपवास, एक पारणा, दो उपवास, एक पारणा, इस प्रकार ९ उपवास तक चढ़े फिर एक एक उपवास कम करता हुआ १ तक आवे। इस प्रकार ५ बार चढ़ावे और उतारे। एक बार में ८१ उपवास और १६ पारणा होते हैं। कुल पाँच आवृत्ति में ४०५ उपवास और ८० पारणा में व्रत पूर्ण होता है। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

९७—ऐसोदश व्रत

ऐसोदश व्रत छहसौ पचास, सौ जेवा साढ़े पाच सौ वास।
दशलौं चढ़े अनुक्रम सोय, जो लौं व्रत पूरण नहिं होय॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ६५० दिन में पूर्ण होता है, जिसमें ५५० उपवास और १०० पारणायें होती हैं। यथा—

किसी भी मास से आरम्भ करे। प्रथम दिन एक उपवास एक पारणा, फिर दो उपवास, एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, इस प्रकार एक एक उपवास बढ़ाकर १० उपवास तक बढ़ावे, फिर ९ उपवास एक पारणा, ८ उपवास एक पारणा, इस प्रकार १—१ घटाकर एक तक आवे। इस प्रकार दश आवृत्ति में ५५० उपवास और १०० पारणा होकर व्रत पूर्ण हो जाता है। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

९८—वजिक व्रत

वजिक व्रत जल मात्र अहार, चौंसठ दिन पाल निरधार।
यथाशक्ति कछु और जतन, तितने मास करत परयत।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष के भीतर ६४ दिन में समाप्त होता है। किसी भी मास के प्रथम दिन से यह व्रत आरम्भ करे। चौंसठ दिन तक सिर्फ कांजिक आहार अर्थात् पानी और भात लेवे। यदि शक्ति हो तो दूना तिगुना भी बढ़ा सकते है। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

९९—श्रुतिपंचमी व्रत

श्रुतिपंचमि पढ शास्त्र विशाल, जेठ सुदी पंचमि उपवास।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत जेठ शुक्ला पंचमी के दिन किया जाता है। उस दिन उपवास करे। 'ओं ह्रीं द्वादशांगश्रुतज्ञानाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। यह व्रत ५ वर्ष करे। पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१००—कृष्णपंचमी व्रत

कृष्ण पंचमी व्रत विधि तास, जेठ कृष्ण पंचमि उपवास।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत जेठ कृष्ण पंचमी के दिन किया जाता है। इस दिन उपवास करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप करे। ५ वर्ष बाद उद्यापन करे।

१०१—निःशल्य अष्टमी व्रत

निःशल्य अष्टमी भादों सुदी, प्रोषध कर सयनासन जुदी।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को होता है। इस दिन उपवास करे। प्रत्येक प्रहर में अभिषेकपूर्वक पूजन करे। सोलह वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का जाप्य करे।

यह व्रत दक्षिण देश के सुभद्र नगर में सेठ नंद की पुत्री लक्ष्मीमती ने किया था जिसके प्रभाव से स्त्रीलिंग छेद कर मोक्ष प्राप्त किया।

१०२—लक्षणपंक्ति व्रत

लक्षणपंक्ति व्रत चारसो आठ, कर एकान्तर प्रोषध ठाट।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत ४०८ दिन में पूर्ण होता है, जिसमें २०४ उपवास और २०४ पारणाएँ होती हैं। किसी भी मास से इस व्रत को आरम्भ करे। एक उपवास, एक पारणा इस क्रम से करे। त्रिकाल नमस्कार मन्त्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०३—दुग्धरसी व्रत

दुधरसि व्रत भादोंसुदि धरे, बारसि को पय भोजन करे।

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत भादों शुक्ला द्वादशी के दिन किया जाता है। इस दिन सिर्फ दूध का आहार ले। सारा समय धर्मध्यान में व्यतीत करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। १२ वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०४—धनदकलश व्रत

श्लोक—भद्रे भाद्रपदे मासे प्रतिपदादिकृत सुधा।
कलशोद्धारेण पूतं चवन स्वकुचर्चितम्॥
मासमेकं प्रकुर्वंते शीलमेकाशन तपम्।
विधिना वत्सर पंच उद्यापन विधीयते॥

—कथाकोष

भावार्थ—यह व्रत भाद्रपद कृष्ण १ से शुरू होता है और भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा को समाप्त होता है। प्रति दिन चन्दनादि मंगलद्रव्ययुक्त कलशों द्वारा श्रीमज्जिनेन्द्रदेव का अभिषेक कर पूजन करे। नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। शील, संयम, तप, दान आदि कार्यों में समय व्यतीत करे। पाँच वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०५—कलीचतुर्दशी व्रत

आषाढ़ी सित चौदश होय, तब तें व्रत यह लीजे सोय।
दोहा—चार मास की चौदशा, शुक्ल पक्ष जब होय।
व्रत कीजे शुभ भाव सों, मुक्ति वधू कों लोय॥

—कथाकोष

भावार्थ—यह व्रत आषाढ़ शुक्ल १४ से प्रारम्भ होता है, एवं आषाढ़ श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, इन चार मास की शुक्ला चतुर्दशियों को उपवास करे। नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। ४ वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०६—मोक्षसप्तमी व्रत

श्रावण सुदि सातें दिन आन, प्रोषध शील सहित भवि ठान।
सात वरष मरयादा धार, पीछे उद्यापन कर सार॥

—कथाकोष

भावार्थ—सात वर्ष तक प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन उपवास करे। 'ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०७—रोटतीज व्रत

भादों सुदी तीज दिन जान, सब आरम्भ तजे बुधिवान।
तीन वरष प्रोषध चित धार, पीछे उद्यापन कर सार।

—कथाकोष

भावार्थ—यह व्रत तीन वर्ष समाप्त होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला तीज के दिन उपवास करे और अभिषेकपूर्वक त्रैलोक्य जिनालय विधान करे। ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। तीन वर्ष बाद उद्यापन करे।

यह व्रत हस्तिनागपुर के राजा विशाखदत्त की रानी विजयसुन्दरी ने किया था जिसके प्रभाव से स्त्रीलिंग छेदकर देव होकर फिर मनुष्य पर्याय प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया।

१०८—शीलसप्तमी व्रत

भादों सुदि सातैं दिन जान, प्रोषध धरे हरष उर ठान।
सात वरष मरयादा सही, पीछे उद्यापन विधि कही।

—कथाकोष

भावार्थ—सात वर्ष तक प्रतिवर्ष भादों शुक्ल सप्तमी को उपवास करे। त्रिकाल नमस्कार मंत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१०९—वीरशासनजयन्ती व्रत

वासस्स पढममासे पढमे पक्खम्मि सावणे बहुले।
पडिवदपुव्वदिवसे तित्थुप्पत्ति अभिजम्हि॥

—धवला प्रथमखण्ड

भावार्थ—श्रावण कृष्ण पड़िमा के दिन प्रथम प्रहर में अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी की दिव्य ध्वनि प्रकट हुई थी और उसके द्वारा अनन्तानन्त संसारी जीवों का कल्याण हुआ था, अतएव इस पवित्र दिन उपवास करे। श्रीमहावीर स्वामी का अभिषेक पूजन करे। 'ओं ह्रीं श्रीमहावीराय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

११०—श्रीवीरजयन्ती व्रत

चैत्र शुक्ल तेरस दिन जान, उपजे वीरनाथ भगवान।
सुरपति आय मेरु पधराय, कियो अभिषेक महासुखदाय॥

भावार्थ—चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन कुंदनपुर नगर में सिद्धार्थ राजा के घर त्रिशला देवी की कूख से श्री महावीर स्वामी ने जन्म लिया। इसी पवित्र दिन सौधर्म इन्द्र ने आकर भगवान् को मेरु पर्वत पर ले जाकर

अभिषेक किया था। इस दिन उपवास करे। धर्मप्रभावना के साथ करे। धर्मध्यान में सारा समय व्यतीत करे।

१११—श्रीआदिनाथजयंती व्रत

चैत्र वदी नवमी दिन जान, उपजे आदिनाथ भगवान।

भावार्थ—चैत्र वदी नवमी के पवित्र दिन में चौदहवें कुलकर नाभि राजा तथा मरुदेवी रानी की पवित्र कुक्ष से धर्मतीर्थ के प्रवर्तक श्री वृषभ नाथ भगवान् ने अवतार लिया, इस दिन महाअभिषेकपूर्वक पूजन विधान व उपवास करे। शास्त्र-सभा धर्मोपदेश द्वारा धर्म की खूब प्रभावना करे। 'ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

११२—श्रीआदिनाथशासनजयंती व्रत

फागुन वदि एकादशि जान, वाणी खिरी आदि भगवान।

भावार्थ—फाल्गुन कृष्णा ११ के दिन श्रीआदिनाथ महात्मा ने घातिया कर्मों का नाश कर केवलज्ञान प्राप्त किया और संसार के प्राणियों के हितार्थ अपनी दिव्य ध्वनि द्वारा इस दिन प्रथम उपदेश दिया, इसलिए इस पवित्र दिन धर्मप्रभावना करे और उपवास करे। ॐ ह्रीं श्री वृषभाय' नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

११३—श्रीआदिनाथनिर्वाणोत्सव व्रत

माघ वदी चौदशि दिन कहो, आदिनाथ प्रभु शिवपुर लहो।

भावार्थ—माघ वदी १४ के पवित्र दिन श्रीआदिनाथ भगवान ने मोक्ष प्राप्त किया था। इस दिन उपवास करे। 'ॐ ह्रीं श्री वृषभाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

११४—नंदसप्तमी व्रत

भादों सुदि सप्तमि दिन जान, प्रोषध करे सभी

भावार्थ—भादों सुदी सप्तमी के दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत वर्ष पूरे होने पर उद्यापन करे।

११५—काजीबारस व्रत

भादों सुदि द्वादशि के दिना, प्रोषध करे श्री जिनमना।

भावार्थ—भादों सुदी १२ के दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। बारह वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

११६—ऋषिपंचमी व्रत

मास अषाढ़ शुक्ल की सोय, जबहिं पंचमी को दिन होय।
व्रतके दिन छाड़ो आरंभ, जिन घर भजो तजो सब दंभ॥
पाँच वर्ष अरु मासहिं पंच, ये सब व्रत पैंसठ सुन सच।
जब यह व्रत पूरो है लोय, यथाशक्ति उद्यापन होय॥

भावार्थ—यह व्रत ५ वर्ष और ५ महीने में समाप्त होता है। प्रति मास शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन उपवास करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे। आषाढ़ शुक्ला पंचमी से यह व्रत शुरू करे। ६५ उपवास पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत हस्तिनापुर में धनपति सेठ की पुत्री कमलश्री ने किया था जिसके प्रभाव से उसका बिछुड़ा हुआ पुत्र पुनः मिल गया था और अन्त में स्वर्ग सुख प्राप्त हुए थे।

११७—त्रिलोकतीज व्रत

भादों सुदि तृतिया दिन जान, त्रिलोक तीज व्रत को ठान।
प्रोषध तीन वर्ष मध करे, पाछे उद्यापन विधि धरे॥

—कथाकोष

भावार्थ—यह व्रत तीन वर्ष में पूर्ण होता है, प्रति वर्ष भाद्रपद शुक्ला ३ के दिन उपवास करे। ओं ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अकृत्रिमजिन

चयालयभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे, व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

११८—आचारवर्धन (अचाम्लवर्धन व्रत)

इक से दश लग प्रोषध करे, बिच बिच इक इक पारणा धरे।
फिर दश से इक लग व्रत धार, इक इक बीच पारणा सार।
कुल इक शत उपवास कराय, अरु उन्नीस पारणा थाय।
—सुदर्शित जिणो

भावार्थ—यह व्रत ११६ दिन में पूरा होता है, जिसमें १०० उपवास और उन्नीस पारणा होती हैं। किसी भी मास से व्रत प्रारंभ करे। एक उपवास, एक पारणा, दो उपवास, एक पारणा, इस क्रम से १० उपवास तक करे, फिर एक एक घटाकर एक उपवास तक आवे। इस प्रकार व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

११९—सुदर्शन व्रत

है सम्यक्त्व तीन परकार, क्षय उपसम क्षयोपसम धार।
शंकादिक वसु दोष महान, तीनों के मिल चोबिस जान॥
तिनके प्रोषध धर चौबिस, करे पारणा तहा चोबीस।
सब दिन अडतालीस सुजान, करे भक्ति सूं अघ महान॥
—सुदर्शित जिणा

भावार्थ—यह व्रत ४८ दिन में पूर्ण होता है, जिसमें २४ उपवास और चौबीस पारणायें होती है। उपशम, क्षय और क्षयोपशम एवं सम्यक्त्व तीन प्रकार है, इन तीनको शंकादि ८ दोषों से गुणा करने पर २४ भेद होते है। इनके निमित्त एक पारणा, एक उपवास, इस क्रम से २४ उपवास और २४ पारणा करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

१२०—रक्षाबंधन व्रत

चौपाई

श्रावण सुदि पूनों दिन कह्यो, श्रवण नक्षत्र सु तादिन लह्यो।
सुर अकम्पनादि शत सात, विष्णुकुमार हर्यो उत्पात॥
अति पवित्र तादिन को मान, प्रोषध करे हरष हिय ठान।
ताकी याद शासन हेत, सूत बांधिये हरष समेत॥

भावार्थ—श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र में अकम्पनादि सात सौ मुनियों के ऊपर बलि राजा द्वारा किये गये महान् उपद्रव को श्री विष्णुकुमार मुनि ने विक्रिया ऋद्धि के बल द्वारा दूर किया था, इसी हेतु इस पावन दिन को उपवास करें। यथाशक्ति सूत पीला कर हाथ में बाँधे। विष्णुकुमार पूजन करे। ओं ह्रीं विष्णुकुमारमुनिभ्यो नमः' इस मंत्र का जाप्य करे।

१२१—क्षमावणी व्रत

असोज कृष्ण पंचम दिन जान, क्षमा उभय विधि से व्रत ठान।
पूजन करे महा सुखदाय, प्रोषध कर यश फल नशाय।

भावार्थ—असोज कृष्ण पंचम के दिन प्रातःकाल उठ श्री जिनेन्द्र भगवान् का अभिषेकपूर्वक पूजन करे। फिर शास्त्र प्रवचन कर अपनी कषायों को शांत कर सहधर्मी बंधुओं से परस्पर में क्षमा-क्षमा कहकर वर्ष के समस्त अपराधों को क्षमा करे और दूसरों से करावे। बाद दुग्ध फल भेंट करे। इस दिन उपवास करे। सारा दिन रात्रि धर्मध्यान में व्यतीत करे।

१२२—दीपमालिका व्रत

श्लोक—

चतुर्थकालेऽर्धचतुर्थमासैर्विहीनताविश्चतुरब्दशेषके।
स कार्तिके स्वातिषु कृष्णभूत प्रभातसंध्यासमये स्वभावत॥

उज्वलत्प्रदीपालिकया प्रवृद्धया, सुरासुरैः दीपितया प्रदीप्तया।
तदास्मपावानगरी समन्ततः प्रदीपिताकाशतला प्रकाशते॥
ततस्तु लोकः प्रतिवर्षमादरात् प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक्॥
—हरिवंशपुराण

भावार्थ—चौथे काल में जब तीन वर्ष साढ़े आठ मास बाकी रहे तब कार्तिक मास की अमावस्या के प्रभातकाल स्वाति नक्षत्र में श्री महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ, देवों ने आकर यहाँ निर्वाणकल्याणक का उत्सव मनाया, और पावापुरी में दीपदान किया। इस पवित्र दिन की स्मृति में दीपावली भारत में प्रसिद्ध हुई है। इस दिन उपवास करे। श्री महावीर पूजन करे और निर्वाण लाडू चढ़ावे, महान धर्मप्रभावना करे। सायंकाल घर घर में दीप प्रज्वलित करे। ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिने नमः। इस मंत्र का जाप्य करे। इसी दिन से वीर निर्वाण संवत् चालू हुआ है।

१२३—चौंतीस अतिशय व्रत

दोहा—अतिशय सब चौतीस व्रत, तासु तनो कछु भेद।
कथा माहिं सुनिया जिसो, किये होय दुखछेद॥

अडिल्ल—दश दशमी जनमत के अतिशय दश तनी।
फिर दश केवलज्ञान ऊपजे दश भनी।
चौदशि चौदा अतिशय देवाकृत कही,
चार चतुष्टय चौथ चार ये विध नहीं।
षोडश आठें प्रातिहार्य वसुकी भनी
ज्ञान पाँच की पाँचें पाँच कही तनी।
अरु षष्ठी छह लहा सब प्रोषध सुनो,
पाँच अधिक गन साठ किये फल बहु गुनो।
—कि॰ सि॰ क्रि

भावार्थ—यह व्रत २ वर्ष ८ महीना और १५ दिन में समाप्त होता है, जिसमें ६५ उपवास होते हैं। यथा—

१—जन्म के दश अतिशयों के दश दशमियों के १० उपवास करे।

२—केवलज्ञान के दश अतिशयों के दश दशमियों के १० उपवास करे।

३—देवकृत चौदह अतिशयों के चौदह चौदसियों के १४ उपवास करे।

४—चार अनन्तचतुष्टय के चार चौथों के चार उपवास करे।

५—आठ प्रातिहार्यों के १६ अष्टमियों के १६ उपवास करे।

६—पाँच ज्ञान के पंचमियों के पाँच उपवास करे।

७—छह पड़वा के छह उपवास करे।

इस प्रकार व्रत पूर्ण कर उद्यापन करे। ॐ ह्रीं नमः 'आरहन्ताय' मन्त्र का जाप्य करे।

१२४—[illegible]अष्टमी व्रत

दोहा

अष्टमिगण त्रिंशत चायच, द्वय सौ अट्ठासी प्रोषध मस।
समकित सहित धरे व्रत जास, करे पारने चौंसठ तास॥

—वर्धमानपुराण

भावार्थ—यह व्रत २५२ दिन में पूर्ण होता है, जिसमें दो सौ अट्ठासी उपवास और चौंसठ पारणा होते हैं। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे और नमस्कार मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे।

१२५—तीर्थंकरबेला व्रत

दोहा—ऋषभ आदि तीर्थेश के, वेला बीस रु चार।
आठैं चौदशि कीजिए, अतर सूर न धार॥

चौपाई

सातैं आठैं बेलो ठान, नौमी दिवस पारणों जान।
तेरस चौदश द्वय उपवास, मावस पून्यो भोजन तास।

वष हजार एक प्रति एक, बेला चौंसठ धर सुविवेक।
करे आयु लघु जानो जबै, शोल सहित भनि धारो तबै।
लगते कारण शक्ति को नाहिं, आठैं चोदश कर शक नाहिं।
इनमें अंतर पाड़े नहीं, सो उत्कृष्ट लेह सुख मही।

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत १६ महीने में समाप्त होता है जिसमें ६४ बेला और ६४ पारणा होते हैं। प्रति माह प्रत्येक सप्तमी अष्टमी तथा त्रयोदशी, चतुर्दशी के बेला, नवमी और पूर्णिमा के पारणा करे। यदि शक्ति विशेष हो तो एक बेला एक पारणा इस क्रम से एक हजार वर्ष तक करे।

व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे और नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

विदेह क्षेत्र में पुष्कलावती देश में वीतशोकापुरी नाम की नगरी है, उसमें महापद्म नाम के चक्रवर्ति थे। उनकी वनमाला नाम की एक रानी थी, भवदत्त ब्राह्मण का जीव जो तीसरे स्वर्ग में देव हुआ था, वहाँ से चयकर इस रानी के गर्भ में आया, और शिवकुमार नाम का पुत्र हुआ, इसने यह व्रत किया जिसके प्रभाव से छठवें स्वर्ग में इन्द्र हुआ, और वहाँ से आकर मगध देश की राजगृही नगरी में अर्हद्दास सेठ की जिनमती सेठानी के गर्भ से जम्बूस्वामी उत्पन्न हुए और लौकिक सुखों को तिलाञ्जलि देकर गाढ़ा कर्म नाश कर विपुलाचल पर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

१२७—मौन व्रत

चौपाई

मौन व्रत भवि विधि सुन लेय, नित्य नैमित्तिक द्वय विधि होय।
नित्य मौन जीवन पर्यन्त, सप्तकाय में ढील न रंच॥
भोजन वमन और स्नान, मैथुन अरु मल मोचन जान।
जिन पूजन सामायिक देत, मौन सप्तविध नित्य भजेत॥

अब सुन नैमित्तिक विधि जान, एक वर्ष में पूरण मान।
पौष शुक्ल की एकादशी, षोडश प्रहर वास कर सती॥
एकादशी सु द्वादश मास, बीस चार करिये उपवास।
एक वर्ष पूरण जब होय, उद्यापन विधिवत कर सोय॥
उद्यापन की शक्ति न होय, तो दूनो व्रत करिये सोय।
मौन व्रत कथा के माहिं, लखिये विधी विशेष तहाहिं॥

—मौनव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत दो प्रकार से किया जाता है। यथा—

१—नित्यमौन—भोजन, वमन, स्नान, मैथुन, मलक्षेपण, सामायिक, और जिनपूजन, इन सात कार्यों में जीवन पर्यन्त मौन रखना।

२—नैमित्तिकमौन—यह व्रत एक वर्ष में पूरा होता है। पौष शुक्ला एकादशी से प्रारंभ होता है। प्रत्येक मास की प्रत्येक एकादशियों के दिन १६ प्रहर का उपवास करे। २४ उपवास पूर्ण होनेपर उद्यापन करे। उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

यह व्रत कौशल देश के कूट नामक ग्राम में कुणबी की कन्या तुङ्गभद्रा ने किया था, जिसके प्रभाव से वह कौशल देश में यमुना नदी के किनारे कौशाम्बी नगरी में हरिवाहन राजा के यहाँ सुकोशल नाम का पुत्र हुआ और संसार से विरक्त होकर जिनदीक्षा ग्रहण की, ऐसा पितापुत्र विहार करते हुये किसी वन में आ पहुँचे, और वहाँ भी उनके भट्टारी मतिसागर का जीव जो सिंह हुआ था वह आ पहुँचा सो पूर्व वैर के कारण उन दोनों योगीश्वरों के शरीर को विदारणा शुरू किया। वे ऐसा मुनिराज ध्यान में तल्लीन होकर कर्मों का नाश कर अन्त कृतकेवली होकर मोक्ष गये।

१२८—विमानपंक्ति व्रत

दोहा—व्रत विमान पकति तनो, विधि सुनियें भवि सार।
मन वच क्रम करिये सदा, सुर सुरेश पद धार॥
अडिल्ल—सौधर्म रु ईशान सुरग जुग ते गही।
पच पचोत्तर लगे पटल त्रेसट कही॥
तिनकी चहुं दिशि माहिं पंकती की जहाँ।
जन भवन ह अनक अकृत्तम ही तहाँ॥
दोहा—तिनके नाम विधान को, वरतय है लघु सार।
जहाँ जहाँ जते पटल, सो सुनिये विस्तार॥

चौपाई

इय सुरगन इकतीस विख्यात, सनत्कुमार माहेन्द्रहिं सात।
चार ब्रह्म ब्रह्मोत्तर सही, लातव कापिष्टहिं द्वय सही॥
एक शुक्र महाशुक्रहिं धार, एक सतारहिं अरु सहस्रार।
आनत प्राणत आरण तीन, अच्युत लग छह पटल प्रधान॥
नव नव ग्रेवेयक जानिये, नव नवोत्तर इक मानिये।
पंच पचोत्तर पटल जु एक, ये त्रेसठ मुनि धर सु विवेक॥
अवै वरत प्रोषध विधि जिसी, कथा प्रमाण कहूं सुन तिसी।
एक पटल प्रतिप्रोषध चार, करे इकांतर चित अर धार॥
प्रोषध लगते तेलो एक, कर भविजन मन धर सु विवेक।
ता पीछे प्रोषध चहुं जान, तिनके पीछे बेलो ठान॥
चहुं प्रोषध चहुं बेलो खास, छह चहुं अनसन पुन छह वास।
इहि विधि त्रेसट बार विधान, चहुं प्रोषध छह अनुक्रम ठान॥
त्रेसट बार जु पूरण थाय, इक लगतो तेलो करवाय।
बीच इकांतर असन जु कर, एक भुक्ति अंतर नहिं पर॥
इनके बेला अरु उपवास, अनशन दिवस रु तेलो जास।
अरु सब दिन इकठे कर जोड़, सो सुन लो मधि चित धर कोड॥

छह सौ दिवस सतानवे जान, वरष दिवस मरयाद बखान।
वास इकातर द्वयसे जान, अरु सब वास जोड़ इम ठान॥
वास इक्यासी पर सय तीन, असन तीन सौ सोला कीन।
यह व्रत तान भवन में सार, विधियुत किये देव पद धार॥
अनुक्रम शिर जेहैं तहकीक, अब बारहु भवि चित धर ठीक।

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत ६९७ दिन में पूरा होता है जिसमें १ बेला, ६३ तेला और २५२ उपवास आते हैं। जिससे कुल उपवास ३८१ होते हैं। तथा पारणा १—६३—२५२ मिलकर ३१६ होते हैं। स्वर्गों के पटल ६३ तथा उनके चारों तरफ जिनेन्द्र अनेक चैत्यालय हैं। उनकी भावना भानी चाहिये। आरम्भ में पहिले १ बेला कर, फिर एक पारणा कर व्रत आरंभ करे।

१—प्रथम स्वर्ग के प्रथम पटल का तेला १, पारणा १, फिर इसके चारों दिशाओं में जिनालय अनेक चैत्यालय उन सम्बन्धी चार दिशा के उपवास ४, पारणा ४। इस प्रकार एक पटल सम्बन्धी तेला १, उपवास ४, पारणा ५ हुये। इस क्रम से ६३ पटल के तेला ६३, उपवास २५२, पारणा ३१५ होते हैं। इसमें आरम्भ का बेला १, पारणा १, जोड़ देने से उपवास कुल ३८१, पारणा ३१६ हुए। इस प्रकार व्रत पूर्ण करे। 'ओं ह्रीं ऊर्ध्वलोकसम्बन्धिअसंख्यातजिनचैत्यालयेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

१२९—बारह तप व्रत

चौपाई

बारह व्रततनी विधि जिसी, बारह भाँति बखानों तिसी।
प्रोषध कीजे बारह जात, अरु बारह करिये एकान्त।
बारह[1] कांजी तन्दुल लेय, निगोरसे गोरस[2] तज देय

अल्प अहार असन इक भाग, लेंहिं करहिं द्वयपट भाग।
इकठाना भोजन जल सवे, ले पुरुषाय वार इक तवे।
मूंग मोठ चोला अरु चना, लेय इकोन बीन ततछिना।
पानी लूण थका जो खाय, नयडनाम ताको कहवाय।
घृतहिं छाडिये सब परकार, सो जाणो लूखो आहार।
त्रिविध पात्र साधर्मी जान, ताहि अहार देय विधि जान।
ले मुखशोध निरन्तर थाय, पाछें व्रत धर असन सहाय।
अंतराय हुये उपवास, करे नाम मुख शोध्यो तास।
घर रे लोक बलाय रहेह, बिन याचे भोजन जल देह।
धरे थाल माहीं जो खाय, फिर याचे न अयाचो खाय।
लूण सबथा त्यागे यदा, भाँति अलूणा कीइ तदा।
जिनपूजा सुन शास्त्र बखान, एकमेह को कर परमाण।
जाय उडद तास के वार, भोजन लेहु कहै नर नार।
ठाम असन जल को जो गहे, वरत मान निरमान सु कहे।
बारह बरत भाँति वश होय, अनुक्रम इकतपन भविलोय।
समकित सहित सु व्रत को धरे, त्रिविध शुद्ध शीलहिं आचरे।
करह पूरण वर्ष मझार, सो सुरपद पावे नर नार।

—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष के भीतर १४४ दिन में पूर्ण होता है। शुक्लपक्ष की जिस किसी तिथि से शुरू किया जाता है। प्रथम बारह उपवास करे। २ बारह एकाशन करे। ३ बारह कांजिक भोजन करे। ४ बारह निगोरसी (बिना गोरस) भोजन करे। ५ बारह अल्प आहार करे। ६ बारह एक लगाना करे। ७ बारह मूंग के आहार करे। ८ फिर १२ मोठ के आहार करे। ९ बारह चोला के आहार करे। १० बारह चना का आहार करे। ११ बारह मात्र पानी का आहार करे। १२ बारह बिना घृत के आहार करे। अन्तराय टालकर भोजन करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१३०—नंदीश्वरपंक्ति व्रत

दोहा—

नंदीश्वर पंकति विरत, सुनहु अधिक चित लाय।
किये पुण्य अति ऊपजे, भव आताप मिटाय॥

चौपाई

प्रथमहि चार इकांतर बीस, कर पीछे बेला इकतीस।
ता पीछे शुभ इकान्तर करे, द्वादश प्रोषध विधियुत धरे।
पुन बेलो करिये हित जान, बारा वास इकान्तर ठान।
पीछे इक बेलो कीजिये, इक अंतर दश द्वय लीजिये।
फिर इक बेलो कर उर प्रेम, वसु उपवास इकांतर नेम।
सब उपवास आठ चालीश विच बेलो चहु गहे गरीश।
दधिमुख रति करके उपवास, अंजनगिरि चहुँ बेला तास।
दिवस एकसो आठ मझार, वरत यही पूरणता धार।
छप्पन प्रोषध भवि मन आन, करे पारणा बावन जान।
लगते करे न अंतर पड़े, अघ अनेक भव संचित हरे।

—कि० सि० कि०

इस व्रत १०८ दिन में पूर्ण होता है, जिसमें ५६ उपवास और ५२ पारणा होते हैं। यथा—

पूर्व दिशि—अञ्जनगिरि का बेला १, ताके उपवास २, पारणा १, दधिमुख के उपवास ४, पारणा ४। रतिकर के उपवास ८, पारणा ८। इस प्रकार पूर्व दिशि के उपवास १४, पारणा १३। इसी प्रकार दक्षिण के, पश्चिम के और उत्तर के करे। नन्दीश्वर की भावना भावे।

'ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१३१—परमेष्ठिगुण व्रत

दोहा—कहूं पच परमेष्ठि के, जे जे गुण सगराश।
छयालीस वसु तास छह, अरु पचिस अठवीस॥

चौपाई

प्रभु छयालिस गुण श्रीअरहंत, दश अतिशय जनमत है संत।
केवलज्ञान भये दश थाय, सुरु की बीस दशों करवाय।
प्रातिहार्य की आठें आठ, चौथ चतुष्टय चहु ये पाठ।
सुरकृत अतिशय चौदह जास, चौदा चादशि गणिये तास।
अब सुनिये वसु सिद्धन भेद, करिये वास आठ मुनि लेद।
समकित दूजो णाण वखान, दसण चौथो नीरज ज्ञान।
सुहमचछटो अवगाहन सही, अगुरु लघु सतम गुण सही।
अव्याबाध आठमो धरे, इन आठों की आठें करे।
आचारज गुण जेह छतीस, तिनकी विधि सुनिये निशदीस।
बारसिवारा तप दश दोय, षड्वावश्यक री छट छह होय।
पाचें पाच पाच आचार, दशलक्षण दश दशमी धार।
तीन तीन तिहु गुप्ति जु तना, प्रोषध यह छहतीसहि भनो।
गुण पचिस उवज्भाय सुजान, चावह पूरव कह्यो वखान।
ग्यारा अग प्रकाशें धीर, ये पचास गुण लखिये वीर।
चोदा चौदशि के उपवास, ग्यारा ग्यारसि प्रोषध तास।
उपाध्याय के गुण हैं जिते, वास पचीस वखाने तिते।
साधु अट्ठाइस गुण जानिये, तिहिं प्रोषध इहि विधि ठानिये।
पच महाव्रत समितिसु पच, इंद्रिय विजय पाँचगण सच।
इनकी पद्रह पाचें करे, आवश्यक की छह छुट करे।
भूमिशयन मजनको त्याग, वसन त्यजन कचलोंच विराग।
भोजन करे यक ही वार, ठाढो होय सो लेय अहार।
करे नहीं दातुन की बात, इन साता की पड़िमा सात।

सब मिल प्रोषध ये अठतीस, करहें भवि हुहे शिव ईश।
पंच परम गुरु गुण सब जोड़, सौ पर तेंतालिस कुल जोड़।
करिये प्रोषध तिनके भव्य, सुरपद के सुखदायक नव्य।
अनुक्रम शिव पावे तहँ ठीक, जिनवर भाष्यौ है अति ठीक।

—कि० सिं० कि०

भावार्थ—यह व्रत २८६ दिन में पूरा होता है जिसमें १४३ उपवास और १४३ पारणा होते हैं। यथा—

१—अरहन्त के ४६ गुण के ४६ उपवास और ४६ पारणा—

जन्म के १० अतिशयों के दश दशमियों के उपवास और १० पारणा।
केवलज्ञान के अतिशयों के दश दशमियों के उपवास और १० पारणा।
आठ प्रातिहार्य के आठ अष्टमियों के आठ उपवास और ८ पारणा।
चार अनंतचतुष्टय के चार चतुर्थियों के चार उपवास और ४ पारणा।
देवकृत चौदह अतिशयों के १४ चतुर्दशियों के १४ उ० १४ पा०।

२—सिद्धों के ८ गुणों के ८ उपवास, ८ पारणा—

आठ गुणों के आठ अष्टमियों के आठ उपवास, आठ पारणा।

३—आचार्यों के ३६ गुण के ३६ उपवास, ३६ पारणा—

बारह तप के १२ द्वादशियों के १२ उपवास, और १२ पारणा।
छह आवश्यक की छह षष्ठियों के ६ उपवास और ६ पारणा।
पंचाचारों के पाँच पंचमियों के पाँच उपवास और पाँच पारणा।
दशलक्षण के दश दशमियों के १० उपवास और १० पारणा।
तीन गुप्तियों के तीन तीजों के तीन उपवास और तीन पारणा।

४—उपाध्याय के २५ गुण के २५ उपवास, २५ पारणा—

पूर्व १४ के १४ चतुर्दशियों के १४ उपवास और १४ पारणा।
अंग ११ के ११ एकादशियों के ११ उपवास और ११ पारणा।

५—सब साधु के २८ गुणों के २८ उपवास, २८ पारणा—

पाँच महाव्रत के पाँच पंचमियों के ५ उपवास और ५ पारणा।

पाँच समितियों के पाँच पडमियों के ५ उपवास और ५ पारणा।
पाँच इन्द्रियविजय के पाँच पडमियों के ५ उपवास और ५ पारणा।
छह आवश्यक के छह पडिवा के छह उपवास और छह पारणा।
सात सात गुणों के सात पडमा के सात उपवास और सात पारणा।
इस प्रकार व्रत पूर्ण करे। नमस्कार मंत्र का त्रिकाल जाप करे। पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

१३२—श्रुतज्ञान व्रत

चौपाई

श्रुतज्ञान व्रत कह्यो महान, आगम विधि जिमि कही बखान।
पडिमा मतिज्ञान अठवीस, ग्यारह ग्यारसि अंग मनीस।
दोयज दोय परिकर्म सोय सूत्र अठासी अष्टमि होय।
नौमी एक योग प्रथमान, चौदशि चौदह पूर्व बखान।
पंच चूलिका पंचमि पाँच, अवधि ज्ञान छह षष्ठी सांच।
दोय चौथ मन पर्यय ज्ञान, दशमी एक सु केवलज्ञान।
एक शतक अट्ठावन वास, करे पारने इतने तास।
मास उनासी पूरण होय, कर उद्यापन विधिवत सोय।

—सुदर्शितर गिणी

भावार्थ—यह व्रत उन्यासी मास में पूरा होता है, जिसमें अट्ठावन उपवास और एक सौ अट्ठावन पारणा होते हैं। यथा—

१—मतिज्ञान के २८ पडमा के २८ उपवास और २८ पारणा करे।
२—ग्यारह अंग के ११ ग्यारसों के ११ उपवास और ११ पारणा करे।
३—परिकर्म के दो दोयज के २ उपवास और २ पारणा करे।
४—अठासी सूत्र के ८८ अष्टमियों के ८८ उपवास और ८८ पारणा करे।
५—प्रथमानुयोग का एक नौमी का १ उपवास और १ पारणा करे।

६—चौदह पूर्व के १४ चतुर्दशियों के १४ उपवास और १४ पारणा करे।
७—पाँच चूलिका के ५ पंचमियों के ५ उपवास और ५ पारणा करे।
८—अवधिज्ञान के ६ पष्ठियों के ६ उपवास और ६ पारणा करे।
९—मन:पर्ययज्ञान के २ चौथियों के २ उपवास और २ पारणा करे।
१०—केवलज्ञान के १ दशमी का १ उपवास और १ पारणा करे।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे। 'ओं ह्रीं श्रुतज्ञानाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे।

१२३—कर्मक्षय व्रत

चौपाई

कर्म क्षयण व्रत विधि इम जान, कही जिनागम माहिं प्रमाण।
प्रकृति एक सो अड़तालीस, तिन नाशन व्रत यह जगदीश।
सात चतुर्थी के उपवास, प्रोषध तीन सप्तमी तास।
चौदशि भेद पिच्यासी सोय, शत अड़तालिस प्रोषध होय।
इहि विधि पूरण है व्रत जबे, उद्यापन कर छाँड़े तबे।
—सुरेन्द्रकीर्ति गणि

भावार्थ—यह व्रत ७४ मास में पूरा होता है, जिसमें १४८ उपवास और १४८ पारणा होते हैं। यथा—

१—सात प्रकृति नाशनार्थ सात चतुर्थियों के सात उपवास, ७ पारणा।
२—तीन प्रकृति नाशनार्थ तीन सप्तमी के ३ उपवास, ३ पारणा।
३—छत्तीस प्रकृति नाशनार्थ छत्तीस नवमियों के ३६ उपवास, ३६ पारणा
४—एक प्रकृति नाशनार्थ एक दशमी का एक उपवास, एक पारणा।
५—सोलह प्रकृति नाशनार्थ बारह द्वादशियों के १२ उपवास, १२ पारणा।
६—पचासी प्रकृति नाशनार्थ ८५ चौदशि के ८५ उपवास, ८५ पारणा।

इस प्रकार व्रत पूरा कर उद्यापन करे। 'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं' इस मंत्र का त्रिक

१३४—गरुडपंचमी व्रत

श्रावण सुदि पंचमि के दिना, गरुड़ पंचमी व्रत जिन भना।
—जैनव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत ५ वर्ष में समाप्त होता है, प्रत्येक वर्ष श्रावण शुक्ला ५ के दिन उपवास करे। 'ओं ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः' इस मंत्र का जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत चारित्रमती ने किया था जिसके प्रभाव से पिता की मूर्च्छा दूर की थी और अन्त में मोक्ष प्राप्त किया था।

१३५—षष्ठी व्रत

षष्ठी श्रावण शुक्ल महान, षष्ठी व्रत धर अति सुख दान।
—जैनव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत ६ वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन उपवास करे। ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथाय नमः' इस मंत्र का जाप्य करे। पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

यह व्रत मालव देश के चित्र नामक ग्राम में एकनागगौड़ की पुत्री चारित्रमती ने किया था, जिसके प्रभाव से नगरी में शत्रु द्वारा लगाया हुआ पुनः पुनः प्राप्त हो गया था, और यह चारित्रमती जिनदीक्षा लेकर स्वर्ग में देव हुई और वहाँ से चयकर जिनदीक्षा ग्रहण कर कर्मनाश कर मोक्ष प्राप्त किया।

१३६—द्वादशी व्रत

भादौं शुक्ल द्वादशी होय, व्रत द्वादशी कर भवि सोय।
—जैनव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत १२ वर्ष में पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला द्वादशी के दिन उपवास करे। 'ओं ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

यह व्रत मालवा देश के पद्मावतीपुर नामक ग्राम में नरसिंह राजा की पुत्री शीलावती ने पालन किया था जिसके प्रसाद से स्वर्गादि सुख भोग मोक्ष प्राप्त किया था।

१३७—बेला व्रत

आदि अंत एकासन करे, बीच दोय उपवास जु धरे।
—हरिवंशपुराण

भावार्थ—प्रथम एक एकाशन, फिर दो उपवास, पीछे एक एकाशन करना।

१३८—षष्टमबेला व्रत

प्रथम एकाशन बेला एक, पाछे एकासन इम टेक।
छह बेला भोजन का त्याग, षष्टम बेला व्रत यह भाग॥
—हरिवंशपुराण

भावार्थ—प्रथम धारणे के दिन आदि में एकाशन, फिर दो उपवास, फिर पारणा के दिन अंत भाग में एकाशन इस प्रकार छह बेला भोजन का त्याग करना।

१३९—तेला व्रत

त्रय उपवास बीच में ठान, धारणे पारणे एकलठान।
—हरिवंशपुराण

भावार्थ—पहले और अन्त में एकाशन और बीच में तीन उपवास करना।

१४०—अष्टमी व्रत

अष्टम्यामुपवासोऽयं, विधत्ते भावपूर्वकम्।
हत्वा कर्माष्टकं सोऽपि, याति मोक्षपदं ध्रुवम्॥

भावार्थ—यह व्रत प्रत्येक मास की प्रत्येक अष्टमी के दिन किया जाता है। इस दिन उपवास करे। 'ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धाधिपतय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। आठ वर्ष बाद उद्यापन करे।

१४१—चतुर्दशी व्रत

बरहु व्रत चौदश उपवास, पूजा करो जिनेश्वर पास।
मास दिवस माहिं दो-दो वार, कृष्ण सुक्ल माहिं भेद न पार।
मास अषाढ सुकल व्रत लाजे, तेरस दिन इक भुक्ति सु कीजे।
चौदश वास करो मन लाय पून्यो पारणा कीजे राय।
चौदह वर्ष करो व्रत सार, पीछे उद्यापन कर सार।

—चतुर्दशीव्रतकथा

भावार्थ—यह व्रत आषाढ़ शुक्ला १४ से शुरू होता है। प्रत्येक मास की प्रत्येक त्रयोदशी के दिन एकाशन करे। चतुर्दशी को उपवास और पूनों को पारणा करे। 'ओं ह्रीं अनन्तनाथाय नमः' इस मन्त्र का त्रिकाल जाप्य करे। १४ वर्ष बाद उद्यापन करे।

यह व्रत सुजानी नाम की सेठानी ने किया था जिसके प्रभाव से स्वर्गादिक के सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया।

१४२—निर्वाणकल्याणक वेला व्रत

जे जे तीर्थंकर निर्वाण, गये तास दिन की तिथि ठान।
तिहि दिन को पहलो उपवास लगतो दूजो वास प्रकाश।
इहि विधि वारह मास मझार, वेला करिये चौस र चार।
वेला कल्याणक निर्वाण, व्रत नाम लिखिये बुधिमान।

—कि० वि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत ७२ दिन में पूरा होता है। जिसमें २४ वेला और २४ पारणा होते हैं। यथा—

तीर्थंकर नं०	निर्वाण तिथियाँ	उपवास तिथियाँ	पारणा तिथियाँ
१	माघ कृष्णा १४	१३–३०	१
२	चैत्र शुक्ला ५	५–६	७
३	चैत्र शुक्ला ६	६–७	८
४	वैशाख शुक्ला ६	६–७	८
५	चैत्र शुक्ला ११	११–१२	१३
६	फाल्गुन कृष्णा ४	४–५	६
७	फाल्गुन कृष्णा ७	७–८	९
८	फाल्गुन कृष्णा ८	८–९	१०
९	भाद्रपद शुक्ला ८	८–९	१०
१०	आश्विन शुक्ला ८	८–९	१०
११	श्रावण शुक्ला १५	१५–१	
१२	भाद्रपद शुक्ला १४	१४–१५	
१३	आषाढ़ कृष्णा ८	८–९	१०
१४	चैत्र कृष्णा ३०	३ –१	२
१५	ज्येष्ठ कृष्णा १४	१४–३०	१
१६	ज्येष्ठ कृष्णा १४	१४–३०	१
१७	वैशाख शुक्ला १	१–२	३
१८	चैत्र कृष्णा ३०	०–१	२
१९	फाल्गुन शुक्ला ५	५–६	७
२०	फाल्गुन कृष्णा १२	१२–१३	१४
२१	वैशाख कृष्णा १४	१४–३०	१
२२	आषाढ़ शुक्ला ७	७–८	९
२३	श्रावण शुक्ला ७	७–८	९
२४	कार्तिक कृष्णा ३०	३०–१	२

इस प्रकार व्रत समाप्त करे। निर्वाणकल्याणक की भावना भावे 'ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनाय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे व्रत पूर्ण होनेपर उद्यापन करे।

१४३—लघुपंचकल्याणक व्रत

गर्भ जन्म तप ज्ञान निज, तीर्थंकर चौबीस।
वरष माहिं तिथि मथन की, करे एक सौ बीस॥
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत एक वर्ष में पूरा होता है। जिसमें १२० उपवास और १२० पारणा होते हैं। जिस जिस तिथि में तीर्थंकर का कल्याणक हुआ हो उस उस तिथि में उपवास करे। 'ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकराय नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप करे।

१४४—बृहत्पंचकल्याणक व्रत

चौपाई

प्रथम वरष श्री गर्भ कल्याण, वरष दूसरी जनमन जान।
तप कल्याणक वर्षहिं तीन, चौथे वरष सु केवल लीन॥
वरष पांचवों श्री निर्वाण, चाविस चौविस प्रोषध ठान।
वरष पांच मरजादा धार, पीछे उद्यापन कर सार॥
—कि० सि० क्रि०

भावार्थ—यह व्रत पाँच वर्ष में पूरा किया जाता है। प्रथम वर्ष में चौबीस तीर्थंकरों की गर्भ की तिथियों के २४ उपवास करे। इसी प्रकार द्वितीय वर्ष में जन्म के २४। तृतीय वर्ष में तप के २४। चौथे वर्ष में ज्ञान के २४ और पांचवें वर्ष में निर्वाण के २४ उपवास करे। 'ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो नमः' इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे।

पञ्च कल्याणक तिथि चक्र

तीर्थंकर संख्या	गर्भ कल्याणक	जन्म क	तप क	ज्ञान क	निर्वाण क
१	आ कृ २	चै कृ ६	चै कृ ६	फा कृ ११	माघ कृ १४
२	ज्ये कृ ३०	पौ शु १०,	पौ शु ६	पौ शु ११	चै शु ५
	फा शु ८	माग शु १५	मागशु १५	का कृ ४	चै शु ६
४	वै शु ६	पौ शु १२	पौ शु १२	पौ शु १४	वै शु ६
५	श्रा शु २	वै कृ १०	वै शु ६	चै शु ११	चै शु ११
६	माघ कृ ६	का कृ १३	मग कृ १०	चै शु १५	फा कृ ४
७	भाद्र शु ६	ज्ये शु १२	ज्ये शु १२	फा कृ ६	फा कृ ७
८	चै कृ ५	पौ कृ ११	पौ कृ ११	फा कृ ७	फा कृ ८
९	फा कृ ९	मग शु ६	मग शु १	का शु २	भाद्र शु ८
१०	चै कृ ८	पौ कृ १२	पौ कृ १२	पौ कृ १४	आश्विन शु ८
११	ज्ये कृ ६	फा कृ ११	फा शु ११	माघ कृ ३०	श्रा शु १५
१२	आषा कृ ६	फा कृ १४	फा कृ १४	माघ शु २	भाद्र शु १४
१३	ज्ये कृ १०	पौ शु ४	पौ शु ४	माघ शु ६	आषा कृ ८
१४	कार्ति कृ १	ज्ये कृ १२	ज्ये कृ १२	चै कृ ३०	चै [illegible]

तीर्थंकर संख्या	गर्भ कल्या	जन्म क	तप क	ज्ञान क	निर्वाण क
१५	वै सु १३	पौ शु १	पौ सु १३	पौ सु १५	ज्ये सु ४
१६	भाद्र कृ ७	ज्ये कृ १४	ज्ये कृ १४	पौ सु ११	ज्ये कृ १४
१७	श्रा कृ १०	वै सु १	वै शु १	चै शु ३	वै शु १
१८	फा शु ३	मग शु १४	मग शु १०	का शु १२	चै कृ ३०
१९	चै शु १	मग सु ११	मग शु ११	मग शु ११	फा शु ५
२०	श्रा कृ २	वै कृ १०	वै कृ १०	वै कृ ९	फा कृ १२
२१	असो कृ २	आषा कृ १०	आषा कृ १०	मग सु ११	वै कृ १४
२२	का सु ६	श्रा कृ ६	श्रा कृ ६	आसो कृ १	आषा शु ७
२३	वै कृ २	पौ कृ ११	पौ कृ ११	चै कृ ४	श्रा सु ७
२४	आषा शु ६	चै शु १३	चै शु १३	वै शु ७	का कृ ३०

नवल साह कृत 'वर्धमानपुराण' में निम्नलिखित २० व्रत और कह गये हैं जो बीस पंथ, श्वेताम्बर तथा ढूंढिया आदि सम्प्रदायों में प्रचलित जान पड़ते हैं, और जो कि तेरह पंथ सम्प्रदाय के माय प्रतिकूल हैं, उन व्रतों को भी यहाँ संग्रह किया जाता है।—

१—पचपोरिया व्रत

भादों सुदि पाँचें दिन जान, घर पचीस बाँटे पकवान।

२—चन्दनषष्ठी व्रत

चदनषष्ठी भादों शुक्ल, चदन चर्चित भोजन मुक्त।

३—कुमारसप्तमी व्रत

भादों सुदि सप्तमी के दिना, रजजरी मण्डप पूजे जिना।

४—मनचिती अष्टमी व्रत

भादों सुदि आठें दिन जान, मन चिन्ते भोजन परवान।

५—सुगन्धदशमी व्रत

अब सुगंध दशमी व्रत जान, भादों सुदि दशमी को मान।

६—दशमिनिमानी व्रत

भादों सुदि दशमी व्रत धार, आदर युत परघर आहार।

७—सौभाग्यदशमी व्रत

भादों सुदि दशमी दिन ठान, दश सुहागिना भोजन

८—चमकदशमी व्रत

चमक दशमि और चमकाय, जो भोजन नहिं तो अंतराय।

९—छुहारदशमी व्रत

छुहार दशमि व्रत इहि परकार, दश सुपात्र को देय अहार।

१०—तमोरदशमी व्रत

तम्बोल दशमि व्रत को यह योर, दश सुपात्र को दय तमोर।

११—पानदशमी व्रत

पान दशमि बीरा दश पान, दश श्रावक दे भोजन दान।

१२—फूलदशमी व्रत

फूल दशमि दश फूलन माल, दश सुपात्र पहिनाय अहार।

१३—फलदशमी व्रत

फल दशमी फल दश घर लेय, दश श्रावक के घर घर देय।

१४—दीपदशमी व्रत

दीप दशमि दश दीप बनाय, जिनहिं चढ़ाय आहार कराय।

१५—धूपदशमी व्रत

धूप दशमि व्रत धूप दशांग, खेवो जिन ढिग भाव अभंग।

१६—भावदशमी व्रत

भाव दशमि व्रत दश दश पुरी, दश श्रावक दे भोजन करी।

१७—न्योनदशमी व्रत

न्योन दशमि दश दशमि कराय, नये नये दश पात्र निमाय।

१८—उड़दशमी व्रत

दशमि उड़द उड़द अहार, पच घरन मिलि जो अधिकार।

१९—थारादशमी व्रत

थारा दशमि सुहारी लेय, थारा थारा दश घर देय।

२०—भंडार दशमी व्रत

भंडार दशमि व्रत शक्ति जु पाय,दश जिन भवन भंडार चढाय।



सूतक-प्रमाण

जैन धर्म के आर्ष ग्रन्थों में कहीं भी सूतक और पातक व्यवहारी जीवों को मानने का उल्लेख नहीं मिलता। यह प्रथा जैनेतर समाज से देखा देखी जैन समाज में भी प्रचलित हो गई है।

योंर में सूतक मात्र जननेवाली स्त्री को ही होता है, क्योंकि उसकी योनिस्थान से जनने के बाद भी अशुद्ध खून निकलता रहता है। किसी किसी स्त्री का तो ४५ दिन तक रहता है इसलिए मात्र उस प्रसूता स्त्री को ही ४५ दिन का सूतक होता है, अन्य जनों को नहीं (प्रसूता को छोड़ और पति आदि को नहीं होता)

मरणसूतक—किसी भी व्यक्ति का मरण हो, मरण के पश्चात् अन्तर्मुहूर्त उपरान्त उस शरीर में सम्मूर्छन जीव पैदा हो जाते हैं। अतः जब उस मृतक शरीर को जलाया जाता है उसके साथ वे अगणित जीव जल जाते हैं। इसलिए उन जीवों के जल जाने का पातक मात्र अग्नि लगानेवाले पुरुषों को ही होता है, अन्य को नहीं। उनको भी तब तक जब तक राख न उठाई जाय और दान, पूजन सामायिक द्वारा शुद्धि न हो जाय।

१—भरत चक्रवर्ती के पुत्र और आदिनाथ को केवलज्ञान एक साथ हुआ, भरत चक्रवर्ती ने प्रथम ही समवशरण में जाकर पूजा की।

—आदिपुराण

२—सुकमाल का जन्म होते ही सबसे पहिले सुभद्रा सेठानी ने मंदिर में जाकर भगवान् की पूजा की।

—सुकमाल चरित

३—कृष्णनारायण के जब प्रद्युम्नकुमार का जन्म हुआ तब श्रीकृष्ण जी ने मन्दिरजी में पूजन कराया। —प्रद्युम्नचरित

४—भगवान् का जन्म कल्याणक के बाद इन्द्र की आज्ञा से भगवान् के पिता ने अपने बान्धवों के साथ जिनमन्दिर में अभिषेकपूर्वक महापूजा की। —मल्लिपुराण

इत्यादि जैन शास्त्रों में अनेक उल्लेख हैं। जैन शास्त्रों के अनुसार सूतक उक्त प्रकार होता है। परन्तु व्यवहार में सूतक का रूप जिस प्रकार से प्रचलित है वह इस प्रकार से है। —सद्धाधमार्तण्ड से उद्धृत

रज मासिक सूतक

प्राकृतं जायते स्त्रीणां मासे मासे स्वभावतः ।
पचाशद्वर्षादूर्ध्वं तु अकाल इति भाषितः ॥

भावार्थ—स्त्रियों का स्वभाव से ही महीने महीने रजस्राव होता है वह प्राकृतिक रज है। दश वर्ष के भीतर और ५० वर्ष के ऊपर जो रजस्राव होता है वह अकाल रज है, वह दूषित नहीं है।

शुद्धा भर्तुश्चतुर्थेऽह्नि, भोजने रन्धनेऽपि वा ।
देवपूजा गुरूपास्ति होमसेवा तु पंचमे ॥

भावार्थ—रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान करने पर पतिसेवा और भोजनपान बनाने के योग्य हो जाती है। परन्तु देवपूजा, गुरूपासना और हवन सेवा योग्य पाँचवें दिन ही होती है।

अकालिक ऋतुदोष

ऋतुकाले व्यतीते तु यदि नारी रजस्वला ।
तत्र स्नानेन शुद्धिः स्यादष्टादशदिनात्पुरः ॥

भावार्थ—ऋतुकाल के बीत जाने पर अठारह दिन के पहले यदि कोई स्त्री रजस्वला हो जाय तो वह स्नानमात्र से शुद्ध हो जाती है।

सूतक

जातक मृतक चेति सूतक द्विविध स्मृतम् ।
स्राव पात प्रसूतिश्च त्रिविध जातकस्य च ॥

भावार्थ—सूतक दो प्रकार का है—१ जातक, २ मृतक। इनमें जातक सूतक तीन प्रकार का होता है—१ स्राव, २ पात, ३ प्रसूति।

स्राव, पात और प्रसूति

मासत्रये चतुर्थे स गर्भस्य स्राव उच्यते ।
पात स्यात् पचमे षष्ठे प्रसूति सप्तमादिषु ॥

भावार्थ—गर्भाधान के बाद तीन या चार महीने में जो गर्भ च्युत हो उसे स्राव कहते हैं। पाँचवें और छठवें मास में जो गर्भ च्युत हो उसे पात कहते हैं। और सातवें से दशम मासतक जो गर्भ च्युत हो उसे प्रसूति कहते हैं।

स्रावसूतक

माससख्या दिन मातु स्रावे सूतकमिष्यते ।
स्नानेनैव तु शुद्ध्यन्ति सगोत्रश्चैव वै पिता ॥

भावार्थ—जितने महीना का स्राव हो उतने दिन का सूतक माता को होता है। और सगोत्री बन्धु तथा पिता स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं।

गर्भपातसूतक

पाते मातुर्यथामास तावदेव दिन भवेत् ।
सूतक तु सपिण्डाना पितुश्चैकदिन भवेत् ॥

भावार्थ—जितने महीना का पात हो उतने ही दिन का सूतक माता को होता है, तथा सगोत्री भाई, बन्धु तथा पिता के लिए एक दिन मात्र का होता है।

प्रसूतिसूतकम्

प्रसूतौ चैव निर्दोषं दशाहं सूतकं भवेत्।
चिपन्ने शुद्धयते सूतौ प्रसूतिस्थानमासकम्॥

भावार्थ—निर्दोष प्रसूति में बालकोत्पत्तिका सूतक दश दिन का होता है। प्रसूता स्त्री ४५ माह में शुद्ध होता है। और प्रसूति स्थान १ महीने में शुद्ध होता है।

अनिरीक्षण और अनधिकार सूतक

सदा पुत्रसये मातुर्दशाहमनिरीक्षणम्।
अथ विंशतिरात्रं स्यादनधिकारलक्षणम्॥
स्त्रीसूतौ तु नवाथ स्यादनिरीक्षणलक्षणम्।
पश्चादनधिकाराथ स्यात्त्रिंशद्दिवस भवेत्॥

भावार्थ—पुत्रजन्म में प्रसूता स्त्री को दश दिन का अनिरीक्षण सूतक होता है। पश्चात् २० दिन का अनधिकार सूतक होता है। और पुत्रीजन्म में माता को १० दिन का अनिरीक्षण सूतक होता है और ३० दिन का अनधिकार सूतक होता है।

जनने ऽप्येवमेवाघं मात्रादीनां तु सूतकम्।
आसन्ने दश रात्रिं स्यात् षड्रात्रं च चतुर्थके॥
पञ्चमे पञ्च षट्चतु, सप्तमे च दिनत्रयम्।
अष्टमे च अहोरात्रिं, नवमे च प्रहरद्वयम्॥
दशमे स्नानमात्रं स्यात् एतद् नासन्नसूतकम्।
आतृतीयात्समासन्ना अनासन्नास्ततः परे॥

भावार्थ—जननाशौच में माता, पिता, भाई और आसन्न बन्धुओं को दश दिन का सूतक होता है। और अनासन्न बन्धुओं को अर्थात् चौथी पीढ़ी में ६ दिन, पाँचवीं पीढ़ी में ५ दिन, छठी पीढ़ी में ४ दिन। सातवीं पीढ़ी में ३ दिन, आठवीं पीढ़ी में १ दिन रात्रि, नवमी पीढ़ी में दो प्रहर,

और स्वामी पीढ़ी में स्नान मात्र से शुद्धि होती है। तीन पीढ़ी तक आसन्न और चौथी पीढ़ी से १० पीढ़ी तक अनासन्न कहते हैं।

अश्वा च महिषी चेटी गौ प्रसूता गृहाङ्गणे।
सूतकं दिनमेकं स्यात् गृहबाह्ये न सूतकम् ॥

भावार्थ— घोड़ी, भैंस, दासी, गौ आदि जो अपने घर के भीतर जने तो एक दिन का सूतक होता है। बाहर नहीं।

महिष्याः पक्षकं क्षीरं गोक्षीरं च दशोदिनम्।
अष्टमे दिवसे ह्यजायाः क्षीरं शुद्धं न चान्यथा ॥

भावार्थ— जनने के बाद महिषी का दुग्ध १५ दिन में, गाय का दश दिन में और बकरी का ८ दिन में शुद्ध होता है, अन्यथा नहीं।

मरणसूतक

नाभिच्छेदनतः पूर्वं जीवनजातो मृतो यदि।
मातुः पूर्णमशौचं स्यात् पितुश्च त्रिदिनं समम् ॥

भावार्थ— जीता उत्पन्न हुआ बालक नालच्छेदन के पूर्व ही मर जाय तो माता के लिये दश दिन का और पिता, भाई तथा आसन्न बंधुओं को तीन दिन का सूतक होता है।

मृतस्य प्रसवे चैव नाभिच्छेदनतः परम्।
मातुः पितुश्च आसन्नबन्धूनां पूर्णसूतकम् ॥

भावार्थ— मरा हुआ बालक उत्पन्न हो अथवा नालच्छेदन के पश्चात् मरण करे तो माता, पिता और आसन्न बंधुओं को दश दिन का सूतक होता है।

अनतीतदशाहस्य बालस्य मरणे सति।
पित्रोर्दशाहमाशौचं तदूर्ध्वं पूर्णसूतकम् ॥

भावार्थ— यदि बालक १० दिन के भीतर ही मर जाय तो मरण का सूतक उसी जन्म के सूतक के दश दिन के भीतर ही समाप्त हो जाता है। यदि दश दिन के बाद मरण करे तो सूतक मानना पड़ेगा।

जातदन्तशिशोर्नाशे पित्रोर्मातुर्दशाहकम् ।
प्रत्यासन्नसगोत्राणामेकरात्रिमघं भवेत् ॥
अप्रत्यासन्नबन्धूनां स्नानमेव प्रचोदितम् ।
अजातदन्ते नैव मृते बाले दिनत्रयम् ॥

भावार्थ—दाँत उगे हुए बालक के मरण का सूतक माता पिता को दश दिन का होता है तथा आसन्न बन्धुओं का एक दिन का और अनासन्न बन्धुओं का स्नान मात्र तक का होता है।

कृतचौलस्य बालस्य पितुर्भ्रातुश्च पूर्ववत् ।
आसन्नेतरबन्धूनां पञ्चाहं त्र्यहमिष्यते ॥
मरणे चोपनीतस्य पित्रादीनां तु पूर्ववत् ।
आसन्नबान्धवानां च तथैवाशौचमिष्यते ॥

भावार्थ—चौल संस्कार हुए बालक के मरण का सूतक माता, पिता, और भाइयों को दश दिन का, आसन्न बन्धुओं को ५ दिन का और अनासन्न बन्धुओं को ३ दिन का होता है।

उपनीत (यज्ञोपवीत) संस्कार हुए बालक के मरण का सूतक माता, पिता, भाई और आसन्न बन्धुओं को १० दिन का माना है और अनासन्न बन्धुओं को पीढ़ी के प्रमाण से सूतक होता है।

आसन्न बन्धुओं को पीढ़ी प्रमाण सूतक

तृतीयपादे स्यात्पूर्ण चतुष्पादे षड् भवेत् ।
पञ्चमे दिन पञ्चैव षष्ठे च तुर्यहः शुचिः ॥
सप्तमे च तृतीयं स्यादष्टे पुंस्यहोरात्रिकम् ।
नवमे च दिनार्धं स्याद्दशमे स्नानमात्रतः ॥

भावार्थ—मरण का सूतक तीसरी पीढ़ी तक १० दिन का होता है पश्चात् चौथी पीढ़ी में ६ दिन का, पाँचवीं पीढ़ी में ५ दिन का, छठी पीढ़ी में ४ दिन का, सातवीं पीढ़ी में ३ दिन का, आठवीं पीढ़ी में १ दिन

रात्रि का, नवीं पीढ़ी में दो प्रहर का और दशवीं पीढ़ी में स्नान मात्र से शुद्ध हो जाता है।

मातामहो मातुलश्च, म्रियते चाऽथ तत्सुता।
दौहित्रो भागिनेयश्च पित्रोश्च म्रियते स्वसा॥
स्वगृहे गृहमाशौचं गृहबाह्ये न सूतकम्।

भावार्थ—नाना, नानी, मामा, मामी, पुत्री का लड़का, भानजा, मौसी, बुआ ये यदि अपने घर पर मरें तो २ दिन का सूतक होता है। अपने घर से बाहर सूतक नहीं।

कन्याया मरणे चैव विवाह्य प्राग्दिनत्रयम्।
ऊढाना मरणे भर्तुः पूर्णं पक्षस्य चोदितम्॥

भावार्थ—कन्या के मरण का सूतक ३ दिन का, और विवाही हुई कन्या अपने घर मरे तो माता, पिता, भाइयों को ३ दिन का और ससुराल-वालों को १० दिन का सूतक होता है।

स्वसुर्गृहे मृतो भ्राता भ्रातुर्वाथ गृहे स्वसा।
अशौचं त्रिदिनं तत्र सूतकं न परत्र तु॥

भावार्थ—बहिन के घर भाई, या भाई के घर बहिन का मरण हो तो दोनों के लिये तीन दिन का सूतक होता है। और यदि इनका अन्यत्र मरण हो तो सूतक नहीं होता।

सतीनां सूतकं हत्या पापं षण्मासकं भवेत्।
अन्यासामात्म हत्यानां प्रायश्चित्त विधानतः॥

भावार्थ—अपने को अग्नि में जला लेने ऐसा सती होने के पाप का सूतक छः मास का होता है। और अन्यान्य हत्याओं का सूतक प्रायश्चित्त-ग्रन्थों से जानकर शुद्धि करे।

गर्भिण्या मरणे प्राप्ते नैमित्त्यादिकारणे।
सद्यैव दहनं कुर्याद् गर्भच्छेदं न कारयेत्॥

भावार्थ—यदि गर्भिणी स्त्री का मरण रोगादि किसी भी कारण से

प्रव्रजिते मृते काले देशान्तरे मृते रणे।
सन्यासे मरणे चैव दिनैक सूतकं भवेत्॥

भावार्थ—जो गृहत्यागी दीक्षित हुआ हो, ऐलक क्षुल्लक पद ग्रहण किया हो, अथवा मुनि हुआ हो, अथवा देशान्तर में मरण हो, अथवा संग्राम में वा सन्यास में मरण हो तो एक दिन का सूतक होता है।

मते वचनेन शुद्धि व्रतसहिते चैव सागारे।

भावार्थ—संग्राम, जल, अग्नि, परन्या, बालसन्यास इनमें यदि व्रती श्रावक का मरण हो जाय तो तत्काल शुद्धि होती है।

व्रतीना दीक्षिताना च याज्ञिकब्रह्मचारिणाम्।
नैवाशौच भवेत्तेषां पितुश्च मरणं विना॥

भावार्थ—व्रती, दीक्षित, याज्ञिक और ब्रह्मचारी इनको सिर्फ पिता माता के मरण के सिवाय और किसी का सूतक नहीं होता।

जिनाभिषेकपूजाभ्यां पात्रदानेन शुद्धयति।

भावार्थ—सूतक निवृत्ति होने के बाद जिनेन्द्र अभिषेक, पूजन और पात्रदान कर शुद्धि होती है।

इति सूतकविधान

संक्षिप्त प्रायश्चित्त संग्रह

वर्तमान समय में जैन समाज में प्रचलित प्रायश्चित्त का एक [illegible] ही रूप हो गया है। प्रायश्चित्त [illegible] दुष्कृत्य [illegible] शुद्ध होने के लिये होता है। परन्तु वर्तमान प्रायश्चित्त में न तो पाप का नाश होता है और न शुद्धि ही होती [illegible] और [illegible] पापों में [illegible] करने की भावना [illegible] के पात्र [illegible] हो जाता है।

इसी हेतु से मैंने [illegible] कुछ प्रायश्चित्तों का संग्रह किया है। आशा है कि जैन समाज [illegible] प्रायश्चित्त की प्रथा को छोड़कर इस जैन शास्त्रोक्त प्रायश्चित्त [illegible] के अनुसार ही प्रायश्चित्त देने का प्रचार करेगी, जिससे [illegible] उभय [illegible] हो।

प्रायश्चित्तं शुद्धिः मलहरणं पापनाशनं भवति।

—छेदपिण्ड

भावार्थ—शुद्ध का होना, मल का दूर होना, व पाप का नाश होना प्रायश्चित्त है।

प्रायश्चित्त का प्रमाण

यत् श्रमणानां भणितं प्रायश्चित्तं तदपि श्रावकाणामपि।
द्वयोः त्रयाणां [illegible] अर्धार्धक्रमेण ज्ञातव्यम् ॥

—छेदपिण्ड

भावार्थ—जो मुनियों का प्रायश्चित्त कहा गया है उससे आधा उत्कृष्ट श्रावकों का [illegible] तथा उससे आधा मध्यम श्रावकों का, और [illegible] श्रावकों से आधा जघन्य श्रावकों का [illegible]। यहाँ से [illegible] है [illegible] मुनियों की [illegible] है। [illegible] और [illegible] के [illegible] अनुसार [illegible] देना चाहिए।

व्रतों में दोष का प्रायश्चित

पञ्चमनुव्रतघाते गुणव्रतशिक्षाव्रतस्य तु उपवास ।
दर्शनाचारातिचारे जिनपूजा भवति निर्दिष्टा ॥
—छेदपिण्ड

भावार्थ—अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षाव्रत के घात होनेपर उपवास है। तथा दर्शनाचारादि में दोष लगने पर जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करना ही दण्ड है।

पंच महापातकों के प्रायश्चित्त

षण्णां सच्छ्रावकाणां तु पञ्चपातकसन्निधौ।
महामहो जिनेन्द्राणां विशेषेण विशोधनम् ॥
आद्यावन्ते च षष्ठं स्यात् क्षमणान्येकविंशतिः ।
प्रमादाद्गोवधे शुद्धिः कर्तव्या शल्यवर्जितैः ॥
द्विगुणं द्विगुणं तस्मात् स्त्रीबालपुरुषे हते।
सद्दृष्टिश्रावकयाणां द्विगुणं द्विगुणं ततः ॥
—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—छह प्रकार के उत्तम श्रावकों को पञ्चमहापातक दोष लगने पर गौ, स्त्री, बालक, श्रावक, ऋषि, इनका वध हो जाने पर भी जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करना ही विशेष रूप से प्रायश्चित्त है। निःशल्य होकर प्रमाद और कषायपूर्वक यदि गाय का वध हो जाय तो क्षमणो (यतियों) को आदि अंत में षष्ठोपवास तथा मध्य में २१ उपवास करना चाहिये। इसी प्रकार गो वध से दूना स्त्री वध में अर्थात् स्त्री वध में ४२, बालक-वध में ८४, सामान्य मनुष्य वध में १६८, सम्यग्दृष्टि श्रावक के वध में ३३६ और ऋषि वध में ६७२ उपवास यतियों को करना चाहिए। यहाँ षष्ठोपवास का मतलब यह है कि धारणा और पारणा के दिन १ १ बार भोजन करने से दो वक्त भोजन त्याग हुआ, तथा बीच में १ बेला का ४ वक्त भोजन त्याग हुआ, इस प्रकार ६ वक्त भोजन त्याग को षष्ठोपवास कहते हैं।

तृणमासात्पतत्सर्पपरिसपजलौकसाम् ।
चतुर्दश नवायतत्त्वमणानि वधे छिदा ॥
—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—मृग, शशक, रोधआदि तृणचर जीवों के वध का १४ उपवास, सिंहादि मांसभक्षियों के वध का १३ उपवास, तित्तर मयूर, कुक्कुट, पारावतादि पक्षियों के वध का १२ उपवास, सर्पनकुलादि के वध का ११ उपवास, गोधरेत कृकलासादि परिसर्प के वध का १० उपवास, और मगर मत्स्यादि जलचर जीवों के वध का ६ उपवास का प्रायश्चित्त है।

गर्भस्य पातने पापे प्रोषधा द्वादश स्मृता ।

भावार्थ—गर्भपात के पतन करने के पाप का १२ उपवास प्रायश्चित्त है।

सुतामातृभगिन्यादिचाण्डालीरभिगम्य च ।
अश्नुवीतोपवासाना द्वात्रिंशत् मसमयम् ॥
—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—पुत्री, माता, बहन, आदि तथा चाण्डाली इनके साथ गमन करनेवाले को ३२ उपवास करना चाहिये।

मद्य मांस मधु स्वप्ने मैथुन वा निषेवने ।
उपवासद्वय कुर्यात् सहस्रैक अपोत्तमम् ॥
—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—यदि स्वप्न में मद्य, मांस, मधु इनका व मैथुन का सेवन किया हो तो दो उपवास और एक हजार जाप्य करे।

रेतोमूत्रपुरीषाणि मद्यमांसमधूनि च ।
अभक्ष्य भक्षयेत् षष्ठ दर्पतश्चेद्विषट् क्षमा ॥
—प्रायश्चित्तचूलिका

भावार्थ—प्रमादवश यदि रत, मूत्र, मल, मद्य, मांस, मधु, अभक्ष्य, रुधिर, अस्थि, चर्म, अज्ञानपने खाने में आ गया हो तो छह उपवास का प्रायश्चित्त करे। और यदि उक्त पदार्थ अहंकारपूर्वक सेवन किये हों तो १२ उपवास का प्रायश्चित्त करे।

पचोदुम्बरादीन् भक्षयति देशव्रती यदि प्रमाददर्पाभ्याम्।
तर्हि तस्य भवतिच्छेद द्वौ उपवासौ त्रिरात्रिद्विकम्॥
—छेदपिण्ड

भावार्थ—देशव्रती ने यदि अज्ञानपूर्वक पाच उदुम्बर फलो का सेवन कर लिया हो तो दो उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। और यदि अहकार पूर्वक सेवन किया हो तो दो दिन और तीन रात का उपवास कर प्रायश्चित्त ग्रहण करे।

कारूकगृहान्नपानाहारासु भुक्त्वा सुपट् चतुर्थानि।
कारूकपानेषु पुन भुक्ते पचैव उपवास॥
—छेदपिण्ड

भावार्थ—कारुक, रजक, नरूकादि के गृह म भोजन पान करने से छह उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। और यदि उनके पात्रो म भोजन किया हो तो पाच उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे।

चाण्डाल अन्नपान भुक्ते षोडशा भवन्ति उपवासा।
चाण्डालाना पात्रे भुक्ते अष्टैव उपवासा॥
—छेदपिण्ड

भावार्थ—चाण्डाल के अन्नपान का भोजन करने से सोलह उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। और यदि उसके पात्रो म भोजन किया हो तो ८ उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे।

अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा विकलत्रयविघातने।
प्रोषधा द्वि त्रि चत्वारो जपमालास्तथैव च॥
—प्रायश्चित्त

भावार्थ—अज्ञान एव प्रमाद से यदि दोइन्द्रिय तेइन्द्रिय, और चार इन्द्रिय जीवो का विघात हो जाय तो क्रमसे दो उपवास, तीन उपवास, और चार उपवास का प्रायश्चित्त ग्रहण करे। तथा दो, तीन और चार जाप्य करे।

प्रायश्चित्त-समाप्ति के बाद श्रावक का कर्तव्य

त्रिसंध्य नियमस्यान्ते, कुर्यात्प्राणशतत्रयम् ।
रात्रौ च प्रतिमा तिष्ठेज्जितेन्द्रियसहति ॥

भावार्थ—तीनों समय सामायिक करे। तीन सौ उच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे। और इन्द्रियों को वश में करता हुआ रात्रि में भी प्रतिमा रूप तिष्ठकर कायोत्सर्ग करे।

कृत्वा पूजा जिनेन्द्राणां, स्नपनं ते न च स्वयम् ।
आत्मोधप्रयस्याय च दानं देयं चतुर्विधम् ॥

भावार्थ—पश्चात् स्नानादि से पवित्र होकर श्री जिनेन्द्र भगवान् का अभिषेक व पूजन करे। और मुनियों को धर्मोपकरण तथा श्रावकों को चार प्रकार का यथायोग्य दान देवे।

इत्येवमल्पशः प्रोक्तं प्रायश्चित्तविधिस्फुटम् ।
अथो विस्तारतो ज्ञेयं शास्त्रेष्वन्येषु भूरिषु ॥

भावार्थ—इस प्रकार यह थोड़ी सी प्रायश्चित्त विधि बताई गई है। यदि विस्तार से जानना हो तो प्रायश्चित्तशास्त्रों से जाने।

विशेष—जिस मनुष्य या स्त्री से अपराध हो जाय मात्र उन्हींको ही प्रायश्चित्त लेना चाहिये। अन्य मनुष्य तथा कुटुम्ब के जन अपराधी नहीं होते।

इति प्रायश्चित्त विधि

कायोत्सर्ग विधि

ग्रंथारम्भे समाप्ते च स्वाध्याय स्तवनादिषु ।
सप्तविंशतिरुच्छ्वास कायोत्सर्गा मता इह ॥

भावार्थ—ग्रन्थारम्भ के आदि में और अन्त में, तथा स्वाध्याय में, स्तवन में, २७ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे ।

अष्टाविंशतिमूलेषु व्रतिनस्य मलशुद्धये ।
अष्टाग्रशतमुच्छ्वास निशायामपि तद्दलम् ॥

भावार्थ—अट्ठाईस मूलगुणों में अथवा व्रतों में अतीचार लगने पर १०८ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे । यदि दिन में कोई दोष लग गया हो तो भी १०८ बार प्रमाण श्वासोच्छ्वास से कायोत्सर्ग करे । और रात्रि में कोई दोष लग जाय तो ५४ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे ।

पाक्षिक त्रिशत ज्ञेय चतुर्मासिससमुद्भवे ।
चतु शत शत पच सावत्सरे यथागमम् ॥

भावार्थ—जहाँ १५ दिन में कोई दोष लग गया हो तो ३०० श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे । और यदि ४ मास में कोई दोष लग गया हो तो ५०० श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे ।

पचविंशतिरुच्छ्वास भोजने जिनवन्दनाम् ।
गते मखे निषद्याणा पुरीषादिविसर्जनम् ॥

भावार्थ—भोजन को जाते समय मार्ग में कोई दोष लग जाने या गुरुजनों की वन्दना को जाते समय कोई दोष लग जाय अथवा स्थान तजते समय, मल, मूत्र, नाक, श्लेष्म छोड़ते समय कोई दोष आ जाय तो २५ श्वासोच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे । (आचारसार से उद्धृत) ।

इति कायोत्सर्ग विधि

सामायिक विधि

समता सर्वभूतेषु संयमे शुभभावना।
आर्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिक मतम्॥

भावार्थ—समस्त संसारी जीवों में समता भाव करना, संयम के पालन करने की भावना करना, और आर्त रौद्रध्यान का त्याग करना ही सामायिक है।

सामायिक शब्द की निरुक्ति (भाव)

१—सम (एकरूप) आय (आगमन) अर्थात् परद्रव्यों से निवृत्त होकर आत्मा में उपयोग की प्रवृत्ति होना।

२—सम (रागद्वेषरहित) आय (उपयोग की प्रवृत्ति) अर्थात् राग द्वेष परिणति का अभाव होकर साम्य रूप परिणति का होना ही सामायिक है।

पवित्रवस्त्र सुपवित्रदेशे, सामायिक मौनयुतश्च कुर्यात्।

अर्थात्—पवित्र वस्त्र पहिनकर, पावन स्थान में बैठकर मौनपूर्वक सामायिक प्रारम्भ करे।

सामायिकोपयोगी आवश्यक नियम

सामायिक करने के पहले अष्टशुद्धियों पर ध्यान रखना जरूरी है। क्योंकि बाह्य कारणों की यथायोग्यता पर विचार न किया जाय तो सामायिक का यथार्थ रूप प्राप्त होने में सन्देह रहता है।

अष्टशुद्धियाँ

१—द्रव्य (पात्र) शुद्धि—पंचेन्द्रिय तथा मन को वशकर अन्तरंग कषायों को निकालकर और बाह्य परिग्रहों का त्याग कर षट्काय के जीवों की

हिंसा त्याग दी ऐसे उत्तम पात्र तो संयमी साधु हैं और अभ्यासी संयमी श्रावक सामान्य पात्र हैं।

२—क्षेत्र (स्थान) शुद्धि—जहाँ कलकलाहट शब्द सुनाई न पड़े तथा जहाँ डाँस, मच्छर आदि बाधक जन्तु न हों। चित्त में क्षोभ उत्पन्न करनेवाले उपद्रव एवं शीत उष्ण आदि की बाधा न हो, ऐसा एकान्त निर्जन स्थान सामायिक के योग्य है।

३—कालशुद्धि—प्रभात, मध्याह्न और संध्या समय, उत्कृष्ट ६ घड़ी, मध्यम ४ घड़ी, और जघन्य २ घड़ी तक सामायिक करे।

४—आसनशुद्धि—काष्ठ, शिला, भूमि, रेत, या शीतल पाटी पर पूर्व दिशा या उत्तर की ओर मुख करके पद्मासन, खड्गासन या अर्धपद्मासन, होकर क्षेत्र तथा काल का प्रमाण करके मौन ग्रहणकर सामायिक पाठ प्रारम्भ करे।

५—विनयशुद्धि—आसन को कोमल वस्त्र या बुहारी से बुहारकर ईर्यापथ शुद्धिपूर्वक सामायिक प्रारम्भ करे।

६—मनशुद्धि—शुद्ध विचारों की तरफ उपयोग रखना।

७—वचन शुद्धि—धीरे धीरे साम्यभाव पूर्वक मधुर स्वर से पाठ उच्चारण करना।

८—कायशुद्धि—शौच आदिक शंकाओंसे निवृत्त होकर यत्नाचारपूर्वक शरीर शुद्ध करके हलन चलन क्रिया रहित सामायिक प्रारम्भ करना।

सामायिक के पाँच अतीचार

१—२—३—मन, वचन, काय को अशुभ प्रवर्ताना।

४—सामायिक करने में अनादर करना।

५—सामायिक का समय व पाठ भूल जाना।

उक्त आठ शुद्धियों पर ध्यान देते हुए पाँच अतीचारों को बचाकर सामायिक प्रारम्भ करे।

मन्त्रोच्चारण

सामायिक करते समय णमोकार मन्त्र को ३ श्वासोच्छ्वासमें १ बार पढ़ना चाहिये। १०८ बार मन्त्र के जाप में ३२४ श्वासोच्छ्वास होंगे।

आसन पर खड़ा होकर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके 'मैं समस्त सावद्ययोगविरतोस्मि' ऐसा कहकर ६ बार अथवा ३ बार नमस्कार मन्त्र जपकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर ३ आवर्त और एक शिरोनति करे।

(१) आवर्त—दोनों हाथ जोड़ बायें से दाहिने तरफ घुमाने को आवर्त कहते हैं।

(२) शिरोनति—तीन आवर्त करके एक बार सिर नवाकर नमस्कार करना।

नमस्कार करने का मन्त्र

प्राग्दिग्विदिगन्तरत केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवा।
ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगीशास्तानहं वन्दे॥

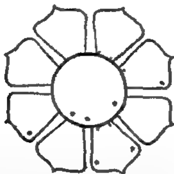
यह मन्त्र पूर्व दिशा का है। चारों दिशाओं के लिये उक्त मन्त्र आदि के 'प्राग्दिग्' के स्थान में 'दक्षिणदिग्' इसी तरह 'पाश्चमदिग्' और उत्तर में 'उत्तरदिग्' पाठ बदलकर चारों दिशाओं में पढ़ता हुआ नमस्कार करे।

इस प्रकार चारों दिशाओं में ३६ बार मन्त्र १२ आवर्त, और ४ नमस्कार कर पद्मासनादि आसनमाढ़ प्रथम सामायिक पाठ संस्कृत (भाषा) पढ़े। पश्चात् बारह भावना, वैराग्य भावना आदि बहुत धाम धीम उस पाठ का भाव समझते हुए पढ़े। फिर नमस्कार मन्त्र का १०८ बार जाप्य करे। जाप्य शुरू करने के पहले 'ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः।' इसको पढ़ लेवे। और इसी प्रकार जाप्य के अन्त में भी पढ़े।

जाप्य की विधियाँ तीन हैं

१—कमल जाप्य। २—हस्तांगुलिजाप्य। ३—माला जाप्य।

(१) *प्रथम कमल जाप्यविधि*—अपने हृदय में आठ पाखुरी के एक श्वेत कमल का विचार करे। उसकी हरेक पाखुड़ी पर पीतवर्ण के बारह बारह बिन्दुओं की कल्पना करे। तथा मध्य के गोल वृत्ति में १२ बिन्दुओं का विचार करे। इन १०८ बिन्दुओं में प्रत्येक बिन्दु पर एक एक मंत्र का जाप्य करता हुआ १०८ बिन्दुओं पर १०८ जाप्य जपे। कमल आकृति निम्न प्रकार है —



(२) *हस्तांगुलि जाप्य*—हाथ की प्रत्येक अंगुली में २ ३ पोरवे होते है। इस प्रकार एक हाथ की चारों अंगुलियों म १२ पोरवे कुल होते है। दाहिने हाथ के प्रत्येक पोरवे पर एक एक बार नमस्कार मंत्र जपे, इस प्रकार दाहिने हाथ के चारों अंगुलियों के १२ पोरवे पर १२ मंत्र हुए। १२ मंत्र हो जाने पर बाये हाथ के प्रथम अंगुली के प्रथम पोरवे पर अंगूठा रखे इस प्रकार ६ बार में १०८ बार मन्त्र जाप्य हो जायेगा।

(३) *माला जाप्य*—१०८ दाने की माला सूत की बनाकर उसके द्वारा जाप्य करे।

इस प्रकार किसी प्रकार से जाप्य पूरा करके कोई स्तुति पाठ वगैरह पढ़ने का अवकाश हो तो पढ़े। बाद पहले की तरह खड़ा होकर चारों दिशाओं में ९।९ बार नमस्कार मन्त्र जपे और तीन तीन आवर्त तथा पूर्ववत् मन्त्र पढ़कर चारों दिशाओं में ४ नमस्कार जाप्य पूर्ण करे।

ततः समुत्थाय जिनेन्द्रबिम्बं पश्येत्परं मंगलदानदक्षम्।
पापप्रणाशं परपुण्यहेतुं सुरासुरैः सेवितपादपद्मम्॥

भावार्थ—सामायिक से उठकर चैत्यालय में जाकर सब तरह के मंगल करनेवाले, पापों को क्षय करनेवाले, सातिशय पुण्य के कारण और सुर तथा असुरों द्वारा वन्दनीय ऐसे श्रीमज्जिनेन्द्र भगवान् के दर्शन करे।

सामायिक से लाभ

सामायिक करने के समय क्षेत्र तथा काल का प्रमाण कर समस्त सावद्य योगों का (गृह व्यापारादि पापयोगों का) त्याग करने से सामायिक करनेवाले गृहस्थ के सब प्रकार के पापास्रव रुककर सातिशय पुण्य का बंध होता है, उस समय उपसर्ग में ओढ़े हुए कपड़ा युक्त होनेपर भी मुनि के समान होता है। विशेष क्या कहा जाय—अभव्य भी द्रव्य सामायिक के प्रभाव से नवग्रैवेयक पर्यन्त जाकर अहमिन्द्र हो सकता है। सामायिक को भावपूर्वक धारण करने से शान्ति सुख की प्राप्ति होती है, यह आत्म तत्त्व की प्राप्ति परमात्मा होने के लिये मूलकारण है। इसकी पूर्णता ही जीव को निष्कर्म अवस्था प्राप्त कराती है।

जाप्य में १०८ दाने होने का कारण

१ समरंभ, २ समारंभ, ३ आरंभ, इन तीनों को मन, वचन, काय, इन तीनों से गुणा किया तो ९ भेद हुए। इन ९ को कृत, कारित, अनुमोदना इन तीनों से गुणा किया तो २७ भेद हुए। इन २७ भेदों को क्रोध, मान, माया, लोभ, इन चार कषायों से गुणा तो १०८ भेद हुए। १०८ भेद ही पापास्रव के कारण हैं, इनके द्वारा ही पापास्रव होता है अतः इनका नष्ट करने हेतु १०८ बार जाप्य किया जाता है।

इति सामायिक विधि

मेरी भावना

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो।
मिथ्यात्व राग विद्वेष का नित आत्म से संहार हो॥
न्यायमारग में जगत निर्भीकता से रक्त हो।
ज्ञान अरु चारित्र उन्नति में सदा आसक्त हो॥
वीर वाणी पर सभी संसार का विश्वास हो।
जिनधर्म के माहात्म्य से प्रत्येक का स्वविकास हो॥
रोग भय दुर्भिक्षका जग से सदा परिहार हो।
मोह मद मात्सर्य नश अति प्रेम का संचार हो॥
शान्ति अरु आनन्द का हर एक घर में वास हो।
मैत्री प्रमोद माध्यस्थ करुणा नित्य इन सुविचार हो॥
रूढ़ियाँ जो व्याप्त हैं उनका सदा संहार हो।
एकलरूप न हों वीर 'वारे' जगत का उद्धार हो॥



इष्ट कामना

क्षमा जैनोऽपविघ्नो प्रभवतु भुवने सर्वदा शर्मदायी,
शान्तिं प्राप्नोतु लोको धरणिमवनिपा न्यायतः पालयन्तु।
हत्वा कर्मारिवर्गं यमनियमशरैः साधवो यान्तु सिद्धिं,
मिथ्यस्ताशुद्धबोधा निजहितनिरता जन्तवः सन्तु सर्वे॥

भावार्थ—जगत् में निरन्तर सुख देनेवाला जिनधर्म विघ्नरहित हो, लोगों में शान्ति रहे, राजा लोग न्याय से पृथ्वी का पालन करें, साधुजन यम नियम रूपी बाणों से कर्म शत्रुओं को नष्ट कर सिद्ध को प्राप्त हों, और समस्त प्राणी का मिथ्याज्ञान का नाश कर अपने हित में तत्पर रहें।

यह ग्रंथ चिरकालतक वर्तमान रहे

यावत्सागरयोषितो जलनिधिं क्षिपन्ति वीचीभुजै-
र्भर्तारं सुपयोधरा कृतरवा मालस्य वाञ्छना।
तावत्तिष्ठतु शास्त्रमेतदनघं ख्याप्यते कोविदै-
र्यत्र शास्त्रविचारकैरनुदिनं व्याख्यायमानं मुदा॥

भावार्थ—जब तक नदी रूपी स्त्रियाँ अपनी लहर रूपी भुजा से समुद्र रूपी भर्तार को आलिंगन करती हैं, तब तक चारित्र शास्त्र (चरणानुयोग) के ज्ञाता विद्वानों द्वारा व्याख्यान होता हुआ यह व्रत विधान-संग्रह ग्रन्थ वर्तमान रहे।

क्षमा-याचना

यत्पुनरुक्तमयुक्त दुरुक्तमिह तद्विशोधितु युक्तम् ।
बद्धाञ्जलिनेति मयाऽभ्यर्थ्यन्ते सकलगीतार्था ॥

भावार्थ—इस ग्रन्थ मे मैने पुनरुक्त अयुक्त या दुरुक्त कहा हो तो उसको समस्त ज्ञानी पुरुष शुद्ध कर ले, ऐसी हाथ जोड़ प्रार्थना है।

अन्तिम मगल-कामना

मगल लेखकाना च पाठकाना च मगलम् ।
मगल साधव सन्तु भूमौ भूपतिमगलम् ॥

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!



बारह भावना

१ अनित्य भावना

संसार में सुत सुता सजनी स्वजन अरु सीमन्तिनी।
गो गेह गज तारण्य तन, सम्पत्ति सकट शालिनी॥
सब चचला चपला सदृश, अस्थिर यही निश्चय करो।
मोहित न होकर के इन्हामें स्वात्म हित साधन करो॥

२ अशरण भावना

सुर असुर सुरपति नृपति खगपति वैद्य निर्धन अरु धनी।
विद्वान् मूरख सुभग दुर्भग गुणी अथवा अगुणी॥
संसार में कोइ मरण से है बचा सकता नहीं।
चाहे करें वे मन्त्र औषधि तन्त्र जितने हों सभी॥

३ संसार भावना

सुर नर नरक तिर्यंच गति में बार दुस्सह दुख सहे।
कर पंच परिवर्तन तथा नित कर्म से पीड़ित रहे॥
नि सार यह संसार सबविध सार कुछ भी है नहीं।
भूले हुए हो व्यर्थ क्यों इसमें न सुख साता यहीं॥

४ एकत्व भावना

प्राणी शुभाशुभ कर्मफल सहता अकेला आप है।
साता असाता बाँट सकता नहीं कोइ आप है॥
माता पिता सुत सुता सजनी सजन पति पत्नी सभी।
हैं स्वार्थ के साथी सभी नहिं दुख के साथी कभी॥

५ अन्यत्व भावना

प्राणी तथा पुद्गल परस्पर में सदा से हैं मिले।
पर हैं पृथक् के पृथक् दोनों नीर पय ज्यों हों मिले॥
अतएव जब संसार में तन भी तुम्हारा है नहीं।
तो धन तथा परिजन तुम्हारे कहो हो सकते कहीं॥

६ अशुचि भावना

जो पल रुधिर मल राध अथवा कीटिकादिक से भरी।
संसार में जिससे नहीं अशुचिता फैले खरी॥
जो सदा नव मार्ग से नित मल बहाता ही रहे।
ऐसी अपावन देह को हे जीव तू क्या कर चहे॥

७ आस्रव भावना

मन वचन तन त्रय योग द्वारा कर्म जल नित आ रहा।
नर देह नौका से तुम्हें जग जलधि बीच डुबो रहा॥
जिससे तुम्हें या पार होना दूर उसमें ही रहे।
सोचो जरा जग जलधि में नौका न जिससे वह रहे॥

८ संवर भावना

त्रय गुप्ति पंच समिति परीषह और चारित्र से सभी।
रोक दो मन काय वच से छिद्र नौका के अभी॥
क्षोभित न हो करके तुम्हारी नाव तिरने के लिये।
जिससे समर्थ बने तुम्हें भवपार करने के लिये॥

९ निर्जरा भावना

पूर्व का संचित किया जो कर्मरूपी नीर है।
जिससे तुम्हारो नाव देखो डूबने में लीन है॥
होकर विशाल कपाल कर में अब उलीचो वह सभी।
संसार सागर पार नौका यह तुम्हारी हो तभी॥

१० लोक भावना

नभ में चतुर्दश राजु परमित एक लोकाकाश है।
है स्वयं सिद्ध अनादि से कर्त्ता न हर्ता खास है॥
धर स्वांग नाना भांति इसमें जीव सहता त्रास है।
इसके उपरि अष्टम धरा हो सिद्ध सुख की राशि है॥

११ धर्म भावना

स्व-स्वभाव ही तो आतमा का श्रेष्ठ सुंदर धर्म है।
औपाधि भावों को कराता आतमा से कर्म है॥
तज कर्म कारण जीव स्व स्वभाव में ही लीन हो।
तजकर समस्त विभाग निज सुख में सदा लवलीन हो॥

१२ बोध दुर्लभ

दुर्लभ्य नित्य निगोद से व्यवहार में है आवता।
दुर्लभ्य त्रस पर्याय से है कठिन नरतन पावता॥
दुर्लभ्य श्री जिनधर्म से भी बोध दुर्लभ पावना।
अतएव! आतम हित करो भी नित्य बारह भावना॥

ग्रन्थकर्ताका परिचय

चौपाई

जम्बूद्वीप द्वीपन में सार, योजन लाख तना विस्तार।
ताकी दक्षिण दिशा अनूप, भरत क्षेत्र सोहे जिमि भूप॥
आर्यखण्ड है तामें सार, असि मसि आदिक छह आचार।
तामें खण्ड बुन्देल प्रधान, राज्य ओरछा अति सुखदान॥
रजधानी टीकमगढ़ माथ, 'वीरसिंह' भूपति घर होय।
पूरब दिशि त्रय मील प्रमाण, अतिशय क्षेत्र पपौरा जान॥
तहँ से द्वादश माल मनोग, अतिशय क्षेत्र अहार सुयोग।
ताके बीच मनोहर धाम, पठा ग्राम शोभे अभिराम॥
धर्मवन्त श्रावक निवसत, त्रय जिन भवन महा विलसत।
गोलापूर्व जातिवर सार, पाण्डेलीय गोत्र अवतार॥
सिंघई बखत तसु पुत्र गुलाब, वैद्यक विद्या में निष्णात।
तिनके चार पुत्र सुखदाय, भगवनदास द्वितीय कहाय॥

वैद्यक ज्योतिष शास्त्र प्रवीण, वैद्यरत्न पदवी शुभ लीन।
तिनके हुए तीन वर लाल, तिनमें ज्येष्ठ [illegible] बाबूलाल॥
ज्योतिष वैद्यक मन्त्र रु तन्त्र, प्राणप्रतिष्ठा सिद्ध रु यन्त्र।
गायन विद्या में सु प्रवीण, धावक धर्म किये लवलीन॥
श्री स्याद्वादविद्याम्बर जैन, कियो औषधालय सुखदैन।
बहु देशन के रोगी आय, लहि आरोग्य सु निज घर जाहिं॥
उपभोगान्तराय वश जाय, सुपुत्रादि मिल्या निधान।
शीलवान धर्मिष्ठ सुजान, गृहस्थाश्रम में कुशल महान॥
सुताचार अरु आठ सुनन्द, डाक्टर श्री कपूरचन्द।
'बाबूलाल' महेन्द्रकुमार', चौथे श्री 'धर्मेन्द्रकुमार'॥
जयकुमार 'सुधर्मेन्द्रकुमार' श्रीचन्द्र 'सुरेन्द्रकुमार'।
सुता शान्ति 'कस्तूरी' जान, चम्पा 'कमला' बाई मान॥
व्रत विधान आगम अनुसार, जिन निमित्त रचियो सुखकार।
जो भवि मन धर या आचरैं, ते नर मुक्ति कामिनी वरैं॥
होय जगत उपकार महान, यही भावना धर सब गाथ।
मंद बुद्धि वश त्रुटि जो होय, क्षमा करो सो पंडित नाथ॥

दोहा

सम्वत श्री वीरेश इत, अधिक बहत्तर आठ।२४७८
दीपमालिका के दिवस पूरण ग्रन्थ बखान॥

इसके पूर्व के सभी सूचीपत्र रद्द किये गये

संस्थापित सन् १८५२

सूची-पत्र

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्यूनिसिपल बोर्ड, राजदरबार व सार्वजनिक धर्मार्थ औषधालयों, डाक्टरों व वैद्यों के लिए प्रामाणिक विश्वस्त स्थान

श्री स्याद्वाद जैन औषधालय

पेठा, शाखा—कटरा बाजार,
टीकमगढ़ (विं. प्र)

संचालक—

चिकित्सक चूड़ामणि राजवैद्य, न्यायतीर्थ
पं० बारेलाल कपूरचन्द्र जैन आयुर्वेदाचार्य
बी० ए० एम० एस०

रजिस्टर्ड नं० २२०३ ए क्लास (1.4.B) U P

१ जनवरी १९५२

एजेन्सी-नियम

१—कोई भी विश्वास पात्र वैद्य कमीशन काटकर कम से कम १०) (नेट) की औषधियाँ प्रथम बार लेगा, वही एजन्ट स्वीकृत होगा।

२—एजेन्सी के लिये १०) रुपया रक्षाधन जमा करना आवश्यक होगा। जो एजेन्सी के बन्द हो जाने पर वापस कर दिया जायगा।

३—औषधियाँ नगद मूल्य से अथवा वी० पी० द्वारा ही भेजी जावेंगी।

४—मँगाई हुई औषधियाँ यदि तीन मास तक एजेन्ट से न बिक सकें तो ऐसी औषधियाँ कि जिनकी पैकिंग यथाविधि ठीक हो उन्हें वापिस कर उनके स्थान में अन्य औषधियाँ मँगा सकते हैं।

एजेन्सी कमीशन और सुविधा

१—हमारे औषधालय की स्वीकृत औषधियों पर २५% प्रतिशत तथा हमारे औषधालय द्वारा केवल निर्मापित आयुर्वेदिक औषधियों पर १२॥% प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

२—एक साथ ३०) रुपया का माल मँगाने पर पकिंग व खर्च तथा १००) रुपया का माल मँगाने पर मालगाड़ी का किराया भी रहेगा। पारसल गाड़ी से मँगाने पर आधा किराया तथा पोस्ट पारसल से माल मँगाने पर पूरा किराया ग्राहक को ही देना होगा।

३—एजेन्ट बन जाने पर कम से कम ५) रुपया के आर्डर पर भी उपर्युक्त हिसाब से बराबर कमीशन मिलता रहेगा।

४—औषधियाँ तौल तथा पैकिंग आदि पूर्ण रूप से देखकर भेजी जाती हैं। रास्ते की कमी व टूट फूट का जिम्मेदार औषधालय नहीं होगा।

५—प्रत्येक कानूनी कार्यवाही 'टीकमगढ़ न्यायालय' में ही होगी।

६—बिना किसी पूर्व सूचना के परिस्थिति के अनुसार मूल्य में परिवर्तन करने का अधिकार औषधालय को होगा।

७—आर्डर भेजते समय अपना नाम व पूरा पता साफ साफ लिखें।

८—प्रत्येक आर्डर के साथ मूल्य का चौथाई पेशगी आने पर ही माल भेजा जा सकेगा।



चि० प्रदाता व्यवस्थापक प्रबन्ध प० बारेलाल जैन
मैनेजर—[illegible] जैन औषधालय पटा
[illegible]—[illegible]

आद्य निवेदन

आज हम अपने औषधालय का यह नया सूची-पत्र प्रकाशित करते
हुए अत्यन्त हर्ष ले रहा है कि हमारे इस औषधालय का कार्य दिन प्र
दिन वृद्धि को प्राप्त होता जा रहा है। बिना किसी विशेष प्रचार किये भी
ग्राहकों की संख्या की वृद्धि होना ही सफलता का विशेष प्रमाण है। जिस
किसी ग्राहक एवं रोगी ने एक बार भी हमारे साथ व्यवहार कर लिया कि
वह हमारी सचाई तथा औषधियों की विशुद्धता को समझकर सदैव के
ग्राहक बनकर ही रहता है। यहाँ ग्राहकों से यह निवेदन कर देना भी अनुचि
नहीं समझता हूँ कि औषधियों की उत्तमता पर ही स्वस्थ जीवन अव
लम्बित है। औषधियों का अधिक मूल्य एवं अल्प मूल्य के लोभ में अपने
अमूल्य जीवन को नष्ट न कर देना ही बुद्धिमत्ता का काम है।

मेरे यहाँ पर यह काम कई पीढ़ियों से होने के कारण तथा म
भी ३१ वर्ष के निजी अनुभवों में आये हुए अनेकों बार
परीक्षित, अनुभूत एवं सद्यफलप्रद योगों का संग्रह होने
और अपनी ही पूर्ण देख रेख में शास्त्रोक्त विधिपूर्वक उत्त
धनरूपमियों द्वारा औषधियों का निर्माण कराने के कारण
भारतवर्ष के कई प्रान्तों (यू० पी० सी० पी०, पंजाब, मारवाड़, म
प्रदेश) आदि के असाध्य घोषित किये हुए सहस्रों मरणासन्न रोगी अ
स्वास्थ्य लाभ करते आ रहे हैं। अतएव इन योगों की अधिक माँग होने
कारण इन उत्तमोत्तम योगों को सर्वसाधारण के लाभार्थ, नियमि
भी विशेष संग्रह कर रहा हूँ। आशा है कि जनता को अब और भी विशे
लाभ पहुँचाने में कारण बन सकूँगा।

पठा (ग्राम) में पहुँचने की असुविधा के कारण मैंने औषधालय की
एक ब्रांच **बड़ा बाजार, टीकमगढ़** में भी स्थापित कर दी है जिस
जनता को इन सफल होनेवाली औषधियों नगर में भी प्राप्त हो सकेंगी।

हमारे औषधालय के व्यवस्थापन कार्य तथा चिकित्सानुभव को देखक
गौरवतम वैद्य, डाक्टरों तथा राज्य के प्रमुख अधिकारियों एवं मान्
विद्वानों ने अनेक शुभ सम्मतियाँ एवं सम्मानपत्र प्रदान कर बहुत प्रोत्सा
हन दिया है अतः निवेदन है कि औषधियाँ खरीदते समय 'स्याद्वाद जैन
औषधालय', यह नाम अवश्य देख लें।

—संचालक

हमारे यहाँ की सहस्रों बार की परीक्षित और शीघ्र गुण दिखानेवाली उत्तमोत्तम औषधियाँ

स्याद्वाद अमृतसिंधु—हैजा, जी मिचलाना, कै, दस्त, माथा घूमना, नेत्रदर्द, दाह, अरुचि, ज्वर, बिच्छू का विष, शिरदर्द, कुकुरखाँसी, अजीर्ण, पेटदर्द, फोड़ा, फुन्सी, आदि पर रामबाण। की० १) प्रति शीशी

स्याद्वाद अर्क कपूर—हैजा तथा कै दस्त आदि की सर्वोत्तम दवा। **कीमत ।।।) प्रति शीशी।**

स्याद्वाद अर्क पुदीना—समस्त प्रकार के कै और दस्त में शर्तिया आराम। **कीमत ।।।) प्रति शीशी।**

स्याद्वाद धार—नगादि गया के नाश की निर्बलता नाशक एवं अत्यन्त धातु-पोषक। **कीमत ७) प्रति सेर।**

स्याद्वाद च्यवनप्राश—(अष्टवर्गयुक्त)—समस्त जीर्ण ज्वर एवं क्षय (टी० बी०) खाँसी, श्वास, स्वर भंग, निर्बलता, प्रमेहादि पर। **कीमत २।।) आधा पौण्ड।**

स्याद्वाद यकृत् प्लीहान्तक अर्क—जीर्णज्वर, यकृत् (लीवर), प्लीहावृद्धि पाण्डु, शोथ, मलावरोध आदि उदर रोगों पर। **कीमत ४।।।=) प्रति बोतल २।।=) प्रति अद्धा।**

स्याद्वाद ज्वरकेशरी—इकतरा, तिजारी, नवरागी, आदि पसली ज्वरों पर रामबाण। **कीमत १।≈) प्रति शीशी।**

स्याद्वाद नेत्रसुधाकर अर्क—दुखती हुई आँखें, पलकों की सूजन, नेत्रशूल आदि में तत्काल लाभदायक। **कीमत बड़ी शीशी ।।) छोटी शीशी ।-)**

स्याद्वाद राहतकर अर्क—आँखों के रोहे, पलकों की सूजन, नेत्रशूल आदि में लाभदायक। **कीमत ।।) प्रति शीशी।**

स्याद्वाद शक्तिसंचय वटी—समस्त प्रकार के प्रमेह, एवं स्वप्नदोष, धातु निर्बलता, शीघ्रपतन नाशक और अत्यन्त धातु पौष्टिक। **कीमत २।।) प्रति पैकेट।**

स्याद्वाद बालमित्र—बालशोष (सूखारोग), ...

र, आँख, सॉंसी, ज्वर, मन्दाग्नि, आदि रोगो दूर कर बालकों को अत्यन्त पुष्ट और शक्ति सम्पन्न करता है। कीमत १) प्रति शीशी।

स्याद्वाद ठंडा सुरमा—नेत्रों की जलन, आँसू बहना, लालामी, आदि आँख सम्बन्धी रोगों पर लाभप्रद। कीमत ॥) प्रति शीशी।

स्याद्वाद ममीरा का सुरमा—आँखों की धुंध, जाली, माड़ा, , नाखून का बढ़ना आदि में लाभप्रद। कीमत १) प्रति शीशी।

स्याद्वाद प्रदरान्तक अशोक अर्क—श्वेत रक्त वाला पाला [illegible] कैसा ही भयंकर प्रदर क्यों न हो तथा और भी स्त्रियों के समस्त में शर्तिया आराम। कीमत ८॥) प्रति बोतल।

स्याद्वाद सार्सापरिला—(उसवा का अर्क)—समस्त प्रकार रक्त विकार एवं सामान्य कुष्ठ, खाज, खुजली, फोड़ा, फुन्सी आदि रक्त विकार में रामबाण। कीमत ३॥) प्रति बोतल।

तिजारी की लोकोत्तम दवा—तीसरे दिन तथा चौथे दिन आनेवाले बुखार पर रामबाण। कीमत ॥) प्रति शीशी।

महानारायण तैल—सब प्रकार के वात रोगों पर।

कीमत छोटी शीशी १) बड़ी शीशी ६॥=)।

स्याद्वाद ज्वरारि तैल—सब प्रकार के ज्वर, क्षय (टी० बी०) जलन, रक्त विकार आदि में लाभप्रद।

कीमत छोटी शीशी १) बड़ी शीशी १॥॥=)।

स्याद्वाद ब्राह्मी तैल—(स्पेशल) शिर के समस्त रोग एवं दर्द, माथा घूमना, शिर की जलन, स्मरण शक्ति का कम होना, मस्तिष्क की कमजोरी नाशक। कीमत ॥।) प्रति शीशी।

स्याद्वाद ब्राह्मी तैल—उपरोक्त गुणों से कुछ न्यून गुणवाला।

कीमत ॥) प्रति शीशी।

स्याद्वाद आँवला तैल—(स्पेशल) मस्तिष्क की कमजोरी की जलन नाशक और मनोहर सुगंधि युक्त। कीमत ॥) प्र० शी०

स्याद्वाद आँवला तैल—उपरोक्त गुणों से युक्त नून।

कीमत ॥) प्रति शीशा।

स्याद्वाद मौलश्री तैल—अत्यन्त सुवासयुक्त।

कीमत ॥) प्रति शीशी।

स्याद्वाद गुलाब तैल ,, ,, ॥) ,, ,,

स्याद्वाद चमेली तैल ,, ,, ॥) ,, ,,

स्याद्वाद सतरा तैल ,, ,, ॥) ,, ,,

स्याद्वाद बाम—कैसा ही भयंकर सिरदर्द क्यों न हो, मलते मलते आराम।

कीमत ॥) प्रति शीशी।

स्याद्वाद खाजरिपु—खाज, खुजली, फोड़ा, फुन्सी आदि में लाभदायक।

कीमत ॥) प्रति १ औंस शीशी।

स्याद्वाद दद्रु प्रहार—नया हो या पुराना क्यों न हो शर्तिया आराम।

कीमत ।) प्रति १ औंस शीशी।

राजवटी—सब प्रकार की वात व्याधियों की दवा।

कीमत १) प्रति ६० गोली पैकिट।

नमक सुलेमानी—अत्यन्त स्वादिष्ट एवं पाचक।

कीमत ।=) प्रति १ औंस शीशी।

परवाल शत्रु—आँखों के परवाल (बाल गिरना) की अनुभूत दवा।

कीमत १) प्रति शी०

सुगंधित वैसलीन—चेहरे पर रौनक लानेवाली मनमोहक सुगंधियुक्त।

कीमत ।।।) प्रति शी०

व्रणामृत तैल—व्रण, फोड़े, बिगड़े हुए जख्म, नहरुवा, भगन्दर आदि में लाभदायक।

कीमत ।।।) प्रति शी०

कपाल कृमि केशरी—कपाल कृमि की उत्तम दवा।

कीमत १।) प्रति शी०

उदर कृमि केशरी—पेट के कृमियों की अचूक दवा।

कीमत १।) प्रति

शास्त्रोक्त औषधियाँ

अकीक भस्म (हृदय रोग, प्रमेह, प्रदर)	२॥)	प्रति तोला
अकीक पिष्टी (हृदय रोग, प्रमेह, प्रदर)	३)	,,
अभ्रक भस्म न० १ (क्षय, कास, श्वास, रसायन)	६१)	प्र०तान मा०
अभ्रक भस्म न० २ ,, ,, ,,	१०)	प्र० तो०
अभ्रक भस्म न० ३ ,, ,, ,,	४)	,,
अग्निकुमार रस (अजीर्ण, शूल, प्लीहा, अतीसार)	।॥)	,,
अश्वकंचुकी रस (घोड़ाचोली रस) रेचक	१)	,,
अर्शांतक वटी (बवासीर के लिए)	१)	,,
अर्शांतक लेप ,,	॥)	,,
अद्भुत जुलाब (इच्छानुसार रेचक)	१)	,,
आनंदभैरव रस न० १ (नवज्वर, विशेष काम)	॥)	,,
आंवला तैल न० १ स्पेशल (अत्यन्त सुगंधयुक्त)	।॥)	प्र० शी०
आंवला तैल न० २ ,,	॥)	,,
इच्छाभेदी रस (इच्छानुसार रेचक)	१)	प्र० तो०
उदर सफा चूर्ण (रेचक)	।)	,,
एलादि गुटिका (उर क्षत, कास)	।॥)	,,
कफकुठार रस न० १ (कास, श्वास, कफ)	२)	,,
कफकुठार रस न० २ (कफ, श्वास, ज्वर)	।॥)	,,
कफकेतु रस (पीनस श्वास, कास)	६)	,,
कर्पूरादि वटी (खांसी पर)	१।)	,,

कस्तूरी भैरव रस (घोर संनिपात)	४)	प्र० तीन माशा
कर्पूर रस (अतीसार)	७)	प्रति तोला
कान्त लौह भस्म (रक्तपित्त, शोथ नाशक)	१०)	,,
कांस्य भस्म (उपयोग कृमि दूर)	१)	,,
किशोर गुग्गुलु	॥)	,,
कुष्ठान्तक लेप	१)	,,
कुमकुमादि वटी (खाँसी, ज्वर)	८)	,,
कृमिमुद्गर रस (उदरकृमि, मलकृमि नाशक)	६)	,,
कुमुदेश्वर रस (ज्वर, कास, श्वास, यक्ष्मा)	५)	,,
गलित कुष्ठान्तक रस	६)	,,
गण्डमालाकण्डन रस (गलगण्ड, कण्ठमाल)	१॥)	,,
गन्धक वटी (स्वादिष्ट पाचक)	॥)	,,
गोमेद मणि भस्म (क्षय, पाण्डु, ज्वर)	४॥=)	तीन माशा
गोदन्ती हरताल भस्म (श्वास, कफ, ज्वर)	॥)	प्रति तो०
ग्रहणीकपाट रस नं० १ (संग्रहणी, अतीसार)	।)	,,
ग्रहणीकपाट रस नं० २ (,, ,,)	२)	,,
ग्रहणी रिपु (संग्रहणी नाशक)	२॥)	पैकिट
चन्द्रप्रभाञ्जन (नेत्र पुष्प, जाला)	१॥)	प्र० तोला
चन्द्रप्रभा गुटिका नं० १ (सर्वप्रमेह व शक्तिवर्धक)	१॥)	,,
चन्द्रप्रभा गुटिका नं० २ (,,)	१)	,,
चिन्तामणि रस (सर्व ज्वरनाशक)	२॥)	,,

च्यवनप्राश अवलेह (अष्ट अंग पुष्ट)	२॥)	पैं० २०	तोला
जहरमोहरा भस्म	५)	प्रति	तोला
जहरमोहरा पिष्टी (तृषा, वमनहर)	६)	प्र०	तोला
जयमंगल रस (जीर्ण विषमज्वर)	४।)	,,	तीन माशा
जातिफलादिगुटिका (रक्तशूल, अतीसार)	३)	,,	तोला
ज्वरमुरारि रस (सब ज्वरनाशक)	१०)	,,	,,
ज्वरकेशरी वटी (ज्वरनाशक, रेचक)	१॥)	,,	,,
तालसिंदूर (रक्तशोधक, कृमिघ्न)	८)	,,	,,
ताम्रसिन्दूर (श्वास, मूर्च्छा, सन्निपातमें उपयोगी)	८)	,,	,,
तृणकांतमणि भस्म (शिरःशूल, रक्तागम)	१२)	,,	,,
तृणकांतमणि पिष्टी (,, ,,)	१३)	,,	,,
ताम्रपर्पटी रस (श्वास, हिक्का)	८)	,,	,,
ताम्र भस्म (ताम्रेश्वर रस) श्वास, शूल, त्रिदोष	४)	,,	,,
त्रिभुवनकीर्ति रस (ज्वर, सन्निपातघ्न)	१)	,,	,,
त्रिवंग भस्म (प्रमेह, प्रदर, कास, श्वास)	७)	,,	,,
दुग्धवटी (शोथ, मन्दाग्नि)	॥।)	,,	,,
नयनामृत अञ्जन	१॥)	,,	,,
नकसीरांतक पौडर (नकसीर की दवा)	॥।)	,,	,,
नवायस लोह (पाण्डु, शोथ, रक्ताल्पता)	२)	,,	,,
नागेश्वर (नागभस्म) वीर्यविकार, प्रदर,	३)	,,	,,
नाराच रस (रेचक, गुल्म, आढ्य, उदररोग)	१)	,,	,,

नीलम भस्म (हृदय, मस्तिष्कविकार)	८॥) प्रति तीन माशा
पंचामृतपर्पटी रस	५) प्रति तोला
पन्ना भस्म (सन्निपात)	७॥) ,, ,,
पारद भस्म (पौष्टिक, ज्वरघ्न)	१०) प्र० तोला
पुष्पराग भस्म (हृदय, मस्तिष्कदौर्बल्यनाशक)	८) ,, ,,
पुनर्नवामण्डूर (पाण्डु, शोथ, रक्ताल्पतानाशक)	२) ,, ,,
प्रतापलङ्केश्वर रस (प्रसूतरोग, सन्निपात)	२) ,, ,,
प्रसूतवल्लभ रस (प्रसूतरोग, घोर सन्निपात)	५) ,, ,,
पूर्णचन्द्रोदय रस (बलदाय आयुवर्धक)	११॥) ,, तीन माशा
प्रवाल भस्म न० १ (कजलीयोग) कास श्वास	४) ,, तोला
प्रवाल भस्म न० २ (दुग्धयोग) कास श्वास	३) ,, ,,
प्रवाल भस्म न० ३ (कन्यादियोग) ,, ,,	२) ,, ,,
प्रवाल पिष्टी (दाहनिवारकता)	३) ,, ,,
प्रवालपंचामृत रस (आनाह, प्लीहा, कास, प्रमेह)	१३) ,, ,,
वराटिका भस्म (दीपन, पाचन, वणक्षार,)	॥) ,, ,,
वंगेश्वर (वंगभस्म) प्रमेहनाशक, पौष्टिक	३) ,, ,,
विजयादि वटी (उदररोगोंपर तथा पौष्टिक)	॥) ,, ,,
वातविध्वंस रस (समस्त वात रोगोंका नाशकारक	२॥) ,, ,,
वातगजकेशरी (महावात रक्तघ्नी)	८॥) ,, ,,
वज्रक्षार चूर्ण (गुल्मशूल, शोथनाशक)	॥) ,, ,,
वासादि अवलेह (रक्तपित्त, कास, स्वरभंग)	२॥) प्रति पैकिट

मृतसञ्जीवनी रस (घोर सन्निपात)	२॥)	प्रति	तोला
यवक्षार	।॥)	,,	,,
यशदभस्म (जीर्णज्वर, नेत्र, प्रमेह)	~)	प्रति	तोला
योगराज गुग्गल (घोर वातव्याधि)	१)	,,	,,
रससिंदूर नं० १ (प्रमेह धातुक्षीणता)	१०)	,,	,,
रससिंदूर नं० २ (,, ,,)	८)	,,	,,
रसमाणिक्य नं० १ (यक्ष्मा, ज्वर, श्वास)	२०)	,,	,,
रसमाणिक्य नं० २	)	,,	,,
रसपर्पटी (संग्रहणी, आमवात)	४)	,,	,,
रससागर (सन्निपात, ज्वर, कास)	५)	,,	,,
रौप्य भस्म (बलवीर्यवर्धक)	१०)	,,	,,
रौप्यमाक्षिक भस्म (प्रमेह, शोथ कुष्ठ)	१॥)	,,	,,
रामबाण रस (मन्दाग्नि, संग्रहणी)	१)	,,	,
महालक्ष्मीविलास रस (सन्निपातपर प्रसिद्ध)	७)	,,	,
लवंगादि वटी (कास ज्वर)	।॥)	,,	,
लोहपर्पटी	५)	,,	,
लोहभस्म नं० १ (पाण्डु, शोथ, रक्ताल्पता)	४)	,,	,
लोहभस्म नं० २ (,, , ,)	२)	,,	,
वसन्तकुसुमाकर रस (निर्बलता, प्रमेह)	७॥)	प्र० तीन मा	
वसन्तमालती (स्वर्णयुक्त) जीर्णज्वर, क्षय	~।)	,,	,,
वसन्तमालती लघु (जीर्णज्वर)	४)	प्रति तो	

वीरभद्र रस (सन्निपात, ज्वर, कास, कफ) २॥) प्रति तोला
विषमज्वरान्तक लोह (जीर्णज्वर, रक्ताल्पता) ४) ,, ,,
व्योषादिवटी (प्रतिश्याय, स्वरभंग, कास) ॥) प्रति तोला
भीमसेनी कपूर नं० १ ५) ,, ,,
शंखभस्म (उदर रोग) १) ,, ,,
शंखवटी (सब अजीर्ण, विसूची, शूल) ॥) ,, ,,
शुभ्रा भस्म ।) ,, ,,
शम्बूक भस्म (दीपन, पाचन, ग्राही, वातघ्न) ॥) ,, ,,
शिलाजीत सत्व (बलवीर्यवर्धक, रसायन) ४) ,, ,,
शिलाजीत नं० १ ,, १) ,, ,,
शिलाजीत नं० २ ,, ॥) ,, ,,
शौक्तिक भस्म ॥।) ,, ,,
शूलगज केशरी (हर प्रकार के उदर शूल में) २॥) ,, ,,
श्वास कुठार रस (कास, श्वास, कफ, हिक्का) १) ,, ,,
श्वास चिंतामणि रस (श्वास, कास, यक्ष्मा) १०) ,, ,,
शृंग भस्म (कास, श्वास, कफ, सन्निपात) ॥।) ,, ,,
षड्बिन्दु तैल (शिरोरोगों में लाभप्रद) १) २ औंस शीशी
सिद्ध मकरध्वज ९) प्र० तीन माशा
समीरगज केशरी (कम्प, वात, पक्षाघात, मृगी) ३) प्रति तोला
संजीवनी वटी (सन्निपात, अजीर्ण) ।=) ,, ,,
सारयस भस्म (हृदय रोग) ४) ,, ,,

संगजराहत भस्म	१) प्रति तोला
संगयहूद भस्म (प्रमेह, अश्मरी)	२॥) ,, ,,
संगयहूद पिष्टी (प्रमेह, अश्मरी)	३) ,, ,,
सौभाग्य भस्म	॥) ,, ,,
श्वेत कुष्ठहर लेप	१॥) ,, ,,
स्तम्भन वटी (पौष्टिक तथा बलवीर्यवर्धक)	५) ,, ,,
स्वर्णमाक्षिक भस्म (प्रमेह, रक्तरोग)	२) ,, ,,
स्वर्ण भस्म (शीतल, कांति व बलवर्धक)	४०) ,, तीन माशा
स्वर्ण पर्पटी रस (संग्रहणी, शोथ, ज्वर)	१०) ,, ,,
स्वर्णराज वंगेश्वर (सब प्रमेह नाशक)	) प्रति तोला
सूत शेखर रस (अम्लपित्त, त्रिशूल नाशक)	१२) ,, ,,
क्षय केशरी रस (यक्ष्मा, ज्वर, कास, कफ)	३॥) ,, तीन माशा

वनस्पतिक तैल

तारपीन तैल	४) पा०	कास्टआइल	२॥=) पौंड
दालचीनी तैल	१।) औंस	यूकिलिप्टस तैल	१०॥) पौंड
लौंग तैल	२।) औंस	सौंफ तैल	॥=) औंस
अजवायन तैल	१।) ,,	चंदन तैल	२॥) ,,
इलायची तैल	१।) ,,	पिपरमिंट तैल	५॥) ,,

चिकित्सा-सम्बन्धी उपकरण

उपकरण		मूल्य
शरीर तापमापक (थर्मामीटर) बढ़िया क्वालिटी		४।।।)
शरीर तापमापक (थर्मामीटर) घटिया क्वालिटी		३।।)
दवाई मिलाने की छुरी बढ़िया (स्पेचुला)		१।।)
गर्म पानी की रबड़ की बोतल (होटवाटर बोतल)		४।।)
रकार्ड सिरिंज बढ़िया क्वालिटी २ सी सी		९)
„ „ ५ सी सी		११)
„ „ १० सी सी		१८)
नीडिल (सूई) बढ़िया क्वालिटी		।।)
प्रोब (शलाका) मरहम पट्टी को		।)
आँख में बूँद डालने की शीशी		१।।)
कान तथा नाक के भीतर देखने का यन्त्र		४।।)
कान की पिचकारी	काच की छोटी	१=)
„ „	„ बड़ी	२=)
कान की पिचकारी	पीतल की छोटी	८।।)
कान की पिचकारी	„ बड़ी	१०।।)
द्रव औषध मापक ग्लास	छोटा	१-)
„ „	बड़ा	-)
आँख में अर्क डालने की पिचकारी		१।।) [illegible]
„ „ „	बढ़िया	३) „
कैंची (सीजर्स)	„	२)
चाकू (स्कालपल)	बढ़िया	८।।)
बिस्टुरी	(फोड़ा फुंसी चीरने को)	४।।)
बिस्टुरी नं० २	„	२।।।)

विशेष सूचनायें

१—इनके अतिरिक्त सर्वसाधारण के लाभार्थ रस, भस्म, चूर्ण, गोलियाँ, अर्क, अवलेह, सुगन्धित तैल, मलहम आदि सब प्रकार की दवाइयाँ विक्रयार्थ हमेशा तैयार रहती हैं।

२—सब प्रकार के आयुर्वेदिक व अंग्रेजी इंजेक्शन और दवाइयों के मिलने का भी प्रबन्ध है।

३—आँखों की परीक्षा कर उचित मूल्य पर चश्मा के मिलने का भी प्रबन्ध है।

४—बालशोष, सूतिकारोग, सर्प, बिच्छू तथा पागल स्याल, कुत्ता आदि के भयङ्कर प्राण हर विषों से औषधोपचार एवं मन्त्र-तन्त्रोपचार द्वारा आरोग्य लाभ प्राप्त कराने का भी प्रबन्ध है।

५—ज्योतिष सम्बन्धी कार्यों (मुहूर्त शोधन, वर्षफल, जन्मपत्रा-फल आदि) की भी व्यवस्था है।

६—प्रतिष्ठा सम्बन्धी समस्त कार्यों के कराने तथा धातु पर खुदे हुए सुन्दर यन्त्रों के मिलने का भी प्रबन्ध है।

७—जो रोगीजन यहाँ आने में असमर्थ हैं उनकी चिकित्सा डाक द्वारा करने का प्रबन्ध है।

—संचालक

मुद्रक—दत्ताप्रसाद गहमरी मनोहर प्रेस कालापुरा बनारस।



-जैन-
व्रत-विधान संग्रह

पण्डित वारेलाल जेन राजवैद्य

"जैन व्रत विधान संग्रह"

पर

अभिमत

आपने यह संग्रह महान् परिश्रम से किया। एक ही पुस्तक से व्रत-विधान सरलता से मिल सकता है आपका परिश्रम प्रशंसनीय है।

पौष वदि नवमी संवत् २००८

आ० शु० चि०
गणेश वर्णी